Rs. 15

हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका

कानिती

दिसम्बर 2008



- हज़रत इबराहीम (अलैहि॰) की क़ुरबानी
  –मौलाना सऊद आलम क़ासिमी
- क़ुरबानी का औचित्य
  –डॉ॰ मुहम्मद अहमद
- ईदुल अज़हा : त्याग और बलिदान का महान पर्व
  –विद्या प्रकाश
- क़ुरबानी की वास्तविकता
  –मौलाना सुलैमान नदवी

विश्व-नेता

आख़िरी नबी सल्ल०	हमूदा अब्दुल आती	5.00
क्रान्ति-दूत हज़रत मुहम्मद(स०)	नईम सिद्दीकी	55.00
जिसका इन्तिज़ार था	माहिरुल क़ादिरी	80.00
जगत-गुरु	अबू ख़ालिद	50.00
प्यारे नबी सल्ल० ऐसे थे	माइल ख़ैराबादी	10.00
प्यारे नबी सल्ल० कैसे थे?	इरफ़ान ख़लीली	16.00
विश्व-नायक	डा० कौसर यज़दानी	22.00
विश्व-नेता हज़रत मुहम्मद(स०)	मौलाना सय्यद अबुल आला मौदूदी	12.00
रह्मतुल-लिल-आलमीन	मौलाना सय्यद अबुल आला मौदूदी	12.00
हज़रत मुहम्मद सल्ल० एक महान समाज सुधारक	प्रो० मिर्ज़ा रफ़ीउद्दीन अहमद	10.00
हज़रत मुहम्मद सल्ल०का आदर्श	श्री नाथूराम	15.00
हज़रत मुहम्मद सल्ल० का संदेश	मौलाना सय्यद अबुल आला मौदूदी	10.00
हज़रत मुहम्मद सल्ल० के संदेशों के मूल तत्व	मौलाना सय्यद अबुल आला मौदूदी	4.00
हज़रत मुहम्मद(स०) जीवन और संदेश	मौलाना सय्यद अबुल आला मौदूदी	8.00

M. M. I. PUBLISHERS

D-307, Dawat Nagar, Abul Fazl Enclave, Jamia Nagar, New Delhi - 110025

Phone: 26971652, 26954341 Fax: 26947858

E-mail: mmipub@nda.vsnl.net.in Web site: www.mmipublishers.net

आपकी आशाओं का सुन्दर प्रतिबिम्ब

हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका

कान्ति

वर्ष 18 अंक 7 दिसम्बर 2008

लोगों पर अल्लाह का हक़ है कि जिसको वहां तक पहुंचने की सामर्थ्य प्राप्त हो, वह उस घर (काबा) का हज करे, और जिसने इन्कार किया तो (इस इन्कार से अल्लाह का कुछ नहीं बिगड़ता), अल्लाह तो सारे संसार से निरपेक्ष है ।

–क़ुरआन

संपादक

डॉ० मुहम्मद अहमद

अपने विचार, लेख, रचनाएं भेजने एवं संपादकीय मामलों के लिए लिखें–

संपादक, 'कान्ति' मासिक

डी-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव

जामिया नगर, नयी दिल्ली–110025

ई मेल editorkanti@yahoo.com

* * *

ख़रीदार बनने, एजेंसी लेने, प्रचार-प्रसार एवं प्रबंधकीय मामलों के लिए लिखें–

प्रबंधक, 'कान्ति' मासिक

डी-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव

जामिया नगर, नयी दिल्ली–110025

फोन–(011)–26949430

ई मेल kantiweekly@yahoo.in

सहयोग राशि

एक प्रति रु० 15/- विशेषांक रु० 25/-

वार्षिक रु० 160/-

दो वर्ष 300/- पांच वर्ष 700/-

सऊदी अरब और खाड़ी के देशों से–60 रियाल

यूरोप व अमेरिका से–25 US डॉलर

नोट–चेक / ड्राफ्ट 'मासिक कान्ति' के नाम से बनवाएं

ग़ज़ल

पुकारा है उन्हें शायद क़ज़ा ने
परिन्दे झील पर आये नहाने

नक़ाबों के हिजाबों के तकल्लुफ़
उठा डाले ज़माने की हवा ने

हमारा रास्ता जिसने भी रोका
उसे शाबाशियां दीं रहनुमा ने

सितम को वह करम साबित करेंगे
ज़हानत उनको बख़्शी है ख़ुदा ने

उठी किरदार की जब पासबानी
हुए बदनाम बाइज़्ज़त घराने

फ़क़त एक उज़्रे मजबूरी न कीजे
बहुत हैं बेवफ़ाई के बहाने

नहीं लेते ग़रीबों के सलाम अब
उन्हें चौंका दिया है इल्तिजा ने

वह देखो आ गये रहबर हमारे
हमें आदाबे मज़लूमी सिखाने ।

● हफ़ीज़ मेरठी

कुप्रभाव

साम्राज्यवाद और पूंजीवाद के

विशेषांक

'कान्ति' मासिक के जनवरी 2009 अंक में पढ़िए

इसके बाद का विशेषांक

'इस्लामी बैंकिंग'

कहां क्या है ?

ग़ज़ल	–हफ़ीज़ मेरठी	3
क़ुरआन ज्योति		5
नुबूवत की किरणें		6
हज : अल्लाह के प्रति प्रेम एवं आज्ञाकारिता का असाधारण प्रदर्शन (संपादकीय)		7
यू॰पी॰ एस॰टी॰एफ़॰ की काली करतूतें (आपके पत्र)		8
हज़रत हिन्दा बिन्त उत्बा (रज़ि॰) (नेकी के सिपाही)	–तालिब हाशमी	13
और माहौल बदल गया	–मौलाना नसीम ग़ाज़ी फ़लाही	15
गायत्री समाज : जैसा हमने देखा (संस्मरण)	–डॉ॰ मुहम्मद अहमद	17
नग़्मा-ए-कारवां (कविता)	–इन्तिज़ार नईम	20
धन की परिभाषा (कविता)	–मनाज़िर हक़	20
अंधविश्वास और योग के झांसे (नज़रिया)	–प्रभु सोहाया	21
योगेश्वर श्री कृष्ण न तो ईश्वर थे, न ही ईश्वर के अवतार थे	–गंगाशरण आर्य	23
हज्रे असवद (सवाल-जवाब)		25
हज़रत इबराहीम (अलैहि॰) की क़ुरबानी	–मौलाना सऊद आलम क़ासिमी	26-27
क़ुरबानी का औचित्य	–डॉ॰ मुहम्मद अहमद	30
ईदुल अज़्हा : त्याग और बलिदान का महान पर्व	–विद्या प्रकाश	33
क़ुरबानी की वास्तविकता	–मौलाना सैयद सुलैमान नदवी	35
अभिमत		36
गुजरात के आकाश के काले साये अवश्य छटेंगे : डॉ॰ शकील अंसारी		37
देश की गुप्तचर एजेंसियों की कार्यप्रणाली फॉसीवादी शक्तियों के एजेंडे पर	–इंजीनियर मुहम्मद सलीम	39
न्याय की दुनिया	–ख़ुर्रम मुराद	41
स्वच्छंदता पर रोक ही एड्स का उपचार	–मुहम्मद यूसुफ़	43
भारत में इस्लाम-1	–इरशाद अली ख़ान	45
पगडंडी (लघुकथा)	–डॉ॰ मु॰अ॰	48
सब्र की शक्ति (बालवीथी)		49



वह उन्हें नेकी का हुक्म देता है, बुराई से रोकता है, उनके लिए पाक चीज़ें हलाल (वैध) और नापाक चीज़ें हराम (अवैध) करता है,[114] और उन पर से वह बोझ उतारता है जो उन पर लदे हुए थे और वे बंधन खोलता है जिनमें वे जकड़े हुए थे।[115] अतः जो लोग इस पर ईमान लाएं और इसकी सहायता और समर्थन करें और उस रोशनी की पैरवी करें जो इसके साथ नाज़िल (अवतरित) की गयी है, वही सफल होने वाले हैं। ऐ मुहम्मद (सल्ल०), कहो कि ऐ इन्सानो, मैं तुम सबकी उस अल्लाह का पैग़म्बर हूं जो धरती और आसमानों की बादशाही का मालिक है, उसके सिवा कोई ख़ुदा नहीं है, वही जीवन प्रदान करता है और वही मृत्यु देता है, अतः ईमान लाओ अल्लाह पर और उसके भेजे हुए उम्मी नबी पर जो अल्लाह और उसकी बातों को मानता है और पैरवी इख़्तियार करे उसकी, आशा है कि तुम सीधा मार्ग पा लो।"

मूसा[116] की क़ौम में एक गिरोह ऐसा भी था जो हक़ के मुताबिक़ हिदायत करता और हक़ ही के मुताबिक़ इन्साफ़ करता था।[117] और हमने इस क़ौम को 12 घरानों में बांट करके उन्हें स्थायी गिरोहों का शक्ल दे दिया था।[118]

–क़ुरआन, 7 : 157-160

---

114. अर्थात्, जिन पाक चीज़ों को उन्होंने हराम कर रखा है, वह उन्हें हलाल क़रार देता है और जिन नापाक चीज़ों को ये लोग हलाल किये बैठे हैं उन्हें वह हराम क़रार देता है।

115. अर्थात् उनके फ़क़ीहों (धर्म-ज्ञाताओं) ने अपनी क़ानूनी छिद्रान्वेषणों से, उनके संसार त्यागी संन्यासियों ने अपने वैराग्य के अतिरेक से और उनके जाहिल लोगों ने अपने अंधविश्वास और खुद की बनायी हुई हदों और नियमों से उनकी ज़िन्दगी को जिन बोझों तले दबा रखा है और जिन जकड़बंदियों में कस रखा है, यह पैग़म्बर वे सारे बोझ उतार देता हैं और उन तमाम बंधनों को तोड़कर ज़िन्दगी को आज़ाद कर देता है।

116. अस्ल वार्ताक्रम बनी इसराईल के बारे में चल रहा था। बीच में अवसर के अनुकूल हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) की रिसालत (पैग़म्बरी) पर ईमान लाने का आह्वान सन्दर्भ से हटकर आ गया। अब फिर तक़रीर का रुख़ उसी विषय की ओर फिर रहा है जो पिछली कई आयतों से बयान हो रहा है।

117. अधिकांश अनुवादकों ने इस आयत का अनुवाद इस प्रकार किया है कि मूसा की क़ौम में एक गिरोह ऐसा है जो सत्य के अनुसार हिदायत और न्याय करता है, अर्थात् उनके निकट इस आयत में बनी इसराईल की उस नैतिक और मानसिक दशा बयान की गयी है जो क़ुरआन के उतरने के समय थी। लेकिन संदर्भ को देखते हुए हम इस बात को प्राथमिकता देते हैं कि इस आयत में बनी इसराईल का वह हाल बयान हुआ है जो हज़रत मूसा के ज़माने में था और इससे अभिप्राय यह प्रकट करना है कि जब इस क़ौम में गोशालापरस्ती (बछड़ा पूजन) का जुर्म किया गया और अल्लाह की ओर से उसकी पकड़ हुई तो उस समय सारी क़ौम बिगड़ी हुई न थी, बल्कि उसमें एक अच्छा-ख़ासा सत्यवादी गिरोह मौजूद था।

118. संकेत है बनी इसराईल के उस संगठन की ओर जिसका उल्लेख क़ुरआन की सूरह अल-माइदा (5), आयत 12 में हुआ है और जिसका पूर्ण विवरण बाइबल की किताब गिनती में मिलता है। इससे मालूम होता है कि हज़रत मूसा ने अल्लाह तआला के हुक्म से सीना पहाड़ के वीरानों में बनी इसराईल की जनगणना करायी, फिर उनके 12 घराने को, जो हज़रत याक़ूब के

(शेष पृष्ठ 12 पर)

पवित्र क़ुरआन
को इंटरनेट पर पढ़िए
www.quranhindi.com

नुबूवत की किरणें

अन्तिम सन्देष्टा ने कहा

मुसलमानों की प्रतिष्ठा का आदर, उनके अधिकार और उनके साथ करुणा और दयालुता का व्यवहार

❖ हज़रत अबू मूसा (रज़ि०) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने कहा : "मोमिन का मोमिन से संबंध बिल्कुल दीवार जैसा है कि उसका एक हिस्सा दूसरे को सुदृढ़ रखता है ।" फिर आपने एक हाथ की अपनी उंगलियों को दूसरे हाथ की उंगलियों में डाला (अर्थात उंगलियों का जाल बनाकर समझाया)।"

–बुख़ारी, मुस्लिम

❖ हज़रत अबू मूसा (रज़ि०) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने कहा : "जो कोई हमारी मस्जिदों या हमारे बाज़ार से कुछ लिए हुए गुज़रे और उसके पास तीर हो, तो उसे चाहिए कि उसे क़ाबू में रखे या तीर के फल को अपने हाथ में पकड़े रहे कि कहीं उससे किसी मुसलमान को कोई तकलीफ़ न पहुंच जाए ।"

–बुख़ारी, मुस्लिम

❖ हज़रत नोमान बिन बशीर (रज़ि०) से स्वायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने कहा : "पारस्परिक प्रेम और पारस्परिक दया और पारस्परिक अनुग्रह में मोमिनों की मिसाल शरीर की है कि जब उसका कोई अंग पीड़ित होता है, तो सम्पूर्ण शरीर उसके साथ जागता और ज्वर में ग्रस्त हो जाता है ।"

–बुख़ारी, मुस्लिम

❖ हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि०) कहते हैं कि नबी (सल्ल०) ने हज़रत हसन बिन अली (रज़ि०) का चुम्बन लिया । उस समय आपके पास अकरह बिन हाबिस भी थे । हज़रत अकरह ने कहा : मेरे दस लड़के हैं और मैंने उनमें से किसी का चुम्बन नहीं लिया । अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने उनकी ओर देखा और कहा : "जो दया नहीं करता, उस पर दया नहीं की जाती ।"

–बुख़ारी, मुस्लिम

❖ हज़रत आइशा (रज़ि०) कहती हैं कि कुछ बदवी (ग्रामीण) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) के पास आये और कहा कि क्या आप अपने बच्चों को चूमते हैं ? आपने कहा : "हां ।" उन्होंने कहा : किन्तु अल्लाह की क़सम, हम तो नहीं चूमते ! इस पर अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने कहा : "आख़िर इसमें मेरा वश ही क्या है, यदि अल्लाह ने तुम्हारे दिलों से दया-भाव को निकाल लिया ।"

–बुख़ारी, मुस्लिम

❖ हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने कहा : "जब तुममें से कोई व्यक्ति लोगों को नमाज़ पढ़ाये, तो उसे चाहिए कि वह संक्षिप्त और हल्की पढ़ाये, क्योंकि उनमें कमज़ोर भी होते हैं और बीमार और बूढ़े भी । और जब तुममें से कोई अकेले नमाज़ पढ़े, तो जितनी चाहे लंबी करे ।"

–बुख़ारी, मुस्लिम

('रियाज़ुस्सालिहीन' से)

संपादकीय

हज : अल्लाह के प्रति प्रेम एवं आज्ञाकारिता का असाधारण प्रदर्शन

इन्सान की ज़िन्दगी में ईशभक्ति को अत्यधिक महत्व प्राप्त है । इसके बिना ज़िन्दगी का कोई मूल्य नहीं है । अत: इसके अभाव में न तो ज़िन्दगी का उद्देश्य ही प्राप्त हो सकता है और न ही इन्सान के अन्दर के गुण पनप सकते हैं, जो वास्तविक ज़िन्दगी में होने चाहिए । कहने का तात्पर्य यह कि मानवीय व नैतिक गुणों और आचारों का आधार भी ईशभक्ति ही है । वास्तव में ईशभक्ति और दास्यभाव इन्सान की स्वाभाविक चीज़ें हैं । यही वह भाव है जो हमारे मन में तरंगित होने वाले विभिन्न भावों और प्रेरणाओं को अर्थमय एवं आशययुक्त बनाता है । उन्हें अनुकूलता और एकात्मकता प्रदान करता है । भावनाओं और अंत-प्रेरणाओं की अनेकता में एकता की विशेषता पैदा करता है । ईशभक्ति और दास्यभाव के वास्तविक अर्थ और इनकी मांगों का पूर्ण परिचय केवल अल्लाह के रसूलों और पैग़म्बरों द्वारा प्राप्त होता है । ईशभक्ति और दास्यभाव की अनुभूति वह शांति एवं आनन्द-निधि है जिससे दिलों को परितोष और दिव्य सुख प्राप्त होता है । यही वह मार्ग है जो बन्दे को उसके पैदा करने वाले की प्रसन्नता और सामीप्य प्राप्त कराता है । कुरआन में है : "सजदा करो और क़रीब हो जाओ" (अल-अलक़ : 19)।

इस्लाम को अपेक्षित है कि इन्सान अपने पैदा करने वाले ही की भक्ति करे और उसकी ही दासता स्वीकार करे । उसके ही हुक्म पर चले और उसी से आशाएं बांधे । उसी के प्रति अपने को समर्पित कर दे और उसके लिए हर प्रकार का त्याग करने और कुरबानी देने पर तत्पर रहे । हज इन सब भावनाओं को परिपूर्ण और ताज़ा करता है । हज को इस्लाम में मौलिक महत्व प्राप्त है । यह भी मुसलमानों की फ़र्ज़ इबादत है । हर सामर्थ्यवान मुस्लिम स्त्री और पुरुष के लिए पूरे जीवन में कम से कम एक बार हज करना अनिवार्य है । कुरआन में है : "लोगों पर अल्लाह का यह हक़ है कि जो व्यक्ति इस घर (काबा) तक पहुंच सकता हो वह इसका हज करे और जिस किसी ने कुफ़्र की नीति अपनायी तो (वह जान ले कि) अल्लाह सारे संसार से बेपरवाह है" (आले-इमरान : 97)। हज करना वास्तव में अल्लाह की पुकार पर दौड़ना है । अल्लाह के आमंत्रण पर उसकी सेवा में हाज़िरी देना है । अल्लाह ने काबा को सर्वथा भलाई, बरकत और सारे संसार के लिए मार्गदर्शन का उद्गम बनाया है । यह एकेश्वरवाद (तौहीद) का केन्द्र है । हज से संबंधित जितने कार्य हैं उन सबसे इन्सान के दिल पर एकेश्वरवाद ही की छाप पड़ती है ।

हज एक पहलू से सबसे बड़ी इबादत है । अल्लाह के प्रेम और उसकी भक्ति में इन्सान अपना कारोबार और घर-परिवार एवं मित्रों को छोड़कर यात्रा पर निकलता है । फिर उसकी यह यात्रा साधारण यात्रा की तरह नहीं होती । इस यात्रा में उसका लौ अल्लाह ही की ओर लगा रहता है । जैसे-जैसे अल्लाह का घर क़रीब आता-जाता है उत्सुकता और प्रेम की अग्नि और भड़कती जाती है । वह अपने गुनाहों पर लज्जित होता है । सच्चे दिल से तौबा करता और अल्लाह से प्रार्थनाएं करता है कि उसे अच्छे कर्म करने का सौभाग्य प्राप्त हो । वास्तव में हज इन्सानी ज़िन्दगी के सुधार का भी हर वर्ष होने वाला विश्व स्तरीय आयोजन है । यह इस्लाम के समानता के सिद्धांत का विश्व स्तर पर व्यावहारिक प्रदर्शन भी है और विश्व बंधुत्व एवं भ्रातृत्व का भी । इस मौक़े पर अल्लाह के मार्ग में जानवर कुरबान करना अपने-आपको कुरबान करने के प्रतिनिधित्व का अर्थ रखता है । यह वास्तव में इस बात का इक़रार है कि हमारे प्राण अल्लाह की नज़्र (भेंट) हैं । जब वह मांगेगा हम दे देंगे । जब भी अल्लाह के मार्ग में ख़ून बहाने की आवश्यकता होगी, अपना ख़ून बहाएंगे । कुरबानी के पीछे यही पवित्र भावना काम करती है । अल्लाह से दुआ है कि हम सबको अपने हुक्मों पर चलने की तौफ़ीक़ (दैवयोग) प्रदान करे ।

आपके पत्र

यू॰पी॰ एस॰टी॰एफ॰ की काली करतूतें

उत्तर प्रदेश का प्रतापगढ़ ज़िला और उसकी कुंडा तहसील अभी तक रघुराज प्रताप सिंह उर्फ़ राजाभैया के आतंक के लिए जाना जाता रहा है, लेकिन 9 फ़रवरी से यहां एक नये तरह का आतंक फैला हुआ है । इस दिन रात साढ़े नौ बजे के क़रीब कुंडा बाज़ार की एक दुकान 'हिन्दुस्तान इलेक्ट्रिकल' से इनोवा गाड़ी सवार कुछ लोग दुकान के मालिक मुहम्मद कौसर फ़ारूक़ी को उठा ले जाते हैं । घटना से आतंकित कौसर के घर वाले स्थानीय थाने में तत्काल इसकी सूचना देते हैं, साथ ही मानवाधिकार आयोग सहित सरकार और पुलिस के आला अफ़सरों को भी इत्तिला करते हैं । 11 फ़रवरी को प्रदेश के पुलिस महानिदेशक विक्रम सिंह मीडिया को 6 आतंकियों के पकड़े जाने की सूचना देते हैं, जिनका संबंध रामपुर में सी॰आर॰पी॰ एफ़ कैम्प पर कथित आतंकी हमले से बताया जाता है । कौसर फ़ारूक़ी भी इन्हीं कथित आतंकियों में से एक बताया जाता है ।

कौसर की गिरफ़्तारी के बाद से ही एस॰टी॰एफ॰ यह सिद्ध करने में लगी है कि कैम्प पर हमले में प्रयुक्त असलहे और विस्फोटक कौसर के ही घर पर रखे गये थे । इस घटना में शामिल आतंकी सुहैल, कौसर के घर रुका था । एस॰टी॰एफ॰ से एक क़दम आगे बढ़ते हुए स्थानीय मीडिया उसके कई बार पाकिस्तान जाने, बहनों का संबंध पाकिस्तान से होने, 40 लाख रुपये के बरामदगी जैसी मनगढ़ंत ख़बरें बिना किसी ठोस आधार और स्रोत के सनसनी रूप में छापी । इस प्रकार शासन-प्रशासन के साथ मीडिया ने भी मिलकर कौसर फ़ारूक़ी को आतंकी क़रार देने में कोई कसर नहीं छोड़ी ।

इस घटना के पन्द्रह दिन बाद मानवाधिकार संगठन पीपुल्स यूनियन फॉर ह्यूमन राइट्स (पी॰यू॰एच॰आर॰) की एक जांच टीम कौसर के परिजनों से मुलाक़ात करती है तो कुछ और ही कहानी निकल कर सामने आती है । मुहम्मद कौसर फ़ारूक़ी वल्द हाजी क़दीरुद्दीन, 1990 से ही रोज़ी-रोटी के जुगाड़ में सऊदी अरब चला गया था । जहां वह उमेजा शहर में एक मुर्ग़ी फार्म में नौकरी करता था । लेकिन दो साल पहले वह अपनी जगह अपने छोटे भाई सरवर फ़ारूक़ी को रखकर वापस अपने वतन लौट आया । घर वापस आकर उसने कुंडा बाज़ार में ही एक हिन्दुस्तान इलेक्ट्रिकल नाम से बिजली के सामानों की दुकान खोल रखी थी । यही उसकी कमाई का एकमात्र ज़रिया था ।

कौसर की गिरफ़्तारी जिस सुहैल नाम के कथित आतंकी के बयान के आधार पर की गयी है, वह भी कौसर के साथ ही उमेजा में काम करता था । सुहैल के संबंध में एस॰टी॰एफ॰ का कहना है कि वह रामपुर की घटना में प्रयुक्त असलहों को तीन महीने पहले ही लाकर कौसर के घर रख गया था । हमले से कुछ दिन पहले वह कौसर के घर आकर उन असलहों की सफ़ाई भी की थी ।

इस संबंध में जब प्रतापगढ़ के एस॰पी॰ आर॰के॰ श्रीवास्तव से जानकारी मांगी गयी तो एस॰टी॰एफ॰ और स्थानीय पुलिस के परस्पर विरोधी बयान खुलकर सामने आएं । प्रतापगढ़ एस॰पी॰ ने एस॰टी॰एफ॰ के एस॰एस॰पी॰ का हवाला देते हुए बताया कि असलहे और विस्फोटक कौसर के कुंडा वाले आवास पर नहीं बल्कि रामपुर वाले मकान में रखे गये थे । जबकि कौसर के पिता ने जांच दल को बताया कि उनका रामपुर में कोई मकान नहीं है । उनका कहना है कि 'रामपुर में मकान तो क्या मैं या मेरे परिवार का कोई व्यक्ति कभी भी रामपुर नहीं गया ।' पिता हाजी क़दीरुद्दीन की सात संतानों में कौसर सबसे बड़ा है । बाक़ी भाइयों में अनवर और अफ़सर कुंडा में ही बिस्कुट की दुकान चलाते हैं । तीन बहनें, जिनके संबंध में स्थानीय मीडिया बार-बार यह प्रचारित कर रही थी कि वह पाकिस्तान में रहती हैं, शादी कुंडा तहसील अन्तर्गत ही हुई है ।

इस पूरे मामले में मीडिया ने जो भूमिका अदा की वह किसी को भी आतंकी साबित और लोगों में इसके लिए जनमत तैयार करने के लिए काफ़ी था । बिना किसी जांच-पड़ताल या पर्याप्त सुबूत के मीडिया ने कौसर को न केवल आतंकी क़रार दिया, बल्कि स्थानीय पुलिस

की लापरवाही पर लगातार सवालिया निशान लगाते हुए उसे भी उकसाती रही । स्थानीय अख़बारों में छपे किसी भी समाचार के साथ स्रोत का उल्लेख करना भी वाजिब नहीं समझा गया । ऐसी ही एक रिपोर्ट 13 फ़रवरी के अमर उजाला में छपी, जिसमें लिखा गया है-''सूत्र बताते हैं कि इसके बाद लखनऊ से इंस्पेक्टर अनिल कुमार सिंह और सी०बी० राय के निर्देशन में इलाहाबाद की भी एस०टी०एफ० टीम कुंडा पहुंची और कोतवाली पुलिस का सहयोग लेकर उसे गिरफ़्तार किया । बताते हैं कि कौसर की बहनें पाकिस्तान में रहती हैं । कौसर कई बार पाकिस्तान जा चुका है । दो-तीन साल के भीतर कार, मकान और मवई के पास पांच बीघा ज़मीन ख़रीदने की बात को लेकर पुलिस गंभीर है ।''

इस पूरी रिपोर्ट में समाचार को 'सूत्र बताते हैं' और 'बताते हैं' के आधार पर लिखा गया है लेकिन ये सूत्र बताने वाला कौन है का कहीं भी ज़िक्र नहीं आया है । साथ ही जो समाचार और जानकारियां कौसर के संबंध में दी गयी हैं साफ़ तौर पर झूठी और मनगढ़ंत हैं । रिपोर्टर ने कौसर के घर तक जाने की भी ज़हमत नहीं उठायी । जो रिपोर्टर कौसर के घर गये भी वह सच्चाई को देखकर भी अनदेखा किया । इसका भी उदाहरण 12 फ़रवरी के अमर उजाला में देखा जा सकता है । इसमें कौसर के मकान के रूप में जिस घर की तस्वीर छापी गयी है वह कौसर का न होकर बगल के एक पुलिस अधिकारी के भव्य मकान का है । जिस पर बाक़ायदा उस पुलिस अधिकारी की नेमप्लेट भी लगी है ।

दहशत में जी रहे इस पूरे परिवार की आर्थिक स्थिति ऐसी नहीं है कि वह मुक़दमा लड़ने के लिए कोई मुकम्मल वकील कर सके । कौसर की पत्नी सलमा बेगम अपने पति के जल्दी छूट जाने की आस लगाएं बैठी हैं । उनका कहना है कि 'वह बिल्कुल बेगुनाह हैं और ज़रूर छूट जाएंगे ।' कौसर की बेगुनाही का एक बड़ा सबूत वह इक़रारनामा भी है, जिसमें यह दर्ज है कि कौसर पहली जनवरी के दिन अपनी दुकान को मुहम्मद फ़ारूक़ पुत्र रियाज़ से किराये पर ली गयी नयी दुकान में शिफ़्ट कर रहा था । एस०टी०एफ० ने 31 दिसम्बर-1 जनवरी की रात में सी०आर०पी०एफ० कैम्प पर हमले में ही कौसर की संलिप्तता दिखायी थी । इस पूरी पुलिसिया पठकथा को स्थानीय लोग हास्यस्पद बताते हैं ।

क्षेत्र के मनोनित सभासद मुहम्मद कलामुद्दीन का कहना है कि, 'यह हमारे क्षेत्र की पहली ऐसी घटना है । यह पूरा क्षेत्र हिन्दू-मुस्लिम की मिश्रित आबादी वाला है । इस फ़र्ज़ी गिरफ़्तारी से न केवल कौसर का परिवार बल्कि पूरा क्षेत्र आतंकित है । कौसर के उठाये जाने के बाद से ही स्थानीय लोगों में रोष व्याप्त है । स्थानीय निवासी और अल्पसंख्यक कल्याण परिषद के अध्यक्ष जुबैर असद का कहना है कि-''कौसर की रिहाई के लिए यहां की हिन्दू-मुस्लिम अवाम मिलकर कोशिश में जुटी हैं । इसके लिए हस्ताक्षर

SHATABDI FOUNDATION, GAYA

- Started Shatabdi Public School in 200 I with primary classes, has now developed into a 10+2 CBSE affiliated educational institution with quality education in modern subjects with moral orientation.
- Presently there are around 1000 students who are provided modern teaching facilities. The Foundation also adopts poor/ orphan students
- Under Upwardbound .scheme, another project has been launched for preparation of +2 students to compete in Entrance Test for Engineering, Medical and other professional & technical courses.
- Our immediate needs are (a) Purchase one more school bus, (b) Construction of Prayer Hall (c) Purchase of 30 Computers.

Ahle Khair Hazrat are Requested to Donate.

Kindly send your cheque/draft in favour of "Shatabdi Foundation, Gaya".

(ProfZ.H.Khan) Chairman

(Prof M. B. Zaman) Secretary

Shatabdi Public School, Katari Hill Road, Gaya-823001 (Bihar) INDIA

अभियान चलाया जा रहा है । जिसे हम राष्ट्रीय मानवाधिकार संगठन सहित अन्य सरकारी संस्थाओं को भेजेंगे और उनसे कौसर की रिहाई के लिए सामूहिक गुहार करेंगे ।''

प्रदेश में एक के बाद एक हुई आतंकी घटनाओं में एस०टी०एफ० ने जिस भी राजनीतिक दबावों के चलते फ़र्ज़ी गिरफ़्तारियां की हैं सभी में वह फंसती जा रही है । वाराणसी के संकटमोचन बम विस्फोट का मास्टरमाइंड बताकर जिस आफ़ताब आलम अंसारी को गिरफ़्तार किया था, वह पहले ही निर्दोष साबित हो चुका है ।

आफ़ताब आलम अंसारी को छुड़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले वकील मुहम्मद शोएब कहते हैं कि–'एस०टी०एफ० जितनी भी गिरफ़्तारियां कर रही है वह कहीं से भी लोकतांत्रिक नहीं है । बिना किसी ठोस आधार पर उठाये जा रहे युवकों पर एस०टी०एफ० ने अभी तक जो भी आरोप लगाए हैं उसे साबित कर पाना उसके लिए ही मुश्किल होता जा रहा है ।'

प्रदेश में आतंकवाद के नाम पर उठाये जा रहे लोगों के संबंध में पी०यू०एच०आर० के प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य शाहनवाज़ आलम का कहना है कि–'प्रतापगढ़ और जौनपुर जैसे छोटे शहरों से उठाये जा रहे कौसर जैसे अन्य लड़कों को आतंकवादी क़रार देकर सांप्रदायिकता को निचले स्तर तक फैलाएं जाने की कोशिश है । आतंकवाद के नाम पर की जा रही फ़र्ज़ी गिरफ़्तारियां बसपा सरकार के साम्प्रदायिक चरित्र को उजागर करती हैं । यहां की मुख्यमंत्री मायावती पूर्ववर्ती भाजपा सरकारों के ही नक़्शे क़दम पर चल रही है । इसका ताज़ा उदाहरण पोटा जैसे काले क़ानूनों की तर्ज़ पर बनाया गया नया क़ानून यू०पी० कोका है ।'

उत्तर प्रदेश में कौसर फ़ारूक़ी जैसे निर्दोष लोगों को आतंकवादी क़रार देने की एस०टी०एफ० की कोशिशें आने वाले दौर के ख़तरनाक रुख़ की ओर इशारा करती हैं । इसमें शासन-प्रशासन और मीडिया भी बराबर की हिस्सेदार है । ये सभी मिलकर साम्प्रदायिकता के लिए नये वर्ग और क्षेत्र का निर्माण करने में लगे हैं । हाल ही में पारित नया क़ानून यू०पी० कोका इसके लिए बड़ा हथियार साबित होगा, जो कौसर जैसे युवकों को कभी भी गिरफ़्तार कर आतंकी क़रार देने में सरकारी मशीनरी के काम आएगा ।

विजय प्रताप
11-बी, सतलज हॉस्टल,
न्यू जे०एन०यू० कैरुपस,
नयी दिल्ली-67
मोबाइल : 0971806264

'कहां क्या है ?' में त्रुटि

'कान्ति' का नवम्बर का अंक मिला । यह बहुत ही सराहनीय बना है ।

'कहां क्या है ?' में एक त्रुटि बहुत अरवरती है : लिखा है–'हिन्दू धर्म का मूल स्वरूप शाकाहारी' (आपके पत्र) । यहां 'नहीं' शब्द छूट गया है, जबकि पृष्ठ 8 पर जहां यह पत्र छपा है, वहां 'नहीं' शब्द मौजूद है–शीर्षक में ।

स्वामी तृप्तानंद जी का यह पत्र एक तरह से ऐतिहासिक दस्तावेज़ बन गया है । उन्होंने तथ्यों को निर्भीकता से प्रस्तुत किया है, जिसके लिए वे बधाई के पात्र हैं ।

श्री अपूर्वानन्द का लेख भी आंखें खोलने वाला और समीचीन प्रश्न उठाने वाला है ।

श्री मुद्राराक्षस ने धर्मान्तरण के मौलिक अधिकार को और बाबा साहब डॉ० अम्बेडकर के एतद्विषयक विचारों को जिस तरह प्रस्तुत किया है, वह एक सामयिक यक्षप्रश्न का उत्तर देता है । उड़ीसा में जो कुछ बहुसंख्यक अतिवादी कर रहे हैं या देश के विभिन्न भागों में वे जो कुछ कर रहे हैं अथवा साध्वी प्रज्ञा सिंह व उसके साथी आतंकियों ने जो कुछ किया है–उसके बरअक्स उन लोगों को अब क्या कहना है जो यह कहते नहीं अघाते थे कि माना हर मुसलमान आतंकी नहीं, पर हर आतंकी मुसलमान हैं ? 'बालवीथी' में भी जानकारी भरपूर है ।

डॉ० सुरेन्द्र अज्ञात
बंगा, पंजाब

आडवाणी : आतंकवाद के अस्ल मुजरिम

जाने-माने वरिष्ठ पत्रकार और लेखक खुशवंत सिंह लिखते हैं कि आडवाणी देश के साम्प्रदायिक माहौल को गंदा कर रहे हैं । बाबरी मस्जिद गिराने के अस्ल ज़िम्मेदार आडवाणी ही हैं, उसके बाद ही बाज़ारों, ट्रेनों में बमों के धमाके होने लगे । वे आगे लिखते हैं–अयोध्या और गुजरात में भयानक अपराध किये गये, मगर किसी भी अपराधी को सज़ा नहीं मिली । अपराधियों को सज़ा न दी जाए तो और अपराधी पैदा होते हैं । आडवाणी को अपने पापों को अन्ततः भुगतना होगा ।

बड़े अंग्रेज़ी पत्रकार और विद्वान कुलदीप नैयर, एन॰ राम, प्रोफ़ेसर राम पुनियानी आदि भी ऐसे ही विचार व्यक्त करते रहे हैं । 1992-93 में मुंबई के मुस्लिम विरोधी दंगे, मोदी के राज्य आतंकवाद के नतीजे में गुजरात में 3 हज़ार मुसलमानों का क़त्लेआम । इन सब हिंसा के शिकार मुसलमानों को अभी तक इन्साफ़ नहीं मिला । सज़ा पाने के बजाय मोदी गुजरात में राज कर रहे हैं ।

सामाजिक और आर्थिक अन्याय की प्रतिक्रिया में भी आतंकवाद और नक्सलवाद पैदा होता है । इस ओर भी ध्यान दिया जाना चाहिए ।

जैन आचार्य राजयश सुरिस्वार जी ने पिछले दिनों नागपुर में कहा, "जैन धर्म ने अहिंसा और एकजुटता की शिक्षा दी है ।" महावीर ने भी जियो और जीने दो पर बहुत ज़ोर दिया है । उन्होंने कहा, "कमज़ोरों पर हमला करना कायरता है, माफ़ कर देना बहादुरी है ।"

पुरी के शंकराचार्य स्वामी अधोक्षानंद ने भी कुछ दिनों पूर्व गोवाहाटी में पत्रकारों से कहा था, हिन्दू धर्म की शिक्षा की नींव उदारता है, एक-दूसरे को बर्दाश्त करना है । लेकिन नरेन्द्र मोदी इस शिक्षा के विरुद्ध हैं, वे राजनीतिक लाभ के लिए धर्म का उपयोग करने के माहिर हैं ।"

गांधी जी भी अहिंसा, शांति और उदारता की शिक्षा देते रहे, लेकिन हिंसा के पुजारियों ने उनकी भी हत्या करवा दी ।

हसनैन कैफ़
भंडारा, महाराष्ट्र

नारी शिक्षा : आज की ज़रूरत

आज हमारा देश हर क्षेत्र में प्रगति कर रहा है । अपने नये-नये आविष्कारों की वजह से हर क्षेत्र में अपनी कामयाबी का आग़ाज़ हर जगह कर रहा है । लेकिन कुछ क्षेत्र ऐसे भी हैं, जहां वह पूरी तरह से प्रगति नहीं कर पाया है । यह क्षेत्र है नारी शिक्षा का । यह एक ऐसा क्षेत्र है, जिसमें देश अभी भी पिछड़ा हुआ है ।

हम यह अच्छी तरह से जानते हैं कि नारी को समाज का एक बहुत ही ज़रूरी हिस्सा माना गया है, लेकिन इसकी शिक्षा के क्षेत्र में देश अभी भी बहुत पीछे है । ऐसा नहीं है कि भारतीय नारियां सदा से ही अनपढ़ रही हैं । समाज में स्त्री और पुरुष दोनों को एक सिक्के के दो पहलू की तरह देखा गया है । दोनों को बराबर से शिक्षित होना ज़रूरी है । लेकिन हमारे समाज में कुछ ऐसे लोग भी हैं, जो नारी शिक्षा के ख़िलाफ़ हैं । वे लोग आज भी नारी को 'पराया धन' और 'पांव की जूती' मानकर पुरुषों के सामने नहीं आने देना चाहते ।

वे लोग इस बात को भूल जाते हैं कि नारी ही मां बनकर बच्चों को पालती है और उनमें अच्छी आदतें डालती हैं । मां ही बच्चों की पहली उस्ताद (गुरु) होती है । वह अगर चाहे तो अपने बच्चे को एक क़ाबिल इन्सान बना सकती है, इसलिए औरत का शिक्षित होना बहुत ही ज़रूरी है ।

नारी शिक्षा की क़ीमत को नकारने वाले यह नहीं जानते कि एक नारी के पढ़ने से पूरा परिवार पढ़ता है । नारी को अशिक्षित रखकर परिवार और समाज की भलाई की बात सोची भी नहीं जा सकती ।

यह बात साफ़ है कि नारी में ममता, विश्वास और क़ुरबानी जैसे गुण होते हैं और इसलिए शिक्षा ऐसी होनी चाहिए कि उसकी सभी ताक़तों का विकास हो सके ।

समाज में नारी शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए कई आन्दोलन भी चलाए गये । जिसकी वजह से नारी शिक्षा की गति को काफ़ी आगे बढ़ाया गया । सरकार और समाज की कोशिशों से आज नारी शिक्षा की अहमियत बढ़ गयी है । भारत सरकार लड़कियों की शिक्षा को बी॰ए॰ तक मुफ़्त करने का इरादा कर चुकी है । गांवों और क़स्बों में भी जहां पहले लड़कियों की शिक्षा पर ज़ोर नहीं दिया जाता था । वहां पर भी उनकी शिक्षा के लिए बहुत सारी सुविधाएं दी जा रही हैं ।

21वीं सदी की नारी पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलने लगी है । यही नहीं पायलट बनकर विमान उड़ाने में भी यह नारी पुरुषों को पीछे छोड़ चली है ।

ये सभी काम तभी पूरे होंगे जब नारी शिक्षा की क़ीमत को समझा जाए । हमें लड़कियों को शिक्षा देने में पीछे नहीं रहना चाहिए । हमें यह पक्का इरादा करना होगा कि नारी को पूर्ण रूप से शिक्षित बनाना ही होगा, जिससे देश और उन्नति और प्रगति कर सके और किसी भी क्षेत्र में पीछे न रहे ।

रोशन आरा
नयी दिल्ली

जलाएं अच्छाइयों के दीप

दीवाली एक ऐसा त्योहार है, जिसमें अमावस्या के अंधकार को प्रकाश में बदला जाता है । इसका उद्देश्य मन से अज्ञानता के अंधकार को मिटा कर उसके स्थान पर प्रेम का भाव पैदा करना है ।

हम दीवाली की रात में दियें जलाते हैं । उसका अर्थ यह है कि यदि हमारे अन्दर बुराइयां व्याप्त हैं तो हम उन्हें जला डालें । दूसरों के प्रति ईर्ष्या, द्वेष आदि को मिटाकर स्नेह का प्रकाश फैलाएं । इस अवसर पर हम प्रार्थना करते हैं कि हमारा मन, हमारी बुद्धि और हमारी आत्मा उज्ज्वल हो, साथ ही हम यह भी प्रार्थना करें कि हमारा हृदय परपीड़ा के प्रति संवेदनशील हो ।

प्रस्तुति : **अबू सालेह शबीबी**

हिन्दू धर्म का मूल स्वरूप शाकाहारी नहीं

माह नवम्बर 2008 की आपकी पत्रिका में उक्त विषय पर स्वामी तृप्तानंद, पुनासा के विचार पढ़े । पहली बात तो यह कि भारत में कहीं भी हिन्दू धर्म नाम से कोई धर्म है ही नहीं । वास्तव में यह वैश्णव धर्म है । हिन्दू शब्द की उत्पत्ति मुसलमानों के बाद हुई है, जो लोग भारत को हिन्दुस्तान कहते थे । हिन्दुस्तान में रहने वाला हिन्दू कहलाया । और अब हिन्दुओं का धर्म भी हिन्दू ही बन गया जबकि एक भी ग्रंथ हिन्दू धर्म नाम से नहीं मिलेगा ।

रही बात शाकाहारी होने की । माना पुरातन काल में शिक्षा नहीं के बराबर थी, जीने का सलीक़ा भी दूसरा ही था । अर्थात जंगली जातियों की तरह जीया जाता था, इसलिए लोग मांसाहारी थे । धीरे-धीरे, ज्ञानार्जन होने लगा और जो ख़राब, अवांछनीय, अनावश्यक बातें थीं उनमें सुधार होने लगा और शाकाहार पर ज़ोर देना प्रारंभ हुआ । शाकाहार का ज़ोर भारत में रहा वह भी अमुक-अमुक राज्यों में ही । आज भी मांसाहारियों की जनसंख्या ज़्यादा है जो शाकाहार की ओर आकर्षित हो रहे हैं । जो धर्म प्रचलित हैं, उनकी मान्यताओं में भी समयानुसार कम या ज़्यादा होकर परिमार्जित होती रहती है, यह हम वर्तमान युग में देख रहे हैं । अत: वर्तमान में जो अच्छा है, उसे ही स्वीकारने में लाभ है, यही समीकरण भी है ।

घेवरचन्द गोदीका
जयपुर, राजस्थान

क़ुरआन ज्योति

(पृष्ठ 5 का शेष)

दस बेटों और हज़रत यूसुफ़ के दो बेटों की नस्ल से थे, अलग-अलग गिरोहों की शक्ल में संगठित किया, और हर गिरोह पर एक-एक सरदार नियुक्त किया, ताकि वह उनके अन्दर नैतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, सामाजिक और सैनिक दृष्टि से अनुशासन बनाये रखे और शरीअत के हुक्मों को लागू करता रहे और हज़रत याक़ूब के 12वें बेटे लावी की संतान को जिसकी नस्ल से हज़रत मूसा और हज़रत हारून थे, एक अलग गिरोह की शक्ल में संगठित किया ताकि वे इन सब क़बीलों के बीच सत्य का दीपक जलाये रखने की सेवा करता रहे ।

साहित्य-समाचार

योगेश कुमार गोयल को सम्मान

बादली हरियाणा से संचालित देश की अग्रणी फीचर एजेंसियों 'मीडिया केयर नेटवर्क', 'मीडिया एंटरटेनमेंट फ़ीचर्स' तथा 'मीडिया केयर न्यूज़' के समूह सम्पादक श्री योगेश कुमार गोयल को राष्ट्रीय स्तर के पुरस्कार 'श्री वीरेन्द्र गुप्त साहित्य रत्न सम्मान-2008' के लिए चयनित किया गया है । यह सम्मान उन्हें अखिल भारतीय साहित्य कला मंच (मुरादाबाद) द्वारा आगामी 30 नवम्बर को मुरादाबाद में एक साहित्यिक समारोह में प्रदान किया जाएगा । पुरस्कार स्वरूप उन्हें 2100 नक़द, शॉल, सम्मान पत्र तथा प्रतीक चिन्ह भेंट किये जाएंगे ।

विमोचन

दिल को छू लेने वाले शब्दकोषों को पिरोकर बनी, "पपीहे आधी रात न बोल" का विमोचन पिछले दिनों जबलपुर, मध्य प्रदेश में किया गया । आर०एस० यादव 'एहसास' द्वारा रचित इस कृति का विमोचन मुख्य अतिथि एस०एम० पाल खुराना कुलपति रादुविवि ने किया । अपने उद्बोधन में श्री खुराना ने कहा कि गीत, ग़ज़ल का यह संग्रह अपने आप में अलग है ।

नेकी के सिपाही

हज़रत हिन्दा बिन्त उत्बा (रज़ि०)

■ तालिब हाशमी

हज़रत हिन्दा (रज़ि०) हिन्दा के नाम से मशहूर हैं । आप क़ुरैश के ख़ानदान बनू अब्द शम्स से ताल्लुक़ रखती थीं । आपके पिता उत्बा बिन रबीअ् क़ुरैश के प्रतिष्ठित लोगों में से थे । आपका निकाह फ़ाकिहा बिन मुग़ीरा मख़ज़ूमी से हुआ । लेकिन उनसे निभ न सकी, तो अबू सुफ़यान बिन हरब के निकाह में आयीं ।

हिन्दा के पिता उत्बा बिन रबीअ् और पति अबू सुफ़यान दोनों इस्लाम के सख़्त दुश्मन थे और वह ख़ुद भी इस्लाम दुश्मनी में कम न थीं । सन 2 हिजरी में जंगे बद्र में हिन्दा के पिता उत्बा क़ुरैश के कई सरदारों के साथ मारा गया । मारे जाने वालों में अबू जह्ल भी शामिल था । उसके बाद मक्का के मुशरिकों की कमान अबू सुफ़यान ने संभाली । हिन्दा ने भी अपने पति का बढ़-चढ़कर साथ दिया । वह एक जोशीली वक्ता थीं । बाप की हत्या ने उसके भीतर प्रतिशोध की ज्वाला भड़का दी थी ।

सन 3 हिजरी में अबू सुफ़यान के नेतृत्व में मदीना पर हमला किया गया । इसी जंग को जंगे उह्द कहते हैं । हिन्दा विशेष रूप से अपने पिता के क़ातिल हज़रत हमज़ा (रज़ि०) से प्रतिशोध लेना चाहती थीं । इसके लिए ज़ुबैर बिन मतअम के ग़ुलाम वहशी को हज़रत हमज़ा (रज़ि०) की हत्या के लिए तैयार किया । वहशी भाला फेंकने में बहुत माहिर था । वह घात लगाकर बैठ गया । जब हज़रत हमज़ा (रज़ि०) उसकी ज़द में आये तो उसने अपना भाला फेंका जो हज़रत हमज़ा (रज़ि०) के शरीर को पार कर गया ।

कुफ़्फ़ार की महिलाओं ने इस पर ख़ुशी के गीत गाये । हिन्दा प्रतिशोध की ज्वाला से वशीभूत होकर हज़रत हमज़ा (रज़ि०) का पेट चाक करके कलेजी निकाली और उसे चबाने लगी । अल्लाह के रसूल (सल्ल०) को इस दर्दनाक घटना से बहुत सदमा पहुंचा ।

❷

सन 8 हिजरी में अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने मक्का पर विजय प्राप्त की और दस हज़ार सहाबियों के साथ शान से मक्के में दाख़िल हुए । उस समय वहां ऐसी कोई शक्ति न थी जो अल्लाह के रसूल (सल्ल०) को प्रतिशोध लेने से रोक सकती । लेकिन रहमते-दोआलम (सल्ल०) ने अपने बदतरीन दुश्मनों को भी माफ़ कर दिया और यह घोषणा की कि जो व्यक्ति अबू सुफ़यान के घर में पनाह लेगा उससे भी कोई पूछ-गूछ न होगी । अबू सुफ़यान (रज़ि०) ने एक दो दिन पहले ही इस्लाम क़बूल करने का ऐलान किया था ।

हिन्दा पर भी इस्लाम की सदाक़त सामने आ चुकी थी । इसलिए वह भी बुर्क़ा पहनकर कुछ महिलाओं के साथ अल्लाह के रसूल (सल्ल०) की सेवा में हाज़िर हुईं । इस अवसर पर आप (सल्ल०) से उनकी जो बातचीत हुई वह इस तरह थी :

हिन्दा : ऐ अल्लाह के रसूल (सल्ल०)! आप हमसे किन बातों पर बैत लेते हैं ?

आप (सल्ल०) : शिर्क न करो और अल्लाह को एक मानो ।

हिन्दा : यह अह्द आपने मर्दों से नहीं लिया फिर भी हमें स्वीकार है ।

आप (सल्ल०) : चोरी न करो ।

हिन्दा : मैं अपने पति की अनुमति के बिना कुछ ख़र्च कर डालती हूं, पता नहीं यह जायज़ है या नहीं ।

आप (सल्ल०) : संतान की हत्या न करो ।

हिन्दा : हमने तो अपने बच्चों को पाला था (यानी हत्या नहीं की थी) जब बड़े हुए तो आप (सल्ल०) ने उनकी हत्या कर डाली ।

आप (सल्ल०) का दिल बहुत बड़ा था । हिन्दा ने यद्यपि आप (सल्ल०) के प्रिय चचा की कलेजी चबा डाला था और इस अवसर पर भी गुस्ताख़ी के साथ बातचीत की थी लेकिन आप (सल्ल०) ने उसकी तमाम ख़ताओं को माफ़ कर दिया । हिन्दा को अपनी जान बख़्शी की कोई उम्मीद न थी लेकिन जब अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने उन्हें माफ़ कर दिया तो उनके दिल की दुनिया पूरी तरह बदल गयी और वे

सच्चे दिल से मुसलमान हो गयीं और अनायास ही बोल पड़ीं :

"ऐ अल्लाह के रसूल (सल्ल०)! इससे पहले आप (सल्ल०) से बढ़कर कोई दुश्मन न था लेकिन आज आप (सल्ल०) से ज़्यादा कोई प्रिय और सम्मानित नहीं ।"

❸

इस्लाम स्वीकार करने के बाद हज़रत हिन्दा (रज़ि०) की पूरी ज़िन्दगी इस्लाम की सेवा में लग गयी । हज़रत उमर फ़ारूक़ (रज़ि०) की ख़िलाफ़त में वे अपने पति हज़रत अबू सुफ़यान (रज़ि०) के साथ सीरिया जाने वाले मुजाहिदीन के लश्कर में शामिल हो गयीं । जिस जोशो-ख़रोश के साथ ये दोनों पति-पत्नी मुसलमानों के ख़िलाफ़ युद्ध किया करते थे उससे कई गुना अधिक जोश के साथ जिहाद में हिस्सा लिया और इस्लाम स्वीकार करने से पहले इस्लाम दुश्मनी का कफ़्फ़ारा अदा करने में कोई कसर उठा न रखी ।

सीरिया में जितनी भी जंग हुई उसमें जंगे-यरमूक सबसे ज़बरदस्त जंग थी । रोम के क़ैसर ने अपनी पूरी ताक़त जंग की आग में झोंक दी । कहते हैं कि रोमी सैनिकों की संख्या दस लाख तक थी जबकि इस्लामी मुजाहिदीन की तादाद तीस से चालीस हज़ार के बीच थी ।

इस युद्ध में हज़रत हिन्दा (रज़ि०) और उनके पति अबू सुफ़यान (रज़ि०) दोनों बड़े जोशो-ख़रोश के साथ शरीक हुए । लड़ाई में शत्रुओं का ज़बरदस्त दबाव था । मुसलमानों के क़दम कई बार पीछे हटे लेकिन औरतों ने उन्हें ग़ैरत दिलायी । हज़रत हिन्दा (रज़ि०) भी जोश दिला रही थीं । यदि कोई मुसलमान लड़ाई से मुंह मोड़ कर पीठ फेरता तो उसके घोड़े के मुंह पर खेमे की चोब मार-मार कर ग़ैरत दिलातीं कि जन्नत छोड़कर जहन्नम ख़रीदते हो और अपनी औरतों को रोमियों के हवाले करते हो ।

यह हज़रत हिन्दा (रज़ि०) और दूसरी महिलाओं की कोशिशें ही थी कि पीछे रहते मुसलमान पलट कर इस ज़ोर से रोमियों पर हमला किया और उनको काट कर रख दिया ।

इस अवसर पर पीछे रहने वाले मुसलमानों में हज़रत अबू सुफ़यान (रज़ि०) भी थे । हज़रत हिन्दा (रज़ि०) ने उन्हें देख लिया । वे उनकी तरफ़ लपकीं और कहा–"ख़ुदा की क़सम, तुम दीने हक़ के विरोध में और ख़ुदा के सच्चे रसूल (सल्ल०) को झुठलाने में बहुत सख़्त थे । आज मौक़ा है कि दीने हक़ की सरबुलन्दी और अल्लाह के रसूल (सल्ल०) की ख़ुशनूदी के लिए अपनी जान क़ुरबान कर दो और ख़ुदा के सामने सुर्ख़रू हो जाओ ।"

हज़रत अबू सुफ़यान (रज़ि०) को ग़ैरत आयी और वे पलट पड़े और टिड्ढी दल पर टूट पड़े । इसी जंग में एक और मौक़े पर रोमी सैनिक महिलाओं के टेंट के पास पहुंच गये । वहां मौजूद महिलाओं में हज़रत उम्मे अबान (रज़ि०), उम्मे हकीम (रज़ि०), ख़ौला (रज़ि०) और हिन्दा (रज़ि०) शामिल थीं । इन महिलाओं ने सैनिकों का मुक़ाबला करने का फ़ैसला किया । इन लोगों ने सैनिकों का डटकर मुक़ाबला किया यहां तक कि मुसलमानों की एक टुकरी मदद के लिए वहां पहुंच गयी ।

हज़रत हिन्दा (रज़ि०) की हज़रत उस्मान ग़नी (रज़ि०) के दौरे ख़िलाफ़त में मृत्यु हुई । उनकी औलादों में अमीर मुआविया (रज़ि०) इस्लामी इतिहास के नामवर शख़्सियत हैं ।

इब्ने असीर (रह०) ने लिखा है कि : हज़रत हिन्दा (रज़ि०) एक ख़ुद्दार, ग़ैरतमन्द, अपना अलग विचार रखने वाली बुद्धिमान महिला थीं ।

सही बुख़ारी की एक रिवायत से पता चलता है कि वे स्वभाव से बड़ी ही दानी थीं । वे शेरो-शायरी भी किया करती थीं । जंग-बद्र में अपने भाई अबू हुज़ैफ़ा (रज़ि०) को शेअरों में बुरा भला कहा । उसी तरह जंगे-उहद में शेअर पढ़-पढ़कर क़ुरैशियों को उभारती थीं । लेकिन जब उनकी ज़िन्दगी में इन्क़िलाब आ गया तो अपने शेअरों से मुजाहिदीन को काफ़िरों के ख़िलाफ़ जोश दिलाती थीं ।

इब्ने हिशाम ने लिखा है कि हिजरते नबवी के बाद जब हज़रत ज़ैनब बिन्ते रसूल (सल्ल०) मक्का से मदीना जाने के लिए अपना सामान बांध रही थीं तो हज़रत हिन्दा (रज़ि०) उनके पास आयीं और कहा :

"ऐ मुहम्मद की बेटी ! तुम अपने बाप के पास जा रही हो अगर रास्ते के लिए कुछ सामान आदि चाहिए तो बेझिझक मुझसे कहो । मैं उपलब्ध करा दूंगी ।

इस रिवायत से पता चलता है कि इस्लाम से दुश्मनी के बावजूद उनमें रवादारी मौजूद थी । इस्लाम में आने के बाद उनके ये गुण उभर कर सामने आये और उन्होंने पिछली ज़िन्दगी की तलाफ़ी अपने अच्छे आचरण के माध्यम से कर दी ।

...और माहौल बदल गया

❖ मौलाना नसीम ग़ाज़ी फ़लाही

वाराणसी से नयी दिल्ली के लिए ट्रेन अपने सही समय पर रवाना हुई । डिब्बे के सभी मुसाफ़िर अपनी-अपनी सीटों पर बैठ गये । थ्री टायर स्लीपर का डिब्बा था, इसलिए वही लोग इसमें सवार हुए थे जिनकी सीटें पहले से रिज़र्व थीं ।

ट्रेन अपनी मंज़िल की ओर जा रही थी । कुछ देर के बाद यात्री एक-दूसरे से बातचीत में व्यस्त हो गये, जैसा कि आमतौर पर होता है । थोड़ी-थोड़ी देर के बाद बातचीत का विषय और एजेंडा बदलता रहा । रेल मंत्री की तारीफ़ से बातचीत की शुरुआत हुई । सभी लोगों ने प्रशंसा करते हुए अपने-अपने अनुभव इस प्रकार बयान किये कि रेलवे मिनिस्टर ने अपग्रेड की स्कीम लागू करके आम जनता को लाभ पहुंचाया है । किसी ने कहा कि पिछले कई वर्षों से किराये में कोई बढ़ोतरी नहीं हुई । किसी ने कहा, रेलवे पूछताछ का सिस्टम बहुत अच्छा हो गया है वग़ैरह-वग़ैरह । इस विषय से जब लोग ऊब गये तो देश में फैली अराजकता और भ्रष्टाचार पर बातचीत होने लगी । लोग अपने-अपने तजुर्बों की रोशनी में बातचीत करने लगे । अब महसूस हो रहा था जैसे देश के समस्त कर्ताधर्ता यहां मौजूद हैं और वे सभी समस्याएं आज हल कर लेंगे । हालांकि अगर तहक़ीक़ की जाए तो कितनी ही समस्याएं इन्हीं की पैदा की हुई होंगी । देश की बल्कि विश्व की सबसे बड़ी समस्या 'आतंकवाद' पर भला बातचीत क्यों न होती । चुनांचे इस पर भी लोग ख़ूब बोले । किसी ने राजनेताओं को इसका सबब बताया, तो किसी ने धार्मिक उन्माद और रूढ़िवाद को । मुसलमानों के ख़िलाफ़ खुलकर तो न बोले, लेकिन इशारों में ज़रूर बातचीत की । इसका कारण, शायद यह था कि उस डिब्बे में एक मौलाना साहब भी बैठे हुए थे, शायद उनका लिहाज़ किया ।

बहरहाल, हम भारतीयों में कुछ न कुछ लिहाज़ बाक़ी है । लोग मौलाना साहब को देखकर सतर्क भी थे । वे कहीं...न हों । इसलिए उन पर पूरी नज़र रखे हुए थे । एक-दो लोगों ने कानाफूसी भी की । पता नहीं क्या बात की । गाड़ी एक स्टेशन पर रुकी, कुछ मिनट के बाद फिर रवाना हुई । अभी गाड़ी ने पूरी रफ़्तार भी न पकड़ी थी कि एक औरत ज़ोर से चिल्लायी, पकड़ो-पकड़ो । लोग अभी समझ पाते कि इतनी देर में कोई चोर-उचक्का उस औरत का पर्स लेकर भाग चुका था और ट्रेन से उतर चुका था । ट्रेन ने अब अपनी रफ़्तार भी पकड़ ली थी । इसलिए उसे पकड़ना नामुमकिन था । सभी लोग उस औरत की ओर देखने लगे । बहुत-से उसके पास आकर

आपकी संतुष्टि ही हमारी उपलब्धि है

गैलेक्सी फुटवियर

सभी प्रसिद्ध ब्रांड के लेडीज़, जेन्ट्स एवं बच्चों के जूते, चप्पलें, कैनवास, शूज़, हवाई चप्पलें आदि उचित मूल्य पर उपलब्ध हैं

उर्दू लाइब्रेरी रोड, मोतीहारी, बिहार-845401

खड़े हो गये । वह औरत किसी फ़ौजी की बीवी थी । किसी मजबूरी की वजह से अकेले सफ़र कर रही थी । उसे मेरठ के आगे किसी गांव में जाना था । उस ट्रेन से ग़ाज़ियाबाद उतरकर आगे का सफ़र बस से करना था । उसके सारे रुपये उस बैग में थे जिसे कोई लुटेरा ले उड़ा था । वह औरत बहुत परेशान थी । बड़ी बेचैन हो रही थी । उसकी बेचैनी उसके चेहरे से बिल्कुल साफ़ ज़ाहिर थी । वह सोच रही थी, अब क्या होगा ? मैं कैसे अपनी मंज़िल तक पहुंचूंगी ?

अब लोगों ने आदत के मुताबिक़ फिर टीका-टिप्पणी शुरू कर दी । एक साहब बोले, "अरे भाई ! यह सब पुलिस की मिलीभगत से होता है ।" किसी ने कहा, "ऐसे लोगों को तो फांसी दे देनी चाहिए ।" एक साहब ने कुछ और कहा, एक साहब ने कुछ और...। लोगों की ये बातें उस औरत के ज़ख़्मों पर नमक का काम कर रही थी । तरह-तरह के बुरे ख़्यालात उसके दिमाग़ में आ रहे थे ।

मौलाना साहब जो ख़ामोशी के साथ यह नज़ारा देख रहे थे, ज़रा ऊंची आवाज़ में बोले, "अरे ! आप लोग भी बड़े अजीब लोग हैं । आप लोग केवल टीका-टिप्पणी ही करते रहेंगे या इस बहन की कुछ मदद भी करेंगे ।" यह कहकर मौलाना ने अपनी जेब से दो सौ रुपये निकाले और उस औरत की ओर बढ़ाते हुए कहा, बहन चिंता मत करो । ये रुपये रख लो । मालिक ने चाहा तो तुम आसानी से अपनी मंज़िल तक पहुंच जाओगी । उस औरत ने रुपये लेने से साफ़ इन्कार कर दिया । और रोते हुए कहने लगी, "मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि मुझे भीख लेनी पड़ेगी । मैं अच्छे परिवार की औरत हूं । यह मेरे साथ क्या हो गया ? हाय ! मैं क्या करूं ?"

मौलाना ने उसे तसल्ली देते हुए फ़ौरन कहा कि बहन ये रुपये मैं आपको भीख के रूप में नहीं दे रहा हूं । बल्कि यह क़र्ज़ दे रहा हूं । क़र्ज़ तो बड़े से बड़े आदमी को भी लेना पड़ सकता है । तुम अपने घर पहुंचकर ये रुपये किसी ग़रीब या मुहताज को दे देना और तुम पर से यह क़र्ज़ अदा हो जाएगा । उस औरत ने वह रुपये रख लिए । बुरे समय में इस एहसान का उस पर इतना असर था कि वह शुक्रिया भी न कह सकी और उसकी आंखें नम हो गयीं । इस मंज़र को सभी लोग देख रहे थे । सब अपनी सीटों पर वापस हो गये । बातचीत फिर शुरू हो गयी । मगर अब बातचीत का विषय था, "इन्सानियत, मुसलमानों में ही पायी जाती है ।"

एक मामूली से अच्छे व्यवहार ने माहौल को पूरी तरह बदल दिया था । जो लोग मौलाना को शक की निगाह से देख रहे थे अब उनकी नज़रों में वे बेहद आदरणीय थे । वे उनकी संगत से राहत और दिल का सुकून हासिल कर रहे थे ।

Jamaat-e-Islami Social Service Society (Regd), Gaya

The Society is in service in the field of education, health and Islamic understanding for the last 34 years. Our resources are limited, our task is tremendous. We seek your co-operation in the following activities:-

1. **IQRA PUBLIC SCHOOL :** Besides 800 paying students, about 150 poor or orphan girls & boys are provided free education upto Matriculation with Islamic Curriculam.
2. **MILLAT HOSPITAL :** Every year about 15000 poor & needy patients are provided with free medical treatment & medicine besides other services.
3. **INTEREST-FREE SOCIETY :** Provides short-term loan without interest to needy people.
4. **ISLAMIC INFORMATION CENTRE :** Established at **Bodh-Gaya**, where **lakhs of foreigners** visit every year during Nov - March. The Centre provides reading materials on Islam, distributes Islamic literature and invites interested visitors for discussion besides inter-faith dialogue on regular basis.

Kindly send your cheque/draft in favour of the Society

(Q. Hoda)
Chairman

(Prof. M. B. Zaman)
Secretary

JISSS, Millat Campus, Leitch Road, Gaya-823001

संस्मरण

गायत्री समाज : जैसा हमने देखा

❑ डॉ॰ मुहम्मद अहमद

सन 1911 में गायत्री समाज के संस्थापक आचार्य श्रीराम शर्मा का जन्म सनाढ्य ब्राह्मण परिवार में हुआ था । पं॰ मदन मोहन मालवीय ने उनका यज्ञोपवीत संस्कार किया और मंत्र-दीक्षा दी । शर्मा जी देश की स्वाधीनता आन्दोलन के दौरान कई बार जेल गये । उन्होंने जिस सुधार आन्दोलन की शुरुआत की थी, वह स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद ही अपना आधार मज़बूत कर सका, ख़ासकर 1958 में मथुरा में गायत्री यज्ञ के ज़रिये इसका उल्लेखनीय प्रसार हुआ । इस यज्ञ में कहते हैं कि चार लाख लोगों ने भाग लिया । हिन्दू धर्म की उदार एवं वैज्ञानिक व्याख्या की कोशिश ने उन वर्णों व जातियों को भी गायत्री समाज के क़रीब किया, जो सदियों से उपेक्षा और शोषण के शिकार रहे थे । इससे भी गायत्री समाज के प्रति जन-सहयोग एवं उसका प्रभाव क्षेत्र बढ़ता चला गया ।

गायत्र समाज ऋग्वेद (3:62: 10) के गायत्री मंत्र को अपना मूलदर्शन मानना है । यह मंत्र अन्य वेदों (सामवेद, अन्तरार्चिक (13-33), यजुर्वेद (3:35, 30:2 और 36:3) में भी आया है । इसमें कुल 24 अक्षर हैं, लेकिन गायत्री समाज व्याहृति प्रयोग करते हुए 27-28 अक्षर वाला मंत्र बना देता है । अत: "ॐ भू:भुव:स्व:" की वृद्धि कर देता है । कहते हैं कि यह मंत्र क़ुरआन की सूरह फ़ातिहा के भावार्थ से मिलता-जुलता है । जनाब साबिर अबोहरी उर्दू पत्रिका "हमारी ज़ुबान" (8 मई 1994, पृ॰ 6) में कुछ ऐसा ही ख़्याल ज़ाहिर करते हैं । डॉ॰ मुहम्मद हनीफ़ शास्त्री "महामंत्र गायत्री एवं सूरह फ़ातिहा" विषय पर रचे हुए शोध-प्रबंध में इस मंत्र को सूरह फ़ातिहा के निकट भावार्थ वाला बताया है । यह भी कहा जाता है कि अल्लामा इक़बाल की "आफ़ताब" शीर्षक नज़्म गायत्री मंत्र के भावार्थ से मेल खाती है । पाठकों की जानकारी के लिए यह नज़्म अद्योलिखित प्रस्तुत है–

ऐ आफ़ताब रूह ख़ाने जहां है तू,
शीराज़ा बंद दफ़्तरे क़ौनोमकां है तू ।
बाइस है तू जूदो अदम की नमूद का,
है सब्ज़ तेरे दम से चमन हस्तोबूंद का।
क़ायम यह उन्सुरो का तमाशा तुझी से है,
हर शै में ज़िन्दगी का तक़ाज़ा तुझी से है ।
हर शै को तेरी जलवागरी से सबात है,
तेरा यह सोज़ोसाज़ सरापा हयात है ।
वो आफ़ताब जिससे ज़माने में नूर है,
दिल है, ख़िरद है, रूहे रवा है, शऊर है ।
ऐ आफ़ताब ! हमको ज़िया-ए-शऊर दे,

एहतिशाम ख़ान मोबाइल : 09425842976

पब्लिक ट्रैवेल्स

सिवनी से छिंदवाड़ा प्रात:	7:55
छिंदवाड़ा से बालाघाट प्रात:	10:30
बालाघाट से सिवनी सायं	6:00
सिवनी से नैनपुर सायं	5:40
नैनपुर से सिवनी दिन	12:20

प्रतिदिन

नोट : शादी व पार्टियों के लिए भी बस उपलब्ध है संपर्क करें–

एहतिशाम ख़ान, बस स्टैंड, सिवनी (मध्य प्रदेश)

चश्मे ख़िरद को अपनी तजल्ली से नूर दे ।
है महफ़िले वजूद का सामां तराज़ तू,
यज़दाने साकिनाने नेशेबोफ़राज़ ।
तेरा कमाने हस्ती हर जानदार में,
तेरी नमूद सिलसिला-ए-कोहसार में ।
हर चीज़ की हयात का परवरदिगार तू,
जाइदगाने नूर का है ताजदार तू ।
न इब्दिता कोई, न कोई इंतिहा तेरी,
आज़ाद क़ैदे अव्वलो आख़िर ज़िया तेरी ।

अर्थात, ऐ सविता (परमसत्ता) तू ही जीवन के स्पंदन का मूल है । तू ही इस संसार को संचालित करने वाला है, लोक-परलोक का विधाता, पंच-तत्वों में प्राण डालने वाला है । प्रत्येक वस्तु तेरे प्रकाश से प्रकाशित और गंतिवान है । तू ही वह दैदीप्यमान सूर्य है, जिसका प्रकाश सब में व्याप्त है चाहे बुद्धि हो या हृदय हो । ऐ सूर्य ! हमको सद्बुद्धि और अपने प्रकाश (नूर) का आभा का ज्ञान प्रदान कर । तू ही सृष्टि के मूल का कारण है और यहां रहने वालों की स्थिति का पूर्ण ज्ञाता भी । पर्वत में, हर जानदार में, सृष्टि के कण-कण में तू ही व्याप्त है । तू सबका पालनहार है । सब तेरे ही प्रकाश से प्रकाशित हैं । तू आदि-अंत के बंधन से परे, सदा से प्रकाशित है ।

सत्य-धर्म अनेक नहीं

निस्सन्देह सत्य धर्म एक है, जिसे संसार का पालनहार मानव-कल्याण और उसके मार्गदर्शन के लिए विभिन्न समयों और विभिन्न देशों व भू-भागों में अपने पैग़म्बरों एवं नबियों द्वारा भेजता रहा और जिसे अंतिम व पूर्ण रूप में, तमाम इन्सानों को सन्मार्ग दिखाने के लिए अपने अंतिम नबी हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) द्वारा अवतरित किया । यही धर्म अर्थात इस्लाम अब संसार में एक ही प्रामाणित और अल्लाह का मान्यता प्राप्त धर्म है । ऐसे में अन्य धर्मों की शिक्षाओं में सत्यता और साम्यता का पाया जाना कोई अचरज एवं असंभव बात नहीं, लेकिन यह भी एक सच्चाई है, जिसका इन्कार नहीं किया जा सकता । वह यह कि नबियों की शिक्षाओं में विकृति आने के कारण ही अंतिम रूप से हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के ज़रिये सत्य-धर्म को पुन: स्थापित किया गया । इस प्रकार इस्लाम धर्म की शिक्षाएं ही सत्य शिक्षाओं को जानने-समझने की कसौटी हैं । इनसे हटकर हम इस बात का फ़ैसला नहीं कर सकते कि कौन सही है और कौन ग़लत ? क्या यथार्थ है और क्या मिलावट ?

स्पष्ट है कि सत्य-धर्म इन्सान का अभीष्ट है । इस पर चलकर ही वह ईश-प्रसन्नता और परलोक-कल्याण प्राप्त कर सकता है । जमाअत इस्लामी हिन्द सत्य-मार्ग की ओर सारे इन्सानों को किसी भेदभाव के बिना बुलाने और उनकी ज़िन्दगियों का आचार-विचार में शांतिमय एवं रचनात्मक तरीक़ों के द्वारा सुधार लाने के लिए प्रयासरत संगठन है । इसके पूर्व अध्यक्ष मौलाना मुहम्मद सिराजुल हसन का 17 सितम्बर 1997 को हरिद्वार स्थित "शांतिकुंज" जाना हुआ, जो वर्तमान में गायत्री समाज का मुख्यालय है । मौलाना के साथ एक शिष्टमंडल

with
Hostel For Boys And Girls
(Separate)
An Institution Based On Ideal Descipline
And
High Moral Values

اقراء پبلک اسکول

IQRA PUBLIC SCHOOL
ENGLISH MEDIUM
C.B.S.E. Curriculum (Nursery to 10th Std.)

Address School : Mathia Zirat, Motihari , Mob : 9430255446
Hostel : **Bhawani Pur Zirat, Motihari ,** Mob : 9835457853

भी गया था । हम लोग कड़ाके की ठंड में "शांतिकुंज" पहुंचे, तो आशा के अनुरूप गायत्री समाज को बनाने-संवारने में लगे महानुभावों ने अपने उदार एवं उदात्त व्यक्तित्व का परिचय देकर ठंड के एहसास को दरकिनार करने के लिए विवश कर दिया ।

बातचीत में गायत्री समाज की रूपरेखा और स्पष्ट हुई । इसके प्रमुख विचारक पं॰ वीरेश्वर उपाध्याय ने गायत्री समाज का परिचय कराया और हमारे प्रश्नों के उत्तर भी दिये । हमारी ओर से पेश की गयी इस्लामी शिक्षाओं को उन्होंने और गायत्री समाज के दूसरे महानुभावों ने सुना । उपाध्याय जी यह मानते हैं कि ईश्वर की शिक्षाएं एक हैं, लेकिन उन्हें बरतने के मार्ग अलग-अलग हैं । वे पैग़म्बरी की धारणा को भी स्वीकार करते हैं एवं ईमान को इन्सान की सबसे क़ीमती चीज़ बताते हैं । पर धर्म के स्थान पर आध्यात्मिकता पर अधिक ज़ोर देते हैं । बीच-बीच में इस्लाम की शिक्षाओं का भी उल्लेख करते हैं । अपनी बातों की पुष्टि में कुछ उदाहरण भी देते हैं, इस बात की परवाह किये बग़ैर कि मिसालें बेमेल हो जाती हैं । लेकिन सद्भाव और सहिष्णुता का प्राचीन हिन्दू दर्शन उनकी बातचीत एवं शांतिकुंज परिसर में अवश्य दिखायमान होता है । इस मौक़े पर मौलाना मुहम्मद सिराजुल हसन ने अपने उद्बोधन में साम्प्रदायिक सद्भाव क़ायम करने, शांतिपूर्ण और न्यायपरक समाज के निर्माण एवं उस भय (ईशभय को छोड़कर), भूख और भ्रष्टाचार से मुक्ति के लिए प्रयास करने पर बल दिया ।

पुस्तकें क्या कहती हैं ?

किसी भी विचारधारा का सही परिचय उसके साहित्य से प्राप्त किया जा सकता है । जहां तक गायत्री समाज का संबंध है, तो यह बात स्पष्ट रूप से कही जा सकती है कि वह एक सुधार आन्दोलन है, इस प्रकार का कि देखने में तो मालूम होता है कि वहां सभी धर्मों के प्रति सहिष्णु एवं तितिक्षा-भाव है, जैसी की प्राचीन हिन्दू संस्कृति की ख़ास विशेषता है, लेकिन उसके साहित्य बताते हैं कि दूसरे धर्मों के अनुयायियों के प्रति उसका एक विशेष क़िस्म का आग्रही भाव है, जिसकी बहरहाल सराहना नहीं की जा सकती । युग निर्माण योजना द्वारा प्रकाशित "मुस्लिम धर्मानुयायियों का अनुकरणीय चिंतन व चरित्र" शीर्षक पुस्तिका में "दो शब्द" लिखते हुए योजना के व्यवस्थापक भी लीलापत शर्मा कहते हैं : "अब आवश्यकता है कि मुसलमान इंडोनेशिया के मुसलमानों का अनुकरण करते हुए इस देश की मुख्य धारा में बहना आरंभ करें ।"

इस वाक्य पर कुछ कहने से पहले मैं यह साफ़ कर दूं कि पुस्तिका के शीर्षक में "मुस्लिम धर्मानुयायियों" भी आया है, जबकि दुनिया में सभी जानते हैं कि इस्लाम धर्म है, मुस्लिम धर्म नहीं । दूसरी बात यह कि इस्लाम धर्म ही सत्य-धर्म है । इसकी शिक्षाएं ही मानव के लिए कल्याणकारी और पारलौकिक सफलता प्रदान करने वाली हैं । फिर यह कहना कि मुसलमान इस्लामी शिक्षाओं से परे किसी देशवासियों का अनुकरण करें, कितनी अविवेकपूर्ण और दुराग्रहपूर्ण बात है । यह कहना नितांत उचित होगा कि मुसलमान अपने जीवन में इस्लामी शिक्षाओं को समुचित रूप अमल में लाएं, ताकि सत्य शिक्षाओं का ठीक से प्रचार हो सके और उनकी भी लौकिक एवं पारलौकिक सफलता सुनिश्चित हो सके । यही देश की असली मुख्यधारा है, क्योंकि यह देश किसी एक धर्म, संस्कृति और सभ्यता वाला देश नहीं है ।

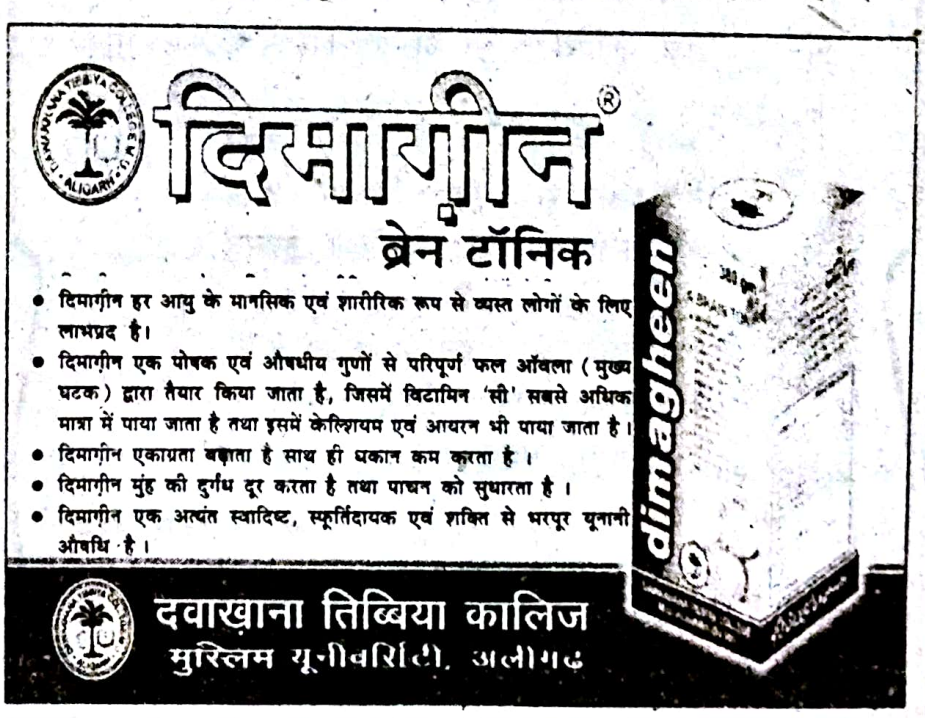

नग़मा-ए-कारवां

अम्नो इन्साफ़ का कारवां है रवां
उन्सो उलफ़त की लिखने नयी दास्तां

❦

जुल्म से इस तरह भर गयी है ज़मीं
चैनो राहत नहीं आदमी को कहीं
ज़िन्दगी बन गयी दर्द की दास्तां

❦

शर है, तख़रीब है, मौजे आफ़ात है
एक घुटन की फ़ज़ा है सियह रात है
चार-सू है सितम, क्या यहां क्या वहां

❦

ख़ूं है बहता कहीं, जिस्म जलते कहीं
बस्तियों से हैं शोले उबलते कहीं
उठ रहा हर तरफ़ शोरे आहो फ़ुग़ां

❦

सोचिए गुलसितां की ये सूरत है क्या
सोचिए वक़्त की अब ज़रूरत है क्या
सोचिए हो, ख़ुदा किस तरह मेहरबां

❦

अब तअस्सुब न तफ़रीक़ बाक़ी रहे
अब न जब्रो तशद्दुद की आंधी चले
नज़्रे आतिश न घर हो, न कोई दुकां

❦

अम्नो इन्साफ़ से है बहारे वतन
है इसी से सुकूनो क़रारे वतन
हो दिलों पर यही क़ाबिज़ो हुक्मरां

❦

जब तलक अम्नो इन्साफ़ क़ाइम न हो
जब तलक अम्नो इन्साफ़ दाइम न हो
तब तलक महवे गर्दिश रहे कारवां

● इन्तिज़ार नईम
2525, बारादरी, बल्लीमारान
दिल्ली-110006

कविता

धन की परिभाषा

दुनिया के अर्थशास्त्रियो !
आओ,
तुम्हें बतला दूं
धन की परिभाषा,
जिसमें लोभ है,
न पिपासा ।
तो सुनो,
"धन है वह वस्तु
जो दूसरों के काम आये ।"
सोचो,
गुनो,
और पा जाओ
राज़ ख़ुशहाली का !
अब खोल दो
अपनी तिजोरियां,
मुक्त हो जाओ
ब्याज के मकड़जाल से,
बहने दो पानी की तरह मुद्रा,
परिश्रम करो,
प्रकाश में तीर छोड़ो,
और मन पर थोड़ा
संयम रखो,
निश्चय ही तुम बदल
दोगे दुनिया !

● मनाज़िर हक़

नज़रिया

अंधविश्वास और योग के झांसे

● प्रभु सोहाया

देश का सबसे बड़ा दुश्मन कौन है–इस प्रश्न पर अक्सर हमारा मीडिया चिंतन-मनन करता रहता है । इस बहस में भाग लेने वालों में से कोई चीन, कोई पाकिस्तान तो कोई देश में व्याप्त भ्रष्टाचार में इसकी आहट पाता है । पर समाज में गहराई से फैले अज्ञान और अंध-विश्वास की ओर शायद ही किसी का ध्यान जाता है, जिसका लाभ धर्मों के ठेकेदार, तांत्रिक-ज्योतिष, झोलाछाप डॉक्टर, वैद्य-हकीम आदि खुलकर उठा रहे हैं ।

मीडिया में विज्ञापनों के माध्यम से असाध्य रोगों के इलाज का दावा करने वाले हकीम, तांत्रिक-ज्योतिष और बाबा लोग भोली-भाली जनता को खुलकर लूट रहे हैं । देसी दवा उद्योग बिना किसी सरकारी रोक-टोक और जांच के संखिया और सीसा जैसे घातक ज़हर लोगों के शरीर में भरता जा रहा है जिसकी परिणति कैंसर और गुर्दे के ख़राब होने के बढ़ते प्रकरणों के रूप में देखी जा रही है । अमेरिका और अन्य विकसित देशों के खाद्य और दवा प्रशासन ने भारत में निर्मित कई देसी औषधियों को जांच के बाद प्रतिबंधित कर दिया है । पर भारत सरकार कुंभकर्णी निद्रा में सोयी है ।

इसी प्रकार टी०वी० चैनलों पर छाये योग गुरुओं के झांसे में जनसाधारण यह विश्वास क़र बैठा है कि विभिन्न उदर रोग, मधुमेह, हृदय रोग, एड्स, कैंसर आदि की चिकित्सा योग में संभव है । जबकि योग एक बेहतर व्यायाम के रूप में शरीर में रोगों के बैठने से पूर्व उनसे लड़ने की प्रतिरोधक क्षमता विकसित करता है । पर चिकित्सा करने में लगभग असमर्थ ही साबित हुआ है । मसलन, शरीर में रोग की जड़ें जम जाने के बाद विज्ञान आधारित आधुनिक चिकित्सा प्रणाली से मुंह मोड़ कर योग की शरण में जाना बुद्धिमानी नहीं है । योग दर्शन के प्रतिपादक ऋषि पंतजली के अनुसार योग में ध्यान का पक्ष सबसे सबल है । लेकिन ध्यान पर अधिक ध्यान देने के बजाय तथाकथित योग-गुरु आधुनिक चिकित्सा प्रणाली को गरियाने में अपनी सारी ऊर्जा ख़र्च कर रहे हैं ।

ऐसे ही एक योग-गुरु की मौत भगंदर से होना और दूसरे का अपेंडिसाइटिस का ऑपरेशन चुपके से कराना मीडिया की सुर्ख़ियां बन चुका है। ऐसे में उम्मीद की किरण आधुनिक चिकित्सा-पद्धति में ही झलकती है । शेष लगभग मौत से गले मिलने तक मूर्ख बनाने की सच्चाई है । इस संबंध में मीडिया की भूमिका भी विचारणीय है ।

ऐसे ही एक योग-गुरु की मौत भगंदर से होना और दूसरे का अपेंडिसाइटिस का ऑपरेशन चुपके से कराना मीडिया की सुर्ख़ियां बन चुका है । ऐसे में उम्मीद की किरण आधुनिक चिकित्सा-पद्धति में ही झलकती है । शेष लगभग मौत से गले मिलने तक मूर्ख बनाने की सच्चाई है । इस संबंध में मीडिया की भूमिका भी विचारणीय है ।

एक हिन्दी दैनिक देश में सर्वाधिक बिक्री का दावा करता है, पर इसमें छपने वाली सामग्री के आधार पर इसे प्रांतीय स्तर का भी नहीं कहा जा सकता । कई ज़िलों-संभागों से प्रकाशित यह अख़बार नगर विशेष की ख़बरों तक सीमित, चाटुकारिता से परिपूर्ण और अंध-

विश्वास को और मज़बूत करने वाले घटिया विज्ञापनों से भरा होता है । संपूर्ण चिकित्सा जगत भ्रामक विज्ञापनों का घोर विरोधी है । विशेषज्ञों के अनुसार ऐसे विज्ञापन भोली-भाली जनता को मनोरोगी करने और लूटने का भयानक षड्यंत्र हैं ।

इसी प्रकार काल सर्प, मंगल और पितृदोष निवारण कराने वाले विज्ञापनों के माध्यम से भी समाज को अपूरणीय क्षति पहुंचाई जा रही है । किसी परिवार या व्यक्ति के बुरे समय के लिए उनके दिवंगत मां-बाप को दोषी ठहराना कहां तक तर्कसंगत है. ? जिन मां-बाप ने जीवन भर संघर्ष कर अपनी संतान के पालन-पोषण और शिक्षा-दीक्षा का कर्तव्य पालन किया, जीवन भर धर्म के मार्ग पर चले, परिवार और समाज के प्रति समर्पित जीवन जिया, उन्हें ज्योतिषियों के द्वारा प्रेत योनी को प्राप्त बताकर संतानों को बाधित करने का दोषी क़रार दिया जा रहा है ।

सच तो यह है कि यह ज्योतिष-पंडित समुदाय दिवंगत मां-बाप के प्रति उनकी संतानों के मन में नफ़रत का ज़हर फैलाने का गुनाह कर रहा है । समाज-घातक ज्योतिष-फलित, तंत्र-मंत्र आदि के माध्यम से सौभाग्य प्राप्त करने, रोगों के निदान-उपचार की राह तलाशने की जिद्दोजेहद में हमारे राजनेता भी पीछे नहीं हैं, बल्कि कुछ तो स्कूली पाठ्यक्रमों में ज्योतिष-फलित, तंत्र-मंत्र रूपी अंधविश्वास को ठूंसने का प्रयास करते देखे गये हैं । ऐसे लोग समाज का क्या भला करेंगे जो मंत्री पद छिनने के बाद पूर्णकालिक तांत्रिक बन बैठे हैं ।

ग़ौरतलब है कि अमेरिका में विज्ञान की एक पाठ्य-पुस्तक में मानव शरीर को 'इंटेलिजेंट डिजाइन' लिखे जाने भर से राष्ट्रीय स्तर पर व्यापक बहस शुरू हो गयी थी । प्रगतिशील विचारधारा के लोगों की दलील थी कि पाठ्य-पुस्तकों में धर्म को घुसेड़ा जा रहा है, यह जागरूकता की निशानी नहीं है । हमारे यहां तो राजनेता तक कहीं खुले में तो कहीं आड़ में धर्म और अंधविश्वास की रोटियां सेंक रहे हैं, जिससे संपूर्ण समाज और देश एक विस्फोटक स्थिति में पहुंच रहा है । ऐसे में ज़रूरी है कि सूचना के अधिकार की तरह ही अंधविश्वास निवारण नियम बने जिसके अंतर्गत अंधविश्वास को बढ़ावा देने वाले लोगों को त्वरित अदालतों के ज़रिये दंडित किया जा सके । जब तक विज्ञान आधारित शिक्षा का प्रकाश देश के कोने-कोने में नहीं फैल जाता, इस प्रकार के कड़े नियम देश के दुश्मन नम्बर एक की जड़ों पर सीधे चोट के लिए आवश्यक हैं ।

इल्म हासिल करना हर मुसलमान पर फ़र्ज़ है–हदीस

मदर हलीमा वेलफेयर सोसाइटी(रजि०)

के ज़ेरे एहतिमाम

मदर हलीमा स्कूल इंगलिश मीडियम

डिफेंस कॉलोनी, बेहट रोड, सहारनपुर ● फ़ोन : 9897653514

और

सन फलावर एकेडमी हिन्दी मीडियम

फ़ोन : 9997923152

अब्दुल हसीब
मैनेजर

इस्लामी तहरीक को मज़बूत करने के लिए
1996 ई० में सोसाइटी की बुनियाद डाली गयी ।
इसी सोसाइटी के ज़ेरे एहतिमाम ये दो स्कूल चलाए जा रहे हैं ताकि उम्मते मुस्लिमा के
नवनिहालों को दीनी और अस्री दोनों ही तरह की तालीम दी जा सके ।

वसी अहमद
पी.आर.ओ.

विचारणीय

योगेश्वर श्री कृष्ण न तो ईश्वर थे, न ही ईश्वर के अवतार थे

■ गंगाशरण आर्य

'अवतार' शब्द से मूर्तिपूजक यह अर्थ लेते हैं कि जगत के रचयिता परमपिता परमेश्वर अपने भक्तों के लिए निमित्त धर्म रक्षा हेतु मनुष्य रूप में जन्म लेकर दुष्टों का वध करते हैं । मूर्तिपूजा में फंसने-फंसाने वाले अंधश्रद्धालुजनों के पास अपनी मान्यता का औचित्य मात्र पुराणों जैसी पुस्तकों के सिवाय और कुछ नहीं ठहराया जाता है । इन पौराणिक पुस्तकों में मच्छ, कच्छ, वराह, नरसिंह, वामन, परशुराम, राम, बलराम, कृष्ण आदि व्यक्ति एवं मच्छ, शूकरादि जानवरों को ईश्वर का अवतार बताया जाता है तथा पुराणों में इन अवतारों के जन्म-मृत्यु और जीवन के बारे में अनैतिक एवं सृष्टि नियम के विरुद्ध बातों का वर्णन इन ढंग से किया जाता है कि इन्हें मानवेतर (पशु-पक्षी आदि की) विशेषताओं से ओत-प्रोत करके सर्वशक्तिमान का जामा पहना रखा है । अवतारी व्यक्ति जो चाहे कर सकता है, ऐसी अवैदिक धारणा से युक्त होकर परमेश्वर को अवतार लेने वाला बताया करते हैं । जब ईश्वर ही मां के गर्भ में आया तो प्रश्न खड़ा होता है कि नौ मास तक सृष्टि की देख-रेख कौन कर रहा था ? कौन था इसका व्यवस्थापक ? विचार कीजिये । श्रीकृष्ण जी से पहले भी तो संसार था, उस समय लोग किस ईश्वर को मानते थे ? उसके माता-पिता किस ईश्वर की उपासना करते थे ? क्या उस समय सूर्य, चन्द्रमा, इत्यादि नहीं निकलते थे ? विचार करने की बात है ।

1. ईश्वर अवतार नहीं लेता–अवतार शब्द अवतरित होने अर्थात उतरने के अर्थ को लिए हुए हैं । भला सर्वव्यापक, निराकार ईश्वर जो ऊपर-नीचे, दायें-बायें चारों ओर सब जगह व्याप्त है, उसका एक स्थान से दूसरे स्थान पर आकार लेकर अवतरित होना या उतरना क्या संभव हो सकता है ? कदापि नहीं । इस विषय में जानने के लिए वेद में 'तदेंजति तद्दूरेतद्वन्तिके...यजुर्वेद 4-5वां मंत्र पढ़ें ।

1. उत्पत्ति–सम्पूर्ण प्राणी जगत् एवं वनस्पति जगत तथा सूर्य-चन्द्रमादि सृष्टि को बनाना ।

2. स्थिति–निश्चित आयु पर्यन्त इन सभी को बनाए रखना ।

3. प्रलय–जीर्ण होने पर नवसृष्टि हेतु परिवर्तन करना ।

4. फल–सब जीवों को उनके कर्मानुसार पाप-पुण्य रूप कर्मों का बुरा और भला फल देना ।

ईश्वर कैसा है ? यह तो सभी मानते हैं कि ईश्वर ने संसार बनाया है । सूर्य चांद से लेकर छोटी से छोटी चीज़ को भी ईश्वर बनाता, स्थित रखता और लय करता है । रचना करने वाला और रची गयी वस्तु सदैव साथ ही रहते हैं । अतः ईश्वर सम्पूर्ण संसार को बनाने वाला होने के कारण सर्वव्यापक व आकृति रहित है ।

3. अवतारवाद का प्रयोजन मिथ्या है–अयोध्या में राम मन्दिर निर्माण हेतु हज़ारों-लाखों बलिदान हो गये तब राम ने अवतार लेकर उनकी रक्षा क्यों नहीं की ? आज दिन-प्रतिदिन दृष्टों, अन्यायियों, अत्याचारियों की संख्या बढ़ती जा रही है, ईश्वर उन्हें मारने के लिए अवतार क्यों नहीं लेता । लोगों की आम धारणा है कि जब धरती पर पाप बढ़ जाते हैं, अर्थात जब पाप का घड़ा भर जाता है तब ईश्वर शरीर धारण कर अवतरित होता है और दुष्टों का विनाश करता है । इस धारणा से तो पाप को ही प्रोत्साहन मिलेगा क्योंकि पाप करेंगे तभी ईश्वर अवतार लेगा । कैसी बेसर-पैर की कहानी लोगों ने घड़ी हुई है । बड़े शर्म की बात है । पौराणिकों के अनुसार–

सतयुग में चार अवतार : मच्छ, कच्छ, वराह, नरसिंह ।

त्रेता में तीन अवतार : वामन,

परशुराम, राम ।

द्वापर में दो अवतार : बलराम और कृष्ण ।

कलियुग में एक अवतार : कल्कि अवतार (अज्ञात)।

अब प्रश्न यह उठता है कि जब सतयुग में धर्म के चारों चरण होते हैं तो अधर्म का नामोनिशान भी नहीं होता तो ये अवतार बेकार में क्यों कूदते रहते हैं । जब अन्य युग में धर्म की क्रमशः हानि होने लगती है तो अधर्म बढ़ता जाता है, तब इन अवतारों की संख्या क्यों घटने लगती है ? कलियुग में अधर्म ही अधर्म रहता है, थोड़ा-सा धर्म बचा रहता है तब्र एक ही क्यों ? वह भी अभी तक नहीं हुआ ? और इसी झूठी धारणा को आगे रखकर अनेक लोग गुरुडमवाद के चक्कर में स्वयं को कल्कि अवतार या श्रीकृष्ण का अवतार घोषित करते हुए पाखंड मचा रहे हैं ? बड़े आश्चर्य की बात है ।

4. यदि ईश्वर अवतार लेता है तो उस पर पक्षपात का दोष लगता है । एक नहीं 24-24 अवतार हुए ईश्वर के । किन्तु सारे के सारे भारत में ही हुए तो क्या हम यह मानें कि सबसे अधिक पापी भारत में ही हुए या फिर यह ईश्वर का पक्षपात था । अवतारवादी विचार कर उत्तर दें ।

5. बीच के ज़माने को अंधकार-युग या वाम मार्ग काल कहना उचित होगा, जब हम इन सब सच्चाइयों को भूल गये थे, सत्य सनातन वैदिक धर्म लुप्त हो गया था । हमारे पवित्र धर्मग्रंथों और रामायण, महाभारत आदि ऐतिहासिक ग्रंथों में भी पापियों ने, मक्कारों व दग़ाबाज़ों ने मिलावट कर दी थी । देव परस्त्रीगामी थे, श्रीकृष्ण जैसे महापुरुष चोर और व्यभिचारी थे, इस प्रकार के दोष मढ़ दिये गये । बिल्कुल नयी मनगढ़ंत पुस्तकों का नाम पुराण रख दिया । प्रसिद्ध कर दिया कि शिवजी भांग पीते थे, देवी शराब पीती थी और भैंसा, बकरा, सूअर खाती थी । देव-देवियों की ओट में खुद तरह-तरह के पाप करने लगे । पापों के फल से छूटने और मुक्ति पाने के सस्ते से सस्ते नुस्ख़े निकाल दिये । छुआछूत के नाम पर अपने ही भाइयों को धक्के दिये गये, लाखों नहीं करोड़ों दुध मुंही बच्चियों को विधवा क़रार दिया गया । जन्मगत जाति-पाति के नाम पर अनेक तरह के भेदभाव पैदा किये गये । हम अपना नाम और स्वरूप तक भूल गये । अनेक ईश्वरों की कल्पना की गयी और ईश्वर पूजा का स्थान जड़मूर्ति ने ले लिया महापुरुषों को ईश्वर बताकर सर्वनाश का मार्ग खोल लिया गया । यह संक्षेप में हमारे पतन का इतिहास है कि महान भारत कैसे इतना ग़रीब और गुलाम बना ? सब देशों का सरताज कैसे सबका मोहताज बना ?

गीता में स्वयं योगेश्वर श्रीकृष्ण ने अर्जुन को उपदेश देते हुए परमात्मा के अस्तित्व को दर्शाया है । परमात्मा के अस्तित्व को मानने वाला बताइये स्वयं कैसे परमात्मा हो सकता है ? कदापि नहीं हो सकता । आइए कुछ गीता के श्लोकों के माध्यम से वास्तविकता का भान करें कि योगेश्वर श्री कृष्ण ईश्वर या ईश्वर का अवतार न होकर एक महान पुरुष थे ।

गीता का निम्नलिखित यह अन्तिम श्लोक सारी गीता का निष्कर्ष है । यह श्लोक कृष्ण को ईश्वर का अवतार न मानकर एक महान पुरुष ही सिद्ध करता है ।

"तत्र योगेश्वरः कृष्णो, यत्र पार्थो धनुर्धरः ।

तत्र श्री विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम ।।

18-78 इस श्लोक को संजय, धृतराष्ट्र से कहता है, हे राजन ! जहां योगेश्वर श्रीकृष्ण है और गाण्डीव धनुषधारी अर्जुन है, वहीं पर श्री, विजय, विभूति और अचल नीति है । ऐसा मेरा मत है ।

(साभार : आत्मशुद्धि-पथ, जुलाई 2008)

'कान्ति' साप्ताहिक की एक और दस्तावेज़ी पेशकश

समाज सेवा और भारतीय मुसलमान

शीघ्र प्रकाशित हो रहा है

अपनी रचनाएं, विज्ञापन, मशविरे आदि भेजने का कष्ट करें

सवाल-जवाब

हज्रे असवद

■ एक व्यक्ति ने हज्रे असवद के संबंध में सारी हदीसों को मानने से इन्कार कर दिया है । वे उसे स्पर्श करने या चूमने को एकेश्वरवाद की अवधारणा के विरुद्ध समझते हैं । उनका कहना है कि इसमें पत्थरों को पूजने जैसी बात है । इस संबंध में आपकी क्या राय है ?

जवाब : आज के समय में हमारे कुछ बुद्धिजीवियों का निम्न स्तरीय अध्ययन भी एक समस्या है । ज्ञान और अनुभव में परिपक्व होने से पूर्व और विषय के किसी बड़े ज्ञाता से संपर्क किये बिना फ़त्वेबाज़ी इसी निम्न स्तरीय अध्ययन की देन है । यह बात सच है कि दीन के विषय में संशय पैदा करने वाले या तो अज्ञान लोग होते हैं, या ऐसे ज्ञानी, जिनके मस्तिष्क में कोई विशेष बात बैठ जाती है । हज्रे असवद को चूमना या उस जैसे दूसरे मामलों में संशय पैदा करना खुली गुमराही है और हदीसों से अज्ञानता है ।

बुख़ारी शरीफ़ की हदीस है कि इब्ने उमर से हज्रे असवद को चूमने के विषय में पूछा गया तो उन्होंने उत्तर दिया कि मैंने अल्लाह के रसूल (सल्ल०) को इसे छूते और चूमते हुए देखा है ।

बुख़ारी और मुस्लिम की हदीस है कि हज़रत उमर (रज़ि०) हज्रे असवद को चूमते थे और कहते थे कि मैं जानता हूं कि तू मात्र एक पत्थर है । किसी को लाभ या हानि पहुंचाना तेरे बस में नहीं है, अगर मैं अल्लाह के रसूल (सल्ल०) को तुझे चूमते हुए न देखता तो मैं ऐसा नहीं करता ।

इमाम तबरी कहते हैं कि हज़रत उमर (रज़ि०) ने ऐसा इसलिए कहा था कि लोग अभी-अभी अज्ञानता और पत्थर को पूजने के दौर से निकले थे । हज़रत उमर (रज़ि०) ने यह कहकर लोगों पर स्पष्ट कर दिया कि हज्रे असवद को चूमना अल्लाह के रसूल के अनुकरण में है, पत्थरों के आदर-सम्मान में नहीं । हज्रे असवद को चूमना या उसका स्पर्श करना पत्थरों को पूजने जैसा कैसे हो सकता है; जबकि हज के क्रम में हम जो कुछ करते हैं और जहां-जहां जाते हैं, वहां से हज़रत इबराहीम (अलैहि०) का नाम और उनकी यादें जुड़ी हुई हैं और इबराहीम (अलैहि०) वही हैं जिन्होंने एक बड़े डंडे से मूर्तिघर में रखी पत्थर की सभी मूर्तियों को तोड़ डाला था ।

■ मिस्र में तन्ता शहर में एक ऐसा पत्थर है, जिस पर लोगों के कहने के अनुसार अल्लाह के रसूल (सल्ल०) के पैड़ों के निशान हैं । लोग उस पत्थर को बड़ा पवित्र समझते हैं, उसे छूते हैं, चूमते हैं और मन्नतें मांगते हैं । लोगों का यह काम कैसा है ?

जवाब : क़ौमों को उनकी अति ने बर्बाद किया है । कुछ मुसलमान भी अति का शिकार हैं, उनकी आस्था और उनका विश्वास इतना कमज़ोर हो गया है कि वे बकवास पर भी ईमान ले आते हैं । पत्थरों और धरोहरों को पवित्र समझना, उनके साथ अपनी आस्था को जोड़ना और उनसे मन्नतें मांगना ऐसी बातें हैं, जिसकी इस्लाम ने हमेशा ही जड़ काटी है ।

इस्लाम ने हर प्रकार के पत्थरों से मन्नत मांगने को बातिल (शैतान का मार्ग) ठहराया है । केवल हज्रे असवद को छूने या चूमने की अनुमति है । मिस्र के जिस पत्थर की बात आपने की है, मान लें अगर उस पर नबी (सल्ल०) के क़दमों के निशान हैं भी तो क्या, आपने तो हमेशा ऐसे कामों से रोका ही है, यहां तक कि अपनी क़ब्र के साथ भी ऐसा करने से मना किया है । आप (सल्ल०) का हुक्म है–

"मेरी क़ब्र को तुम जश्न की जगह मत बनाओ ।"

एक दूसरी हदीस है–

"मेरी क़ब्र को बुत के जैसा मत बनाओ, जिसकी पूजा की जाती है ।"

(फ़तावा यूसुफ़ अलकरज़ावी भाग-1)

निश्चय ही कठिनाई के साथ आसानी भी है, निस्सन्देह कठिनाई के साथ आसानी भी है । (क़ुरआन, 94:5-6)

❖❖❖❖❖❖

दुर्भाग्य के पीछे सौभाग्य आता है । (अंग्रेज़ी उद्धरण)

हज़रत इबराहीम (अलैहि॰) की क़ुरबानी

■ **मौलाना सऊद आलम क़ासिमी**

ईदुल-अज़हा एक ऐसी इबादत है जिसमें नमाज़ और क़ुरबानी दोनों का योग है । नमाज़ अपने अन्दर विनम्रता, तन्मयता और बन्दगी की शान रखती है, तो क़ुरबानी, आज्ञाकारिता और जान को न्योछावर करने का सन्देश रखती है । नमाज़ अल्लाह के आगे सर झुका देने का प्रदर्शन है तो क़ुरबानी उसके हुक्म पर सर कटा देने का ऐलान है । ईदुल-अज़हा अपने अन्दर एक रौशन ऐतिहासिक घटना की याद ताज़ा करती है जिससे दिलों में इश्क़ की भावनाएं ज़ोर मारने लगती हैं । वह घटना हज़रत इबराहीम ख़लीलुल्लाह और उनके बेटे हज़रत इसमाईल ज़बीहुल्लाह जैसे महान और जलीलुलक़द्र नबियों की जीवन कहानी का एक अंग है, जो त्याग, क़ुरबानी तथा अल्लाह के प्रति आज्ञाकारिता की अद्‌भुत मिसाल है । मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूछा गया कि 'यह क़ुरबानी क्या है ?' तो आपने फ़रमाया, 'तुम्हारे बाप इबराहीम की सुन्नत है ।'

नबियों में हज़रत आदम अलैहिस्सलाम से लेकर ख़ातिमुल मुरसलीन हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) तक, सारे महान नबियों का एक सिलसिला है, जिसमें हज़रत नूह (अलैहि॰) भी हैं और इदरीस (अलैहि॰) भी और हज़रात मूसा व ईसा (अलैहि॰) भी हैं और हज़रत ज़करिया तथा हज़रत यह्या (अलैहि॰) भी हैं और हज़रत दाऊद व हज़रत सुलैमान (अलैहि॰) भी हैं । इन तमाम नबियों में केवल हज़रत इबराहीम (अलैहि॰) की ही यह विशेषता है कि उनकी सुन्नत को सदैव के लिए और सारे इन्सानों के लिए नमूना और मार्गदर्शक बनाकर रखा गया है । इसके अनुकरण को फ़र्ज़ किया गया है । अक़्ल पूछती है कि इसकी क्या हिकमत है और क्या उद्देश्य है ?

बात यह है कि हज़रत इबराहीम (अलैहि॰) का पूरा जीवन परीक्षा और आज़माइश में गुज़रा । ईसार, क़ुरबानी और त्याग उनके पवित्र जीवन की शैली और पहचान है । यूं कहिये कि उनकी ज़िन्दगी की हर घटना मुसलमानों के लिए नमूना और इबरत (शिक्षा) है । इसीलिए क़ुरआन करीम में मुसलमानों को मिल्लते इबराहीमी यानी 'इबराहीम की मिल्लत' कहा गया है और बार-बार उनके त्याग और साहस से भरे जीवन की रोमांचकारी घटनाओं का उल्लेख किया गया है । आपकी यह जीवन-गाथा ईमान को शक्ति देने वाली है ।



ख़ासतौर से क़ुरआन में सूरह बक़रा, अनआम, अन-नह्ल, हज, मरयम, अम्बिया और सूरह साफ़्फ़ात आदि में हज़रत इबराहीम (अलैहि॰) के पवित्र जीवन का वृत्तांत मिलता है ।

हज़रत इबराहीम (अलैहि॰) का व्यक्तित्व ऐसे ज्ञानी और बुज़ुर्ग इन्सान का है जिसने आंखें खोलीं तो अपने घर को बुतकदा (बुतों का घर) पाया । उनका बाप बुतों का पुजारी ही नहीं बल्कि बुतों का व्यापारी भी था । मगर उन्होंने उन मिट्‌टी के बुतों के आगे सम्मान से सर झुकाना तो दूर उनके सामने नज़रें झुकाना भी मानवता का निरादर माना । उन्होंने मूर्ति-पुजा के ख़िलाफ़ आवाज़ उठायी और एकेश्वरवाद यानी तौहीद की दावत दी । मुशरिक बाप ने बेटे को पैतृक धर्म का बाग़ी पाया तो पहले नसीहत की । जब देखा कि नसीहतों का उन पर कोई प्रभाव नहीं हो रहा है तो फिर उनको पत्थर मार-मार कर हलाक कर देने की धमकी दी । यह भी प्रभावी नहीं हुई तो उस समय के बुतपरस्त शासक नमरूद से शिकायत की । मगर इबराहीम निरन्तर बुतपरस्ती के ख़िलाफ़ आवाज़ उठाते रहे । एक बार मौक़ा पाकर तमाम बुतों के सर उड़ा दिये । उनके इस साहस पर नमरूद के ग़ुस्से की आग भड़क उठी और उसने हज़रत इबराहीम (अलैहि॰) को इस साहस की सज़ा देने के लिए आग का अलाव भड़का कर उसमें डाल दिया । हज़रत इबराहीम ने आग में कूदना स्वीकार कर लिया, मगर अपनी मान्यताओं से समझौता नहीं किया ।

बेख़तर कूद पड़ा आतिशे नमरूद में इश्क़ ।
अक़्ल है महवे तमाशा-ए-लबे बाम अभी ।।

हज़रत इबराहीम (अलैहि॰) की यह पहली परीक्षा थी मगर यह इम्तिहान कैसा कठोर, दिल दहला देने वाला और सख़्त था । इसका मात्र विचार करने से ही रोंगटे खड़े हो जाते हैं । आपके पक्के इरादे और हौसले को ख़ुदा की रहमत ने सहारा दिया और नमरूद की आग ठंडी हो गयी । हज़रत इबराहीम (अलैहि॰) के चरित्र का यह नमूना ही सारे इन्सानों की आज्ञाकारिता का नज़राना पाने के लिए काफ़ी था, मगर क़ुदरत अभी उनकी और परीक्षा लेना चाहती थी । परीक्षा की घड़ी अगर यहीं समाप्त हो जाती तो इबराहीम (अलैहि॰) इस बड़े मोजज़े के लिए याद किये जाते, मगर इश्क़ की वादी में क़दम बढ़ाने वाले को आज्ञाकारिता, क़ुरबानी और त्याग के लिए किसी और चरित्र की, किसी और नमूने की तलाश रहती । हज़रत इबराहीम (अलैहि॰) ने न केवल बुतपरस्ती के विरुद्ध बग़ावत का बिगुल बजाया बल्कि अपने मुश्रिक पुरखों से संबंध भी तोड़ दिया । बाप-दादा के धर्म को भी त्यागा और उनके देश को भी छोड़ दिया और परदेसी जीवन अपनाया । मानो आपने दीने-तौहीद के लिए अपने वतन से हिजरत करने की भी महान सुन्नत क़ायम की । आप इराक़ के हरे-भरे उपजाऊ क्षेत्र को छोड़कर मक्का की जल व वनस्पति रहित बंजर बीहड़ पहाड़ी क्षेत्र में आ बसे ।

यह दूसरा इम्तिहान भी कुछ कम जानलेवा नहीं था । आज दुनिया में स्थायी और अस्थायी हिजरतें रात-दिन होती

रहती हैं । मगर आज की हिजरत नादारी और ग़रीबी से मालदारी की तरफ़, बेकारी और बेरोज़गारी से कारोबार और रोज़गार की तरफ़, तंगहाली से ख़ुशहाली की तरफ़, ग़रीबी से ऐश व आराम की तरफ़ होती है । इसीलिए एक कवि ने कहा है :

शिकम की भूख लिए फिर रही है शहर-ब-शहर।
सगे ज़माना हैं हम, हमारी हिजरत क्या ।।

इसके विपरीत हज़रत इबराहीम (अलैहि०) ने उपजाऊ धरती से बंजर और पथरीली धरती की तरफ़ हिजरत की थी। ज़ाहिर है आपकी यह हिजरत, यह अपने घर और ऐश व आराम को छोड़कर, माल व दौलत के लिए नहीं, ऐश व आराम की तरफ़ नहीं था । फिर किस लिए था, यह बात हमें क़ुरआन बताता है–

"ऐ हमारे रब मैंने अपनी औलाद को एक ऐसी घाटी में जो बोने-जोतने के योग्य नहीं है, तेरे प्रतिष्ठित घर के पास ला बसाया है, हमारे रब ताकि वे नमाज़ क़ायम करें, तो तू लोगों के दिलों में उनके प्रति आदर और सम्मान पैदा कर दे और तू उनको खाने के लिए फल दे शायद वे शुक्रगुज़ार बनें ।

(इबराहीम : 37)

हज़रत इबराहीम की जवानी शिर्क और कुफ़्र से लड़ने और तौहीद का नारा बुलन्द करने में गुज़री । बुढ़ापे में ख़ानदान और वतन को भी छोड़ना पड़ा तो औलाद की इच्छा तीव्र हो गयी ताकि इस दावती मिशन में उनका हाथ बटाये और अल्लाह की धरती पर अल्लाह का सन्देश फैलाये । ख़ुदा से एक सालेह नेक औलाद की ख़ुद ख़ुदा के लिए दुआ की । दुआ की क़बूलियत एक आज्ञाकारी पुत्र, हज़रत इसमाईल (अलैहि०) के जन्म के रूप में पूरी हुई । क़ुदरती तौर से बुढ़ापे की औलाद जान से ज़्यादा अज़ीज़ होती है और हज़रत इबराहीम (अलैहि०) ने भी अपना तमाम स्नेह और प्यार हज़रत इसमाईल पर निछावर कर दिया ।

जब हज़रत इसमाईल थोड़े बड़े हुए और इस आयु को पहुंचे कि बाप के साथ भाग-दौड़ कर सकें, तो अल्लाह ने उनको एक तीसरी आज़माइश में डाल दिया । बूढ़े बाप ने जवान बेटे से कहा : 'बेटे मैंने सपने में देखा है कि तुमको ज़िब्ह कर रहा हूं, तुम भी सोच लो कि तुम्हारी क्या राय है ।' आज्ञाकारी और नेक बेटे ने तुरंत जवाब दिया : 'अब्बा जान अल्लाह के हुक्म का पालन कीजिये, इंशाअल्लाह आप मुझे धैर्यवान पाएंगे ।'

मगर नबी का ख़्वाब नुबूवत का चालीसवां हिस्सा होता है । नबी का दिल आईने की तरह साफ़ होता है । नफ़सानियत और हैवानियत की आलूदगी से पाक होता है । इसलिए शैतानी वसवसों का वहां गुज़र नहीं होता । ख़्वाब की ताबीर बेटे की क़ुरबानी थी । क़ुरबानी का समय आ गया । हज़रत इबराहीम (अलैहि०) के बूढ़े हाथों ने हज़रत इसमाईल को पेशानी के बल ज़मीन पर लिटा दिया और चाहा कि छुरी चला दें । रहमते ख़ुदावन्दी पुकार उठी : ऐ इबराहीम ! तूने ख़्वाब सच्चा कर दिखाया, हम नेकी करने वालों को ऐसा ही सुफल देते हैं । निस्सन्देह यह एक खुली हुई परीक्षा थी और हम ने एक बड़ी क़ुरबानी बदले में देकर इसमाईल को छुड़ा लिया और बाद की नस्लों में उसकी प्रशंसा छोड़ दी । सलाम हो इबराहीम पर । (साफ़्फ़ात : 109)

परीक्षा का उद्देश्य यह देखना था कि औलाद मिलने के बाद अल्लाह की मुहब्बत में औलाद की मुहब्बत तो आड़े नहीं गयीं मगर इबराहीम (अलैहि०) ने साबित कर दिया कि अल्लाह से उनके इश्क़ में न तो कोई खोट है और न मिलावट है । परीक्षा समाप्त हुई तो अब इनाम का समय आया । मानव जीवन का नियम है कि मुहब्बत जितनी होती है, उजरत भी उतनी ही दी जाती है । परीक्षा जितनी कड़ी होगी इनाम भी उतना ही बड़ा होगा । हज़रत इबराहीम (अलैहि०) धन-दौलत की आरज़ू नहीं रखते थे । ऐश-इशरत और आराम के सामान की इच्छा भी उनको नहीं थी । उनके जीवन का मक़सद अल्लाह के कलमे की सरबुलन्दी था । उसके दीन को लोगों तक पहुंचाना था । अल्लाह ने उनको उसका बदला दिया और उनका नाम रहती दुनिया तक के लिए सरबुलन्द कर दिया । सारे कलमा पढ़ने वाले उनकी मिल्लत ठहराये गये और उनकी सुन्नत उम्मते मुस्लिमा का तरीक़ा और पहचान बन गयीं । सलाम हो इबराहीम पर ।

ईदुल-अज़हा हज़रत इबराहीम (अलैहि०) के दिखाये हुए मार्ग पर, आपके उसवे पर चलने की दावत

देती है । उनकी राहे-अमल को अपनाने और त्याग व बलिदान उनकी भावना की पैरवी करने का पैग़ाम देती है । शिर्क और उसके तंत्र से बचने और तौहीद के अक़ीदे को उसके सारे तक़ाज़ों के साथ मान लेने और अपने जीवन में उतार लेने का मुतालबा और तक़ाज़ा करती है । क़ुरबानी उसका प्रतीक और पहचान है । जबकि उसका अस्ल अल्लाह से डरना और अपनी रूह की पाकीज़गी है ।

"क़ुरबानी के पशु का गोश्त और उसका ख़ून अल्लाह को नहीं पहुंचता, बल्कि तुम्हारा तक़वा उसे पहुंचता है ।" (हज)

क़ुरबानी करते हुए मुसलमान भाई को चाहिए कि क़ुरबानी के पशु के साथ अपनी कामनाओं और स्वार्थों को भी क़ुरबानी करना सीखें और अल्लाह के हर हुक्म और दीन के हर मुतालबे पर दिल व जान निछावर करने का हौसला पैदा करें । जब तक दिलों में तक़वा न हो आमाल को क़बूलियत नहीं होती । जब तक बुराइयों की तरफ़ बुलाने वाली इच्छाओं को ज़िब्ह न किया जाए, मात्र पशु की क़ुरबानी से उद्देश्य पूरा नहीं होता । अल्लाह तआला का फ़रमान है : "अल्लाह केवल मुत्तक़ियों के आमाल को ही क़बूल करता है । (मायदा : 27)

एक आदमी हज कर के वापस आया और हज़रत जुनैद बग़दादी (रह०) से मिलने आया । हज़रत जुनैद (रह०) ने पूछा : 'कहां से आ रहे हो ?' उसने बताया : 'अल्लाह के घर का हज कर के आ रहा हूं ।' उन्होंने फिर पूछा : 'जब तुम हज के इरादे से निकले थे तो क्या गुनाहों से परहेज़ का इरादा कर लिया था ?' जवाब मिला : 'ऐसा कोई इरादा नहीं किया था ।'

हज़रत जुनैद बग़दादी (रह०) ने फ़रमाया : 'तो फिर तुम हज को निकले ही नहीं थे ।' हज़रत जुनैद ने फिर पूछा : 'जब तुमने अपने कपड़े उतार कर एहराम पहना तो क्या इन्सानी कमज़ोरियों से छुटकारे का निश्चय किया था ?' उन्होंने कहा : 'नहीं ।' तो हज़रत बग़दादी ने फ़रमाया : 'तो इसका मतलब यह कि तुमने एहराम पहना ही नहीं ।' फिर पूछा : 'जब मिना में तुमने क़ुरबानी की थी तो अपनी नफ़्सानी ख़्वाहिशात को क़ुरबान किया था ?' जवाब मिला : 'नहीं ।' तब हज़रत जुनैद बग़दादी (रह०) ने फ़रमाया : 'तो इसका मतलब यह हुआ कि तुमने क़ुरबानी की ही नहीं ।' क़ुरबानी के लिए ज़रूरी है कि इन्सान इरादा करे और उसके साथ यह दुआ भी करे :

"मैंने तो हर ओर से कट कर अपना रुख़ उसकी ओर कर लिया है जिसने आकाशों और धरती को पैदा किया और मैं शिर्क करने वालों में से नहीं हूं ।" (अनआम : 79)

"मेरी नमाज़, मेरी क़ुरबानी, मेरा जीना और मेरा मरना, सब कुछ अल्लाह रब्बुल आलमीन के लिए है, जिसका कोई शरीक नहीं है । इसी बात का मुझे हुक्म दिया गया है और सबसे पहले मैं ख़ुद ही अल्लाह तआला की आज्ञाकारिता में नतमस्तक होता हूं । (अनआम : 163-64)

अगर इसी ईमान व जज़्बे और शऊर से क़ुरबानी की जाए तो उसकी क़बूलियत में कोई दूरी नहीं रहती और दुनिया के सारे तूफ़ान और हादसे भी उस दृढ़ता से थर्रा जाएंगे । आज भी हो जो बराहीम-सा ईमां पैदा आग कर सकती है अंदाज़े गुलिस्तां पैदा ।

MC
06252-231496
9431053214
UNANI MEDICAL CENTRE
Agency
Tibbiya college, Bakhshi & Co.
Stockist
Hamdard, Dabur, Rex (U&A), Sadar Dawakhana, National Dawakhana, New Shama
Availability : Holy Quran, Islamic Books, Courses Books (School, College & Madrasa), Topi, Tasbih, Janemaz, Neqab, Redha Wholesale & Retail Here
Kitab Manzil, Jama Masjid Gate, Main Road Motihari, East Champaran-845401

क़ुरबानी का औचित्य

❖ डॉ॰ मुहम्मद अहमद

क़ुरबानी के औचित्य को जानने के पूर्व यह आवश्यक प्रतीत होता है कि जीव-हत्या की परिभाषा समझ ली जाए । जीव-हत्या का सीधा अर्थ है, वह चीज़ अथवा प्राणी जिसमें जीवन और चेतना पायी जाए, अथवा दोनों में से कोई एक चीज़ पायी जाए, उसका अनाधिकार नष्ट कर दिया जाए अथवा उसका जीवन समाप्त कर दिया जाए । यह एक दुखद स्थिति है कि आज अधिकतर लोग जीवन-हत्या के सही भावार्थ को समझने की चेष्टा नहीं करते । इसके लिए वे ख़ुद क़ुसूरवार नहीं हैं, बल्कि मीडिया और आस-पास के भ्रामक वातावरण का उन पर प्रभाव पड़ना स्वाभाविक बात है ।

हमारे देश में ऐसे लोगों की कमी नहीं है, जिन्हें उन पशु-पक्षियों को ज़िब्ह करने में ही जीवन-हत्या नज़र आती है, जिनका मांस मानव-शरीर के लिए हर प्रकार से लाभकारी है और शरीर की विभिन्न अनिवार्य आवश्यकताओं की पूर्ति करता है । शायद ऐसे लोगों की नज़र इस ओर नहीं जाती कि उनकी परिभाषा से देखा जाए तो स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि प्रत्येक व्यक्ति प्रतिदिन अनगिनत जीव-हत्याएं करता है । अब वनस्पति वैज्ञानिकों ने अनेक प्रमाणों के द्वारा यह सिद्ध कर दिया है कि पेड़-पौधों में भी जीवन होता है और उनमें चेतना का अंश भी मिलता है । प्रख्यात भारतीय वैज्ञानिक जगदीश चन्द्र बोस ने सबसे पहले यह खोज की थी, लेकिन अब तो उनकी खोज के अनेकानेक प्रमाण जुट गये हैं । ऐसे में यह कहा जा सकता है कि मनुष्य प्रतिदिन शाक-सब्ज़ियों का जो सेवन करता है, तो एक ही साथ अनेक जीव रूपी शाक-सब्ज़ियों की हत्याएं कर डालता है । यही वह कारण है कि जैन समाज के एक वर्ग के कुछ लोग शाक-सब्ज़ी का सेवन नहीं करते । वे हवा में फैले कीटाणुओं से बचने के लिए मुंह पर कपड़े बांधते हैं कि कहीं कोई कीटाणु शरीर के अन्दर चला जाए और जीव-हत्या हो जाए ।

कुछ लोग ज़मीन पर इसलिए नहीं चलते कि कहीं चींटियां और कीड़े-मकोड़े न मर जाएं एवं जीव-हत्या न हो जाए । स्पष्ट है कि कितना ही बचा जाए कथित "जीव-हत्या" से बचा नहीं जा सकता और यह अव्यावहारिक तथ्य है कि मनुष्य अपने जीवन और दृष्टिकोण को अकारण संकुचित करे और अपने हाथ-पैर बांध ले ।

यहां पर यह कहना अनुचित न होगा कि जो लोग तथाकथित "जीव-हत्या" से बचने का प्रपंच करते हैं, वे "जीव-हत्या" से कदापि नहीं बच पाते । माना कि शाक-सब्ज़ी नहीं खाते, दही नहीं खाते कि उसमें बैक्टीरिया होते हैं और मांस-मछली का सेवन नहीं करते और ज़मीन पर पैर नहीं रखते, लेकिन वे जाने-अनजाने क्या हवा में खुलकर सांस नहीं लेते, जिसमें कीटाणु रह सकते हैं । फिर बीमार पड़ने पर शरीर के कीटाणुओं को मारने के लिए एंटीबायटिक जैसी दवाएं लेने से कहां कोई बच पाता है । पेट के अलाभकारी कीड़ों को मरवाने की दवाएं खाने की अनिवार्यता अलग से है ।

घर से मच्छर, दीमक, चूहा और अन्य जीव-जन्तु भगाने के लिए नाना प्रकार के पेस्टीसाइड्स और ज़हरीले पदार्थ का इस्तेमाल करने एवं करवाने से कौन बच पाता है और खेती-किसानी करने वाले तो फ़सल बचाने के लिए बड़े पैमाने पर कीड़े-मकोड़ों और जीव-जन्तुओं को मारकर खुलेआम जीव-हत्याएं करते रहते हैं, खेत जोतकर पता नहीं कितने जीवों के प्राण ले लेते हैं, इसके बाद कीट-नाश का उपक्रम साधा जाता है, फिर खाद्यान्न उत्पादन हो पाता है । लेकिन पता नहीं क्यों हमारी नज़र इस ओर नहीं जाती ।

इससे यह मालूम हुआ कि जीव-हत्याओं के बाद खाद्यान्न का उत्पादन होता है और शाक-भाजी तो जीवंत हैं । पेड़-पौधों के बीज अपने आप में तो जीवंत नहीं होते, लेकिन अपने अन्दर इसकी क्षमता अवश्य रखते हैं । हिन्दू धर्म की यह उक्ति भी समीचीन है कि "जीव:

जीवस्य भोजनम्'' (जीव ही जीव का आहार है)।

मनुष्य के लिए मांसाहार उसकी प्रकृति के प्रतिकूल नहीं है । वह मां के पेट में सबसे पहले मांस-रस का ही महीनों सेवन करता है और जन्म के बाद मांसाहार से अपने संबंध यदि तोड़ लेता है, तो यह उसकी प्रकृति के प्रतिकूल बात हुई । हां, कुछ पशु-पक्षियों के मांसों के सेवन से मनुष्य का शरीर रोगों से ग्रस्त हो जाता है, अतः इनसे बचना अनिवार्य है । मृत पशु-पक्षियों और सही तरीक़े से ज़िब्ह (वध) न किये हुए पशु-पक्षियों के भी मांस दूषित होते हैं, अतः इनका सेवन नहीं करना चाहिए । आयुर्वेद के ग्रंथ भी इसका समर्थन करते हैं ।

इस्लाम मनुष्य को अल्लाह द्वारा पैदा किये गये जीवों में सर्वश्रेष्ठ जीव ठहराता है । उसे इस बात का अधिकार है कि वह अपने लिए बनायी गयी सृष्टि की प्रत्येक चीज़ का मर्यादा और सीमा में रहकर इस्तेमाल करे । इस्लाम किसी भी पशु-पक्षी को प्रताड़ित करने से रोकता है, सिर्फ़ मानव-शरीर के लिए उपयोगी मांस वाले पशु-पक्षियों के ही आवश्यकतानुसार मांस सेवन हेतु ज़िब्ह करने की अनुमति देता है । साथ ही वह ज़िब्ह का तरीक़ा नियत करता है, जिससे जानवर को कम से कम कष्ट हो ।

इस्लाम के साथ ही दूसरे बड़े धर्मों में मांसाहार की शिक्षा मिलती है । मनुस्मृति में यहां तक कहा गया है कि ''जो मनुष्य किसी श्राद्ध या मधुपर्क यथाविधि नियुक्त होने पर भी मांस नहीं खाता, वह मरने के अनन्तर 21 जन्म तक पशु होता रहता है (5:35) संत विनोबा भावे जी अपनी प्रसिद्ध पुस्तक ''गीता प्रवचन'' में लिखते हैं–

''भवभूति के 'उत्तर राम चरित' में एक प्रसंग आया है । वाल्मीकि के आश्रम में वाशिष्ठ ऋषि आये । उनके स्वागत में एक छोटा-सा गाय का बछड़ा मारा गया, तो एक छोटा लड़का बड़े लड़के से पूछता है : 'आज हमारे आश्रम में एक दाढ़ी वाला आया है, उसने हमारा बछड़ा मार डाला ।' बड़ा लड़का उत्तर देता है : ''अरे वे तो वशिष्ठ ऋषि हैं, ऐसा मत बक ।''

('गीता प्रवचन, अध्याय 7, पृ० 256)

रही प्रश्न कुरबानी से जीव-हत्या का, तो उपर्युक्त विवरण से यह स्पष्ट हुआ कि सीमित अर्थ वाली जीव-हत्या से कोई भी इन्सान बच नहीं सकता । यदि वह इससे बचने की कुचेष्टा करता है, तो अपने आपको इतना सीमित कर डालेगा कि उसका इन्सान होना ख़ुद उसके लिए बड़ा बोझ होगा, जबकि इन्सान ईश्वर द्वारा बनायी गयी सृष्टि-रचनाओं में सर्वश्रेष्ठ रचना है । इस्लाम ने अपनी इन रचनाओं पर इन्सान को प्राथमिकता दी है, उसे अल्लाह के सिवा किसी और की दासता से मुक्त कर दिया है । इस्लाम अपने मानने वालों से यह अपेक्षा करता है कि वे अल्लाह ही की बन्दगी करें, अपने अन्दर तक़वा व ईशभय पैदा करें और उसके आदेशों-निर्देशों का पालन करें, यहां तक कि उसके मार्ग में अपनी प्रिय से प्रिय वस्तु का भी त्याग करने से न हिचकें । क़ुरबानी का मूल उद्देश्य यही है । अल्लाह के मार्ग में क़ुरबानी इस्लाम के पूर्व से चली आ रही है ।

अल्लाह ने अपने पैग़म्बर हज़रत इबराहीम (अलैहि०) को अपने प्रिय पुत्र इस्माईल (अलैहि०) की क़ुरबानी पेश करने का स्वप्न में संकेत दिया, जिसके लिए वे और उनके पुत्र सहर्ष तैयार हो गये । इबराहीम (अलैहि०) अपने बेटे के सहयोग से इस कठिन परीक्षा में खरे उतरे । अल्लाह ने उनकी त्याग भावना की परीक्षा ली और उनके बेटे इस्माईल (अलैहि०) का जीवन सुरक्षित रखा । इसी घटना की याद को ताज़ा करने के लिए और आम मुसलमानों में क़ुरबानी की भावना विकसित करने एवं बनाए रखने के लिए प्रत्येक वर्ष क़ुरबानी का त्योहार ईदुल-अज़हा मनाया जाता है ।

वास्तव में हत्या उसे कहते हैं, जिसे नाहक़ की जाए । यह पूरी सृष्टि मनुष्य के लिए ही पैदा की गयी है । किसी दुर्घटना में इन्सानी जान की क्षति को हत्या नहीं कहा जाता, जब तक कि यह न सिद्ध हो जाए कि दुर्घटना किसी ने जान-बूझकर करायी । इसी प्रकार प्राकृतिक आपदा का शिकार होने वालों को 'हत्या' नहीं कहा जाता है, क्योंकि यह प्राकृतिक बात है । इसी प्रकार क़ुरबानी प्राकृतिक से हटी हुई बात नहीं है । इन्सान को सृष्टि की प्रत्येक वस्तु एवं प्राणी का मर्यादा-सीमा के अन्दर उपयोग और उपभोग करने का अधिकार है । इस्लाम किसी पशु-पक्षी के भी साथ ज़्यादती करने से रोकता है, हदीस में है कि एक स्त्री को बिल्ली को प्रताड़ित

करने के अपराध में जहन्नम की सज़ा मिली । लेकिन उनका आवश्यकतानुसार सीमा के अन्दर उपयोग करने की अनुमति देता है, यहां तक कि मानव शरीर के लिए उपयोगी मांसधारी पशु-पक्षियों को ही आवश्यकतानुसार ज़िब्ह करने की अनुमति देता है । इसमें जीव-हत्या का प्रश्न कहां उठता है ?

इस्लाम के साथ ही दूसरे बड़े धर्मों में भी पशुओं की कुरबानी अथवा बलि का प्रावधान मौजूद है । हिन्दू धर्म भी इसका अपवाद नहीं है । बलि (कुरबानी) का उल्लेख ऋग्वेद में अनेक मंत्रों में आया है, यथा 1-70-9, 5-1-10, 8-100-9, 7-6-5, 10-173-6, 6-11-17, अन्य ग्रंथों में भी बलि का उल्लेख है ।

गांधी जी लिखते हैं–"वेद, उपनिषद, स्मृति, पुराण, इतिहास एक ही समय में सामने नहीं आये । इनमें से हर एक का विकास विशेष कालों की आवश्यकताओं के आधार पर हुआ और इसी कारण इनमें आपसी टकराव होता है...क्योंकि जानवरों की बलि का कार्य एक समय में सामान्य रूप से पाया जाता था । ...एक समय में हम मांस खाते थे । क्या आज भी हम ऐसा करना चाहते हैं ।"

(Hindu Dharma, p.19)

उल्लेखनीय है कि गांधी जी शाकाहारी थे, लेकिन उन्हें सत्य स्वीकारने में कोई हिचक नहीं है ।

स्वामी विवेकानन्द कहते हैं–

"वे बलि की एक चिता बनाते हैं । कुछ पशुओं का वध करते हैं, उनका मांस सीख़ पर भूनते हैं और मांस इन्द्र को भेंट कर देते हैं ।"

(Hinduism of Vedas)

हिन्दू जीवन व्यवस्था पर सबसे प्रामाणिक पुस्तक मनुस्मृति है । इसमें पशु-पक्षियों के मांस खाने का बयान बहुत स्पष्ट रूप से आया है–

यज्ञ के निमित्त अथवा स्वजनों के भरण-पोषण के लिए प्रशस्त पशु-पक्षियों का वध करने में दोष नहीं है, क्योंकि अगस्त्य मुनि ने ऐसा किया था । (5:22)

इस स्मृति में बहुत से मंत्र मांसाहार के बारे में आये हैं । इसमें भी हलाल (विहित) और हराम (अविहित) मांस का वर्णन किया गया है । गौतम स्मृति में सूअर का भी मांस खाने से मना किया गया है । आपस्तम्ब धर्मसूत्र (2-2-5-15) में भी ऐसी ही बात कही गयी है । इस धर्मसूत्र (2-3-7-4) में लिखा है कि अतिथि को मांस देने से द्वादशाह यज्ञ करने का फल मिलता है । वसिष्ठ धर्मसूत्र (11-34) में वर्णित है कि "श्राद्ध अथवा देवपूजा में दिये गये मांस को यदि प्रार्थना करने पर यति (ब्राह्मण) नहीं खाता है, तो वह असंख्य वर्षों तक नरक में रहता है ।" स्पष्ट है कि बिना ज़िब्ह किये कोई कैसे मांस खा सकता है, लेकिन यह ज़िब्ह "हत्या" नहीं है । आयुर्वेद की दृष्टि में ज़िब्ह किया हुआ मांस अमृत की तरह रोगनाशक है । इस अर्थ को बताने वाला श्लोक आयुर्वेद के एक प्रसिद्ध ग्रंथ में इस प्रकार है–

"सद्योहतस्य मांस स्याद्वयाधिधाति यथाऽमृतम् ।"

अब रही यह बात कि वर्तमान समय में कुछ शरीर-विज्ञानी और डॉक्टर मांस को शरीर के लिए हानिकारक बताने लगे हैं, तो यह सच है कि कुछ शरीर-विज्ञानियों ने ऐसा निष्कर्ष निकाला है, लेकिन वे यह नहीं सिद्ध कर पाते हैं कि मांस में प्रोटीन और अन्य तत्व नहीं होते । यहां पर समझने की बात यह भी है कि पश्चिम में कुछ डॉक्टरों ने मांसाहार के विरुद्ध जो निष्कर्ष निकाला है, वह अपने ही यहां सर्वेक्षण करके निकाला है, जहां पर बड़े पैमाने पर सूअर का मांस (पोर्क) खाया जाता है । स्पष्ट है, सूअर का मांस शरीर के लिए एकदम अनुपयोगी और बहुत हानिकारक है । इसमें जो पैरासाइट्स पाये जाते हैं, वे आंतों में चिपक जाते हैं और नाना प्रकार के रोग उत्पन्न करते हैं । यह बात अनेकों बार सिद्ध की जा चुकी है । इसके इस्तेमाल से बहुत-सी गंभीर बीमारियां पैदा हो जाती हैं । अतः इसका त्याग ही विकारों का हल है । भारत में जो एक-दो डॉक्टर मांसाहार विरोधी नतीजे पर पहुंचते हैं, वे पूर्वाग्रह से प्रेरित होते हैं और विशेष रूप से एक धर्म विशेष के दुष्प्रचार अथवा किसी अभियान के शिकार हो जाते हैं । हां, यह बात तो सहज रूप से कही जा सकती है कि मुरदार मांस अथवा सड़े-गले मांस खाने से अवश्य बीमारियां पैदा हो जाती हैं । यही बात दूसरे भोज्य पदार्थों के सिलसिले में है । मनुस्मृति (5-7) में है–

"जो जानवर मंत्र से सिद्ध न किया गया हो, उसका मांस न खाएं ।"

इस्लाम धर्म में भी जानवर ज़िब्ह करने से पूर्व छुरी गर्दन पर रखते

(शेष पृष्ठ 38 पर)

ईदुल अज़हा : त्याग और बलिदान का महान पर्व

❑ विद्या प्रकाश

इस्लाम धर्मावलम्बियों द्वारा सालाना रिवायत के मुताबिक़ अक़ीदतमन्दाना अंदाज़ में आयोज्यमान विभिन्न त्योहारों की सूची में ईदुल अज़हा को अहम मक़ाम और दर्जा हासिल है । हज़रत इबराहीम (अलैहि०) के प्राचीन जीवन वृत्तांत से संबंधित होकर यह पर्व वर्तमान कालीन परिस्थितियों में भी अर्थपूर्ण तथा महान सन्देशवाहक है । मुसलमानों की परम्परागत तथा प्रचलित धारणा के अनुसार अल्लाह तआला ने अपना पवित्र सन्देश जनसाधारण तक प्रेषित करने हेतु धरती पर कुल एक लाख चौबीस हज़ार पैग़म्बर भेजे, जिनमें प्रथम पैग़म्बर हज़रत आदम तथा अन्तिम पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) हैं ।

हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) से पूर्व पैग़म्बर इबराहीम (अलैहि०) ने संसार में निराकार एकेश्वरवाद की उपासना का व्यापक प्रचार-प्रसार किया । अपने जीवन काल में उन्हें कई बार आज़माइश और अख़्लाक़ी इम्तिहान के दौर से गुज़रना पड़ा जिसमें वे आत्म बल, नैतिक बल और अल्लाह पर अडिग व अविचल विश्वास के भरोसे सफल और उत्तीर्ण हुए । ईदुल अज़हा का त्योहार उनके जीवन के ऐसे ही त्याग और बलिदान की प्रेरक घटना से संबंधित है । यह एक ऐसा महापर्व है जिसमें मौजूदा समाज के मुख़्तलिफ़ मसायल और तकलीफ़देह दुश्वारियों का समाधान सूत्र निहित है । यह हमारी किरदार-साज़ी और मर्दुमसाज़ी की अख़्लाक़ी बुनियाद पुख़्ता करने में मददगार है ।

हज़रत इबराहीम (अलैहि०) धर्मशास्त्र के महान ज्ञाता, पाबन्द, उसूल और पाक किरदार व अख़्लाक़ के मालिक थे । इससे पूर्व परवरदीगारे आलम अल्लाह उनका अनेक इम्तिहान ले चुका था और वे इस इम्तिहानी आज़माइश में कामयाब भी हो चुके थे । इस स्वप्न दर्शन के उपरांत उनको इस बात का आभास हुआ कि अल्लाह पुनः उनकी महान परीक्षा लेना चाहता है । उन्होंने अपने प्रिय पुत्र इस्माईल (अलैहि०) से अपने इस स्वप्न का वर्णन किया । इस्माईल (अलैहि०) एक निष्ठावान, चरित्रवान और आज्ञापालक पुत्र थे और उन्होंने अपने वालिद इबराहीम (अलैहि०) से बयान किया कि आप अपने स्वप्न को वास्तव में साकार कर दिखलाइये । आप मुझे धैर्यवानों की श्रेणी में पाइएगा ।

माहे ज़िलहिज्जा की दसवीं तारीख़ को प्रातःकाल इबराहीम (अलैहि०) ने एक धारदार छुरा लिया । वे अपनी तथा अपने पुत्र इस्माईल (अलैहि०) की आंखों पर पट्टी बांधकर मिना नामक उसी एकांत स्थान पर गये तथा पुत्र इस्माईल (अलैहि०) को वादी-ए-मिना की ज़मीन पर लिटा दिया । स्वप्न के अनुसार पैग़म्बर इबराहीम (अलैहि०) ने अपने पुत्र के गले पर जैसे ही तेज़ धारदार छुरा चलाया, ख़ून की धारा इबराहीम (अलैहि०) के हाथों पर पड़ी, जिसका अनुभव करके इबराहीम (अलैहि०) के दिलो-दिमाग़ में यह ख़्याल आया कि उनके अज़ीज़ बेटे परीक्षा देकर वे कुछ रक्तरंजित हो गया है । जब अपनी परीक्षा देकर वे कुछ फ़ासले पर आगे बढ़े और अपनी आंखों पर से पट्टी हटायी तो देखा कि उनके पुत्र इस्माईल (अलैहि०) सही सलामत और स्वस्थ अवस्था में हैं ।

इस्माईल (अलैहि०) को सही सलामत और सकुशल देखकर पिता इबराहीम (अलैहि०) के आश्चर्य का कोई ठिकाना नहीं रहा । जब वे अपने बेटे को लेकर कुरबानीगाह पर गये तो देखा और पाया कि घटना स्थल पर एक मेंढ़े का रक्त-रंजित गला कटा पड़ा है । पवित्र कुरआन में मानव इतिहास की इस महान और मज़हबी अख़्लाक़ी नज़रिये से क़ाबिले अमल व नसीहतआमोज़ वारदात का ज़िक्र मिलता है । पाक

क़ुरआन में अल्लाह तआला ने फ़रमाया है कि हम नेक लोगों को ऐसा ही बदला देते हैं । पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) की शिक्षाओं और उपदेशों से भी पैग़म्बर इबराहीम (अलैहि०) के पवित्र बेदाग़ किरदार और महान क़रबानियों के बारे में ज्ञात होता है ।

अल्लाह पवित्र क़ुरआन में पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) से संबोधित होकर कह रहा है–'ऐ रसूल ! वह वक़्त याद करो जब हमने इबराहीम के ज़रिये इबराहीम के वास्ते ख़ाना-ए-काबा की जगह प्रकट कर दी और उनसे कहा कि मेरा किसी चीज़ को शरीक (यानी किसी वस्तु में मेरा अस्तित्व) न बनाना और मेरे घर को तवाफ़ (परिक्रमा) और रुकूअ सजूद करने वालों के वास्ते साफ़-सुथरा रखना और लोगों को हज की ख़बर कर दो ।'

हज़रत इबराहीम (अलैहि०) व इस्माईल (अलैहि०) के जीवन से जुड़ी मानव इतिहास की इस सर्वाधिक हृदयस्पर्शी और त्यागमयी घटना की याद में प्रतिवर्ष माहे ज़िलहिज्जा की इसी दस तारीख़ को हर अक़ीदतमंद मुसलमान आवश्यक रूप से अपने आर्थिक सामर्थ्यानुसार बकरा, भेंड़ या ऊंट की क़ुरबानी देता है । हर साल हज़रत इबराहीम (अलैहि०) द्वारा की गयी क़ुरबानी की जगह मिना में करोड़ों की तादाद में हाजी पशुओं की क़ुरबानी की परम्परा का निर्वाह कर हज़रत इबराहीम (अलैहि०) के त्याग का स्मरण करते हैं ।

प्रत्येक हाजी को एक पशु की बलि देना अनिवार्य माना गया है । सऊदी अरब की हज प्रबंध समिति हज के अवसर पर करोड़ों पशुओं का मांस पाकिस्तान, अफ़ग़ानिस्तान और सूडान जैसे ग़रीब मुस्लिम देशों को दान कर देती है । जो अक़ीदतमंद मुसलमान किन्हीं परिस्थिति में हज यात्रा पर नहीं जा पाते, वे अपने घरों में ही ईदुल अज़हा के मौक़े पर बकरों, भेड़ों को दस ज़िलहिज्जा को ज़िब्ह करते हैं तथा मुफ़लिस, बेसहारा, मोहताज और मजबूर लोगों में क़ुरबान किये गये जानवर का गोश्त तक़सीम किया जाता है । बकरे की ख़ाल को यतीमख़ानों में भेज दिया जाता है जिसको बेच देने से यतीमख़ानों की आमदनी में इज़ाफ़ा होता है ।

ईदुल अज़हा का त्योहार आमतौर पर तीन दिन तक मनाया जाता है और तीन दिनों तक जानवरों की क़ुरबानी दी जाती है । इस दिन प्रात:काल निर्धारित समयानुसार ईदगाहों, मस्जिदों तथा खुले मैदानों में दो रकअत बाजमाअत नमाज़-ए-ईद का आयोजन किया जाता है । इस नमाज़-ए-ईद की एक ख़ासियत यह है कि इससे पूर्व अज़ान और इकामत नहीं होती । इस नमाज़ के पश्चात मुस्लिम धर्म गुरु अपने धार्मिक उद्बोधन तथा मज़हबी तक़रीरों में पैग़म्बर हज़रत इबराहीम के महान, अनुकरणीय तथा चमत्कारिक बलिदान का उल्लेख करते हैं और तदुपरांत परस्पर गले मिलकर मुस्लिम बंधु ईद की मुबारकबाद का आदान-प्रदान करते हैं ।

ईदुल अज़हा का त्योहार त्याग और बलिदान का त्योहार है । अपनी दुर्भावनाओं, दुर्व्यसनों और काम वासनाओं का त्याग कर ही हम इस पर्व को अधिक सार्थक ढंग से मना सकने के अधिकारी कहला सकते हैं ।

माल का लालच और ईमान दोनों किसी बन्दे के दिल में हरगिज़ जमा नहीं हो सकते ।

मद्रासी

मद्रासी होटल
मालवीय रोड
रायपुर (सी०जी०)
फोन : 0771-2539516,2236788

मद्रासी होटल
शॉप नं० 1-7
मोतीबाग़ चौपाटी, रायपुर
फोन : 0771-2533946, 5053603

क़ुरबानी की वास्तविकता

● **मौलाना सैयद सुलैमान नदवी**

जैसा कि हम जानते हैं कि हज़रत इबराहीम (अलैहि०) ने स्वप्न देखा था कि वे अपने इकलौते बेटे को क़ुरबान कर रहे हैं । इस्लामी शरीअत में स्वप्न के दो प्रकार हैं एक सांकेतिक स्वप्न (रूयाये तमसीली) और दूसरा वास्तविक स्वप्न (रूयाये हक़ीक़ी)। रूयाये हक़ीक़ी में जो सच्चाई होती है वह उसी रूप में नज़र आती है । जैसे किसी व्यक्ति ने स्वप्न में देखा कि आमुक व्यक्ति मर गया है और वह वास्तव में मर गया था । रूयाये तमसीली में सच्चाई को सांकेतिक और प्रतीकात्मक रूप में दिखाया जाता है; जैसा कि हज़रत यूसुफ़ (अलैहि०) ने स्वप्न में देखा कि 11 तारे, चांद और सूर्य उन्हें सजदा कर रहे हैं, जबकि वास्तव में वे उनके 11 भाई और माता-पिता थे ।

हज़रत इमाम ख़त्ताबी लिखते हैं कि कुछ स्वप्न सांकेतिक होते हैं, जिसे संकेत में इसलिए बयान किया जाता है कि इसी आधार पर उसका अर्थ बताया जाए । जिस प्रकार ऐसे स्वप्न का अर्थ बताया जाता है और कुछ स्वप्न अनुभव बनकर सामने आते हैं । इस आधार पर अब हमें विचार करना है कि हज़रत इबराहीम (अलैहि०) ने जो स्वप्न में अपने बेटे को क़ुरबान करते देखा था वह स्वप्न सांकेतिक था या वास्तविक ।

वास्तव में अल्लाह ने हज़रत इबराहीम (अलैहि०) को स्वप्न दिखाया था वह सांकेतिक था । स्वप्न में बेटे को क़ुरबान करने का अर्थ यह था कि वे उसे हमेशा के लिए ख़ाना-ए-काबा में दीन की ख़िदमत और तब्लीग़ के लिए लगा दें । हज़रत इबराहीम (अलैहि०) ने बन्दगी के जोश में इसे वास्तविक स्वप्न समझा और अपने बेटे को अल्लाह की राह में शारीरिक रूप में क़ुरबान करने के लिए ले गये । वे बेटे के गले पर छुरी फेरते इससे पहले ही उन्हें ग़ैब से आवाज़ आयी, "ऐ इबराहीम तू ने अपना स्वप्न सच कर दिखाया ।" फिर आपको वह्य के माध्यम से अवगत किया गया कि वह स्वप्न वास्तविक नहीं बल्कि सांकेतिक था और हज़रत इस्माईल की शारीरिक क़ुरबानी नहीं बल्कि रूहानी क़ुरबानी दरकार थी और इस जानवर (अल्लाह ने जन्नत से एक मेंढ़ा भेजा था) की शारीरिक क़ुरबानी इस रूहानी क़ुरबानी की प्रतीक है । अर्थात वह "ज़ब्हे अज़ीम" जिसे देकर हज़रत इस्माईल (अलैहि०) शारीरिक क़ुरबानी से बच जाते हैं वह उनकी रूहानी क़ुरबानी है ।

रूहानी क़ुरबानी शारीरिक क़ुरबानी की अपेक्षा निश्चित रूप से ज़ब्हे अज़ीम है । शारीरिक क़ुरबानी तो एक झटके की तकलीफ़ है मगर रूहानी क़ुरबानी तो अपने जीवन का एक-एक क्षण अल्लाह के लिए क़ुरबान कर देना है । दीन के मार्ग में आने वाली हर मुसीबत को बर्दाश्त करना और हर समय मौत के लिए तैयार रहना है ।

हज़रत इस्माईल (अलैहि०) ने इसके लिए शाम के हरे-भरे क्षेत्र को छोड़ा और सभी आराम का त्याग किया । अपने सारे सगे-संबंधियों को छोड़कर एक वीराने में रहना स्वीकार किया । वहां अल्लाह के नाम का एक घर बनाया और उसे वहां से गुज़रने वाले व्यापारियों के क़ाफ़िलों के लिए एक केन्द्र ठहराया । वहीं से दीने हक़ की तब्लीग़ की और काबा की पासबानी के लिए अपना पूरा जीवन लगा दिया । न केवल अपना जीवन लगा दिया, बल्कि अपनी नस्लों को ऐसा प्रशिक्षण दिया कि अल्लाह के आख़िरी रसूल के सामने आने तक उनकी नस्ल उस उजाड़ भूमि पर अल्लाह के घर की सेवा में लगी रही । यही थी वह अज़ीम क़ुरबानी जो हज़रत इस्माईल (अलैहि०) की शारीरिक क़ुरबानी के सांकेतिक रूप में हज़रत इबराहीम (अलैहि०) को दिखायी गयी थी । आज तक वह रूहानी क़ुरबानी मिल्लते इबराहीम की हक़ीक़त और नस्ल इस्माईल की शरीअत है । जानवर की शारीरिक क़ुरबानी इस हक़ीक़त का मजाज़ है और इस्लाम में जिहाद इस मजाज़ की हक़ीक़त है ।

इस विवरण से यह मालूम हुआ कि वह ज़ब्हे अज़ीम जिसके बदले में हज़रत इस्माईल (अलैहि०) की क़ुरबानी माफ़ की गयी, उनकी वह रूहानी क़ुरबानी है जो उनके बाद की नस्लों पर फ़र्ज़ हुई और उसकी जिस्मानी मिसाल जानवर के रूप में सामने आयी, जो मुसलमानों पर वाजिब है ।

अभिमत

सेना में हिन्दुत्व

इस तरह पहली दफ़ा हिन्दू आतंकवाद का मसला मुख्यधारा की बहसों का विषय बना है । इससे उन पहले के कांडों पर भी नयी रोशनी पड़ रही है, जिनमें हिन्दू आतंकवादियों का हाथ होने का संदेह किया जाता रहा है । इस घटना का सबसे अहम पहलू है सेना के सेवारत या सेवानिवृत्त अधिकारियों की आतंकी घटनाओं में संलिप्तता, जिसने धार्मिक विवादों से परे रहने वाली सेना की प्रोफेशनल छवि को ज़बर्दस्त धक्का पहुंचाया है ।

(सुभाष गाताडे, नभाटा, 8 नवम्बर 2008)

बेबस ख़रीदार

हमारे देश में मरीज़ों या उनके परिवारों से प्रतिवर्ष नाहक़ ही अरबों रुपये इस कारण छीने जाते हैं कि दवाओं की क़ीमत को अनियंत्रित रूप से बढ़ने दिया गया है । ज़रूरी दवाएं बाज़ार में उपलब्ध किसी भी अन्य उत्पाद से भिन्न हैं । संभवत: यह ऐसा एकमात्र उत्पाद है जिसके चुनाव में ख़रीदार की कोई भूमिका नहीं होती है । जो पर्ची डॉक्टर या अस्पताल द्वारा थमा दी जाती है बस उसी के अनुसार दवा मरीज़ या उसके परिवार वालों को ख़रीदनी पड़ती है ।

(भरत डोगरा, राष्ट्रीय सहारा, 8 नवम्बर 2008)

पुलिस का सुधार

पुलिस केवल अपने पास संसाधनों और सुविधाओं की कमी की बात करके पल्ला झाड़ लेती है । कुल मिलाकर उसका मतलब यह होता है कि हमारा सुधार पूरी तरह सरकार की कृपा पर निर्भर है, लेकिन सच तो यह है कि किसी का भी सुधरना किसी पर निर्भर नहीं है । पुलिस अगर अपनी छवि सुधारना चाहती है तो उसे यह काम खुद ही करना होगा । इसके लिए ज़रूरत सुविधाओं और संसाधनों की उतनी नहीं, जितनी इच्छाशक्ति की है । यह इच्छाशक्ति उसे कहीं और से नहीं, खुद अपने भीतर से लानी पड़ेगी । पुलिस को यह बात अब अपने दिमाग़ से निकाल देनी चाहिए कि वह ऐसे ही दमनचक्र चलाती रहेगी और लोग सहते रहेंगे ।

(निशिकान्त ठाकुर, दैनिक जागरण, 11 नवम्बर 2008)

शिक्षा की गुणवत्ता

यदि केन्द्रीय सत्ता 6000 मॉडल स्कूलों के ज़रिये छात्रों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने के प्रति संकल्पबद्ध है तो उसे कुछ और क़दम उठाने होंगे । सबसे पहले तो उसे यह सुनिश्चित करना होगा कि संपूर्ण सरकारी शिक्षा व्यवस्था में गुणवत्ता का स्तर सुधरे । यह काम केन्द्र व राज्य, दोनों के स्तर पर होना चाहिए । केन्द्रीय सत्ता और राज्य सरकारें इससे अच्छी तरह अवगत हैं कि सरकारी विद्यालयों में शिक्षा की गुणवत्ता का स्तर ऊपर उठने का नाम नहीं ले रहा ।

(संपादकीय, दैनिक जागरण, 8 नवम्बर 2008)

पुलिस चौकी

आख़िर कौन-सी ताक़तें हैं, जो हिन्दू-मुसलमान, हिन्दू-ईसाई और हिन्दू-सिख के नाम पर देश के लोगों के बीच लकीरें खींच रहे हैं । कहीं ये ताक़तें विदेशी खुफ़िया एजेंसियों के इशारे पर तो काम नहीं कर रही हैं, जो भारत को तोड़ना चाहती हैं, ताकि वे भारत का इस्तेमाल अपनी ताक़त बढ़ाने के लिए कर सकें ? दूसरे लफ़्ज़ों में, वे भारत को ईरान, पाकिस्तान और बाक़ी इस्लामी देशों के ख़िलाफ़ अपनी पुलिस चौकी के रूप में तब्दील कर देना चाहती हैं ।

(संतोष भारतीय, राष्ट्रीय सहारा, 10 नवम्बर 2008)

सत्ता का रंग

ओबामा की अस्ली परीक्षा यह है कि वे एक ऐसे वर्ल्ड ऑर्डर में काले और गोरे, ईसाई और मुस्लिम को बराबरी का दर्जा मिल सके । वे ऐसी दुनिया बनाने में तत्पर हों, जिसमें एक अमेरिकी नागरिक या अमेरिका को भी जीने का उतना ही हक़ हो, जितना कि भारतीय को या भारत अथवा ईरान या दक्षिण अफ़्रीक़ा को । इसी से परखा जा सकेगा कि सिर्फ़ अमेरिका की स्किन का कलर ही बदला है या फिर उसके चरित्र का कंटेंट भी बदल गया है, जैसी कि मार्टिन लूथर किंग ने कल्पना की थी । या फ़िर इतिहास फिर एक बार अपने को दोहराएगा कि सत्ता का एक अपना चरित्र होता है । उसका अपना एक रंग होता है और उसका स्किन के उजलेपन या कालेपन से कोई रिश्ता नहीं होता ।

(स्वतंत्र कुमार जैन, नवभारत टाइम्स, 11 नवम्बर 2008)

भेंटवार्ता

गुजरात के आकाश से काले साये अवश्य छटेंगे : डॉ॰ शकील अंसारी



एसोसिएशन फॉर प्रोटेक्शन ऑफ़ सिविल राइट्स (APCR), गुजरात के प्रभारी डॉ॰ शकील अहमद अंसारी के पिछले दिनों दिल्ली आगमन पर 'कान्ति' के संपादक ने उनसे विशेषकर गुजरात की ताज़ा परिस्थितियों के बारे में बातचीत की । प्रस्तुत हैं इसके प्रमुख अंश :

● क्या गुजरात में मोदी सरकार की वर्तमान नीतियों में कोई परिवर्तन आया है या वे पूर्ववत हैं ?

उत्तर : मोदी सरकार की पूर्व की नीतियां आज भी जारी हैं । उनमें परिवर्तन अगर कहें तो इतना है कि 2002 के मुस्लिम संहार की पुनरावृत्ति नहीं हुई है, लेकिन विभिन्न स्तरों पर मुसलमानों को प्रताड़ित करना और उनके लिए उन्नति-प्रगति के मार्ग में अनवरत अवरोध उत्पन्न करने के दुष्कर्मों में कोई कमी नहीं आयी है ।

● हिंसा पीड़ितों को राहत-पुनर्वास एवं हिंसकों व अपराधियों के ख़िलाफ़ क्या अब राज्य सरकार गंभीर है ? क्या सुप्रीम कोर्ट के आदेशों का उस पर कोई विशेष प्रभाव पड़ता दीख रहा है ?

उत्तर : जहां तक हिंसा पीड़ितों को राहत पहुंचाने एवं उनके पुनर्वास का प्रश्न है, वह तथ्य यह है कि सरकारी स्तर पर कभी नहीं हुआ यहां तक केन्द्रीय 'पैकेज' को भी मोदी सरकार ने लौटा दिया । हिंसा पीड़ितों की संख्या के 98 प्रतिशत लोग मुसलमान हैं । भाजपा और मोदी सरकार अलग-अलग तो है नहीं । इनका मुस्लिम विरोधी रवैया जग-ज़ाहिर है । सही बात तो यह है कि मोदी सरकार हिंसकों व अपराधियों की संरक्षक है । अलबत्ता विवशता में उसे कुछ क़दम उठाने पड़े हैं । निश्चय ही ये क़दम सुप्रीम कोर्ट के आदेशों के तहत उठाने पड़े, लेकिन हमारे देश में न्यायपालिका के कार्यों की जो रफ़्तार है, उससे सभी अवगत हैं ।

● नानावती कमीशन के बारे में आपका क्या कहना है ?

उत्तर : इस जांच का मुसलमान शुरू से ही विरोध करते रहे हैं । इस जांच में जस्टिस शाह को भी शामिल किया गया था, जिनकी मृत्यु हो जाने पर जस्टिस मेहता शामिल किये गये । ये सभी मोदी सरकार के शुरू से ही पक्षकार रहे हैं, इसलिए इस जांच को मुसलमान पहले ही दिन से रद्द करके इसे ढकोसला क़रार दे चुके थे ।

● राज्य सरकार पर निर्दोष मुसलमानों की अंधाधुंध गिरफ़्तारी करने के आरोप लगते रहे हैं, इसकी क्या सच्चाई है ?

उत्तर : यह सच है कि राज्य सरकार का रवैया तटस्थ और लोकतांत्रिक नहीं है । मुसलमानों की धरपकड़ और गिरफ़्तारियां अब भी की जा रही हैं, लेकिन अब मीडिया में ये सारी चीज़ें नहीं आ पाती हैं । राज्य सरकार की प्रथम दिन से यह कोशिश है कि किसी भी मुसलमान आरोपी की ज़मानत न होने पाये ।

● गोधरा कांड में बहुत-से मुसलमान पोटा के तहत जेल में बन्द हैं । सुप्रीम कोर्ट के इस ताज़ा फ़ैसले से कि राज्य सरकार पोटा रिव्यू कमेटी की अनुशंसाओं को मानने के लिए बाध्य है, निर्दोष मुसलमानों को क्या कोई राहत मिली है और उनकी ज़मानत के सिलसिले में क्या कोई सकारात्मक प्रगति हुई है ?

उत्तर : पोटा रिव्यू कमेटी ने

गोधरा के आरोपियों पर से पोटा हटाने की अनुशंसा की थी, जिसे मोदी सरकार ने मानने से इन्कार कर दिया था । ताज़ा सूरतेहाल यह है कि रिव्यू कमेटी की इस अनुशंसा के विरुद्ध गुजरात हाईकोर्ट में एक याचिका लंबित है । इसलिए तत्काल सुप्रीम कोर्ट के आदेश का परिणाम नहीं आने वाला । हाईकोर्ट का फ़ैसला आने पर लाभ मिल सकता है, क्योंकि फिर सुप्रीम कोर्ट जाने का मार्ग प्रशस्त होगा । इस बीच पोटा के आरोपियों की ज़मानत पर सुप्रीम कोर्ट चाहे तो राहत दे सकती है ।

● गुजरात में कांग्रेस की क्या स्थिति है ?

उत्तर : वास्तव में गुजरात में दो ही पार्टियां हैं–भाजपा और कांग्रेस । गुजरात के कांग्रेसियों बहुसंख्या गांधी-वादी है, जो राज्य सरकार के ज़रिये दबाये और कुचले जा चुके हैं । उनमें 'जान' बाक़ी नहीं रही । केन्द्र की यू॰पी॰ए॰ से गुजरात के मुसलमानों को जो आशाएं थीं, वे भी पूरी नहीं हुईं ।

● और स्वयं सेवी संगठन ?

उत्तर : इनका रोल किसी क़दर सराहनीय है, लेकिन इनकी विवशता यह है कि हिंसापीड़ितों (मुसलमानों) के समर्थक नहीं हो सकते । इनके अपने स्वार्थ हैं, जो किसी हद तक उन्हें हिन्दुत्ववादी बना रहे हैं !

● क्या ऐसे में मुसलमानों के लिए गुजरात में ज़मीन तंग होती नज़र आ रही है ?

उत्तर : यह कहना ठीक नहीं है, बल्कि वहां मुसलमानों के लिए चुनौतियां कुछ अधिक हैं । राज्य के मुसलमानों में जो एका है, वह उल्लेखनीय और सराहनीय है । हम सब मिल-जुलकर लोगों की भलाई और कल्याण के कामों में लगे हुए हैं । APCR के ज़रिये भी लोगों में जागरूकता लायी जा रही है । गुजराती लोग मुलत: साम्प्रदायिक नहीं हैं । इस प्रकार हम कह सकते हैं कि संकट के जो काले साये गुजरात के आकाश में मंडरा रहे हैं, वे अवश्य छटेंगे ।

क़ुरबानी का औचित्य

(पृष्ठ 32 का शेष)

समय अल्लाह का नाम लेना और संबंधित दुआ पढ़ना अनिवार्य है, तभी मांस भोज्य होता है । मांस के फ़ायदे आयुर्वेद में भी गिनाये गये हैं । आयुर्वेद के प्रसिद्ध ग्रंथ ''भाव प्रकाश निघण्टौ'' में है–

मांस वातहरं सर्व बृहणं बलपुष्टिकृत्।
प्रीणनं गुरु हृद्यण्च मधुर रसपाकयो: ॥

अर्थात, अच्छे मांस वायुनाशक, धातुवर्धक, बलवर्धक, तृप्तिदायक, हृदय को लाभदायक, रस और पाक में मधुर हैं ।

अत: चिकित्सा विज्ञान की दृष्टि से भी मांसाहार मानव शरीर के लिए लाभकारी है । वैसे भी यह मानव-प्रकृति के अनुकूल है । इसके गुणों को जानकर ही आर्य समाज का एक वर्ग (कॉलेज पार्टी) मांसाहारी रहा है । (हिन्दू धर्मकोश, राजबली पांडे, पृ॰ 90) आज भी दुनिया में ऐसे भू-भाग हैं, जहां भोजन के रूप में मांस ही उपलब्ध है । जीवों के कथित प्रेमियों को चाहिए कि वे निर्दोष इन्सानों के संहार को रोकने में अपनी ऊर्जा लगाएं, ताकि उनका श्रम मानवता के हित में लग सके ।

Prop : Abid Hussain
09413037652
09413037669

Shop : Mujahid Hussain
09214747172

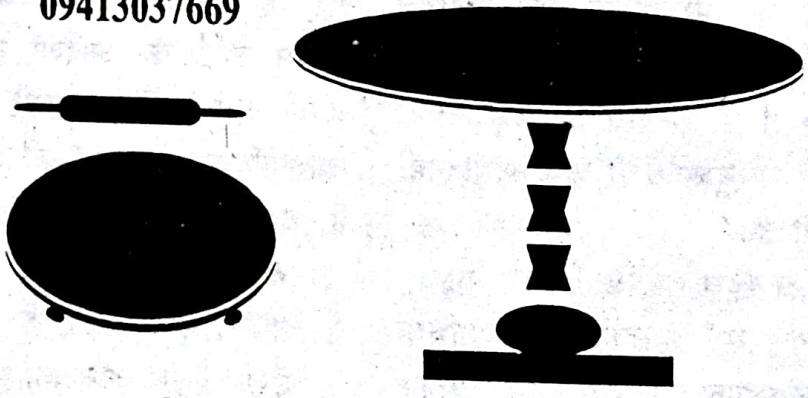

कान्ति मार्बल हैंडीक्राफ्ट

सभी प्रकार के वन पीस और ज्वाइंट पीस चकलों के निर्माता व थोक विक्रेता, मार्बल के फव्वारे तथा टेबल, टेलीफ़ोन स्टेंड, नोजल लैंप, गमले, घड़ी व फैंसी आइटम

Shop : Hotel Moti Mahal, Manglana Road, Makrana-341505
Fact : Bypass Mor, Opp : Sai Kirpa Petrol Pump, Makrana Road, Borawad (Raj.)

देश की गुप्तचर एजेंसियों की कार्यप्रणाली फॉसीवादी शक्तियों के एजेंडे पर

● इंजीनियर मुहम्मद सलीम

फॉसीवादी शक्तियां अपने भड़काऊ एवं ज़हरीले बयानों से न केवल अल्पसंख्यकों को डराने का प्रयत्न कर रही हैं बल्कि बहुसंख्यक समुदाय को भयभीत करके उनको अल्पसंख्यकों के विरुद्ध खड़ा करने की कोशिश भी कर रही है ।

फॉसीवादी शक्तियों का अस्ल निशाना देश का हिन्दू बहुसंख्यक समुदाय है । वे चाहते हैं कि अधिकांश हिन्दू उनके इशारे पर चलने लगें और उनके मुस्लिम विरोधी मुहिम का हिस्सा बन जाएं । वे उनको बताना चाहते हैं कि मुसलमान कितना ख़तरनाक होता है । देश में फॉसीवादी शक्तियों का नेतृत्व करने वाला संगठन आर०एस०एस० यह चाहता है कि इस देश का बहुसंख्यक समुदाय मुस्लिम विरोधी हो जाए । इस योजना के तहत समय-समय पर भड़काऊ एवं ज़हरीले बयानात जारी किये जाते हैं ।

इस तरह के बयानों को प्रकाशित भी किया जाता है । टी०वी० और रेडियो पर प्रसारित भी होता है । लेकिन हमारी गुप्तचर एजेंसियां और सत्ता में बैठी सरकारें इसका नोटिस नहीं लेतीं । ऐसा लगता है कि सरकार, पुलिस और गुप्तचर एजेंसियां सब इन फॉसीवादी शक्तियों से भयभीत हैं या उन्हीं के एजेंडे पर काम कर रही हैं ।

ऐसी स्थिति में देश के आम नागरिकों की यह ज़िम्मेदारी बनती है कि इस ख़तरे से देश को बचाने में अपनी भूमिका निभाएं । देशवासियों में एक बड़ी संख्या सेक्युलर लोगों की है । उनको इसके ख़िलाफ़ आवाज़ बुलंद करनी चाहिए । हमारे देश के अधिकांश लोग अब भी इस तरह की चीज़ों को पसन्द नहीं करते जिस तरह की चीज़ें आर०एस० एस० और विश्व हिन्दू परिषद आदि फैलाना चाहते हैं ।

दूसरी महत्वपूर्ण बात यह है कि हमारे देश में मानवाधिकार से जुड़ी संस्थाओं और सामाजिक संस्थाओं का एक बड़ा नेटवर्क मौजूद है । ये समय-समय पर जुल्मों ज़्यादती के ख़िलाफ़ आवाज़ उठाते रहते हैं । उनकी कोशिशों से गुजरात जैसे राज्यों में मुक़दमों की फाइलें खोली जाती हैं और अपराधियों पर कार्रवाइयों की शुरुआत होती है । यद्यपि इस तरह की कोशिशों को जिस तरह का जनसमर्थन मिलना चाहिए वैसा नहीं मिला है । लोग अभी भी डरे और सहमे हुए हैं और यही फॉसीवादी शक्तियां चाहती हैं ।

किसी भी बड़ी आतंकवादी घटना के बाद कुछ नाम ऐसे ज़रूर आते हैं जिनसे ग़ैर-मुस्लिमों के लिप्त होने की सूचना मिलती है । लेकिन मीडियां और जांच एजेंसियां उस ओर कोई ध्यान नहीं देतीं । यह सवाल हमने राजस्थान की उच्च पुलिस अधिकारियों से किया ।

राजस्थान बम धमाके के बाद एक विजय नामक व्यक्ति के बारे में मीडिया ने ख़बर दी । उस व्यक्ति ने पुलिस को बताया कि मैंने ही इस घटना को अंजाम दिया है और यह भी बताया कि मीना नाम की एक महिला है जिसके पास भारी मात्रा में विस्फोटक पदार्थ मौजूद हैं, लेकिन पूछने पर भी पुलिस उसके बारे में कुछ भी नहीं बता रही है ।

एक आम मुसलमान को तो केवल सन्देह के आधार पर कई-कई

एक आम मुसलमान को तो केवल सन्देह के आधार पर कई-कई दिनों तक ग़ैर क़ानूनी तौर पर हिरासत में रखा जाता है लेकिन वहीं एक व्यक्ति को अपराध स्वीकार कर लेने के बावजूद उसकी कोई सूचना नहीं दी जाती । सिर्फ़ यह कह दिया जाता है कि वह मानसिक रूप से विक्षिप्त था । हमारे इस प्रश्न के जवाब में उच्च अधिकारी कोई संतोषजनक जवाब न दे सके ।

दिनों तक ग़ैर क़ानूनी तौर पर हिरासत में रखा जाता है लेकिन वहीं एक व्यक्ति को अपराध स्वीकार कर लेने के बावजूद उसकी कोई सूचना नहीं दी जाती । सिर्फ़ यह कह दिया जाता है कि वह मानसिक रूप से विक्षिप्त था । हमारे इस प्रश्न के जवाब में उच्च अधिकारी कोई संतोषजनक जवाब न दे सके । इन चीज़ों से हमारा यह संदेह लगभग यक़ीन में बदलता जा रहा है कि हमारी पुलिस और जांच एजेंसियां उन शक्तियों के साथ मिल गयी हैं जो यह आतंकवादी कार्रवाइयां अंजाम दे रही हैं ।

इन घटनाओं के विश्लेषण से यह भी पता चलता है कि हमारी जांच एजेंसियां अपराधियों को पकड़ना नहीं चाहतीं । हमें इस बात का भी सन्देह है कि इन एजेंसियों को अच्छी तरह पता है कि इन धमाकों के पीछे कौन-सी शक्तियां काम कर रही हैं । यदि हमारा यह सन्देह सही है तो यह हमारे देश के लिए बहुत बड़ा ख़तरा है । जिनका काम अपराधियों को पकड़ना है वे अपराधियों को बचाने में लगी हुई हैं । हमारी इस आशंका को इसलिए भी बल मिलता है क्योंकि हमारी इन्टेलिजेंस एजेंसियां 'मोसाद' और 'सी॰आई॰ए॰' जैसी ख़तरनाक एजेंसियों से सहयोग एवं प्रशिक्षण ले रही हैं ।

'मोसाद' जिसका पूरा इतिहास ही इस्लाम और मुस्लिम विरोध पर टिका हुआ है वह हमारी इन्टेलिजेंस एजेंसियों को कैसा प्रशिक्षण दे सकती हैं, हम अच्छी तरह समझ सकते हैं । यही कारण है कि जब से इन अन्तर्राष्ट्रीय एजेंसियों का सहयोग हमारे देश ने लेना शुरू किया है तब से बम धमाकों का सिलसिला शुरू हो गया है । इस तरह की विध्वंसक कार्रवाई के ज़रिया अन्तर्राष्ट्रीय शक्तियां इस देश में साम्प्रदायिक घृणा फैलाकर देश को कमज़ोर करना चाहती हैं ।

कांग्रेस अपने आपको सेक्युलर कहती है । इसका उल्लेख उसके लिखित संविधान में भी है । मगर व्यवहार में कांग्रेस सेक्युलर नहीं है । क्योंकि सबसे पहले इसराईल को हमारे देश में प्रवेश करने का अवसर कांग्रेस की नरसिंह राव सरकार में दिया गया । इसराईल से राजनयिक संबंध स्थापित किये गये । फ़िलिस्तीन के बारे में हमारे देश की नीति में बदलाव आया । उसी समय से ये एजेंसियां इसराईल के सहयोग से हमारे देश में फॉसीवाद का जाल बिछा रही है ।

कांग्रेस की ही यह चाल थी कि मुसलमानों को आतंकित करने के लिए आर॰एस॰एस॰ को छूट दी जाए । देश में साम्प्रदायिक दंगे भड़के और कांग्रेस फिर मुसलमानों को यह कहकर अपने पास बुलाये कि देखो ये आर॰एस॰एस॰ के लोग आपके ख़िलाफ़ हैं और हम आपकी रक्षा करने वाले हैं ।

कांग्रेस अन्दर से यह चाहती थी कि साम्प्रदायिक दंगे हों और मुसलमान कमज़ोर हों । वे हक़ की आवाज़ उठाने योग्य न रहें और हमेशा उनकी पनाह में रहें । गुजरात नरसंहार (2002) में कांग्रेस पार्टी ने कोई आवाज़ नहीं उठायी । कुछ रिपोर्टें तो ऐसी भी हैं कि दंगाइयों का नेतृत्व करने वालों में कुछ कांग्रेसी भी शामिल थे ।

कांग्रेस को भय है कि यदि वह शिव सेना, बजरंग दल और आर॰एस॰ एस॰ के ख़िलाफ़ बात करेंगे तो इससे उसका राजनीतिक नुक़सान होगा और यदि नहीं करेंगे तो मुसलमान नाराज़ होंगे ।

बाबरी मस्जिद की शहादत के मौक़े पर जमाअत इस्लामी हिन्द पर भी पाबन्दी लगायी गयी थी । इस समय उनको 'सिमी' का नाम हाथ लग गया है, लेकिन आज तक वे सिमी के ख़िलाफ़ कुछ साबित नहीं कर सके ।

अगर सिमी के लोग कुछ भावुक बयानात जारी करते हैं तो उनके ख़िलाफ़ क़ानून के अनुसार कार्रवाई होनी चाहिए लेकिन उससे कहीं अधिक ख़तरनाक क़िस्म की चीज़ें बजरंग दल, शिव सेना और आर॰एस॰ एस॰ के लोग कर रहे हैं । खुलेआम ताक़त का प्रदर्शन कर रहे हैं । अभी भारत बन्द के दौरान जिस तरह के हिंसक प्रदर्शन हुए उन पर यू॰पी॰ए॰ सरकार ने कोई कार्रवाई नहीं की । इसके मुक़ाबले मुसलमानों के ख़िलाफ़ कार्रवाई करना अधिक आसान लगता है । कांग्रेस की इस नीति से देश को बहुत नुक़सान पहुंचा है । कांग्रेस को अपनी नीति बदलनी होगी या इस देश के शांतिप्रिय नागरिकों को इसका बदल ढूंढ़ना होगा । जमाअत इस्लामी हिन्द को इसमें प्रभावकारी भूमिका निभानी चाहिए । यदि जमाअत कोशिश करे तो भ्रष्ट राजनीतिक दलों का बदल संभव हो सकता है ।

प्रस्तुति : **अशरफ़ बस्तवी**

न्याय की दुनिया

❖ ख़ुर्रम मुराद

हज़रत अम्र (रज़ि॰) उत्तेजित हो उठे और उनका शरीर कांपने लगा। उन्होंने कहा, "तुम मूर्ख हो। तुम मुनाफ़िक़ (मिथ्याचारी) हो।"

ये शब्द सुनते ही मजलिस पर ख़ामोशी छा गयी और आश्चर्य से हर एक की सांसें थम गयीं और उन्हें अत्यंत दुख हुआ। क्या हज़रत अम्र (रज़ि॰) बिना किसी प्रमाण के तजीबी नामक नवमुस्लिम पर मिथ्याचार का आरोप लगा सकते हैं ? हज़रत अम्र बिन अल-आस (रज़ि॰) सेना के जनरल रह चुके थे और अब उन्हें मिस्र का गवर्नर नियुक्त किया गया था। लड़ाई के दिनों में उन्होंने अपने आपको एक महान योद्धा सिद्ध किया था। परंतु वे कभी-कभी आपे से बाहर हो जाते थे और ऐसी बातें मुंह से निकल जातीं, जिनका कोई अर्थ नहीं होता था। लेकिन इस्लाम में मिथ्याचार बहुत बड़ा पाप है। एक मुस्लिम पर मिथ्याचार का आरोप सबसे बड़ा अपमान है। इससे तजीबी के यश और प्रतिष्ठा को आघात पहुंचा था।

ख़ामोशी अत्यंत गहरी हो गयी, क्योंकि हर एक तजीबी का उत्तर सुंनना चाहता था। तजीबी का चेहरा पीला पड़ गया और अम्र की ओर रुख़ करते हुए उसने अत्यंत धीमी आवाज़ में कहा, "अल्लाह की क़सम, मैं इन लोगों को गवाह ठहराते हुए कहता हूं कि जब से मैं मुसलमान हुआ हूं, मैं किसी मिथ्याचार में लिप्त नहीं हुआ। मैं उस समय तक न तो अपना सिर धोऊंगा और न ही उसमें तेल डालूंगा, जब तक कि मैं हज़रत उमर (रज़ि॰) के पास न पहुंच जाऊं और आज जो अपमानजनक व्यवहार मेरे साथ किया गया है, उसकी उन्हें सूचना न दे दूं।"

तजीबी मिस्र से मदीना के लिए चल पड़े और कई दिन की यात्रा के बाद मस्जिद नबवी पहुंचे। वहां उन्होंने नमाज़ें पढ़ीं और फिर हज़रत उमर (रज़ि॰) से भेंट की। तजीबी ने उन्हें, जो कुछ घटित हुआ और जो कुछ उनके साथ अन्याय हुआ था, उससे अवगत कराया। यह सुनकर हज़रत उमर (रज़ि॰) ने हज़रत अम्र को तुरंत एक पत्र इस प्रकार लिखा–

"हे अम्र, तजीबी के द्वारा मुझे मालूम हुआ कि आपने उसका अपमान किया है और लोगों के बीच उसे मिथ्याचारी कहा है। यदि आप दो गवाहों के द्वारा अपने इस आरोप की पुष्टि नहीं कर सकते कि तजीबी वास्तव में मिथ्याचारी है, तो यह आपके द्वारा किया एक अपमानजनक कार्य होगा। इस्लामी क़ानून में तजीबी को यह अधिकार है कि वह आपको 40 कोड़े मारे।"

हज़रत उमर (रज़ि॰) ने अपने दूत को पत्र दिया और दूत तजीबी के साथ मिस्र गया। मिस्र पहुंचकर वहां की एक मंस्जिद में दोनों व्यक्ति प्रतीक्षा करने लगे, यहां तक कि लोग जमा हो गये, जिनमें हज़रत अम्र (रज़ि॰) भी शामिल थे।

फिर तजीबी खड़े हुए और बोले, "मैं आप लोगों को गवाह बनाते हुए कहा हूं कि हमारे गवर्नर अम्र बिन अल-आस ने बिना किसी औचित्य के मुझे इस मजलिस में मुनाफ़िक़ कहकर अपमानित किया है।"

जिन लोगों के समक्ष तजीबी पर आरोप लगाया गया था, वे सभी खड़े हो गये। फिर तजीबी ने हज़रत उमर (रज़ि॰) के दूत से पत्र लिया और हज़रत अम्र (रज़ि॰) के सचिव को दे दिया, जिसने उसे उच्च स्वर में पढ़ा। जब वह पत्र के उस हिस्से तक पहुंचा, जिसमें सज़ा का उल्लेख था तो हज़रत अम्र (रज़ि॰), उनके सचिव तथा उनके अनुचरगण–सभी घबरा उठे। यह क्या हो गया। क्या एक साधारण नव-मुस्लिम मिस्री गवर्नर और मिस्र के विजेता को कोड़े मारेगा, जिसे श्रेष्ठ क़बीला कुरैश का एक सरदार होने का भी श्रेय प्राप्त है ?

हज़रत अम्र (रज़ि॰) के सचिव हंसते हुए तजीबी के पास गये, और कहने लगे, "मेरे प्यारे भाई, निश्चय ही तुम्हारी इच्छा अपने गवर्नर को कोड़ा मारने की नहीं हो सकती ? तुम जानते ही हो कि हज़रत अम्र (रज़ि॰) ने बिना सोचे-समझे क्रोधावस्था में यह कह दिया था। निश्चय ही तुम मुनाफ़िक़ नहीं हो। फिर हमें इसकी इजाज़त दीजिये कि जो

कष्ट और अपमान आपका हुआ है, उसका मुआवज़ा हम आपको दें और हम आपको यक़ीन दिलाते हैं कि आप हमें बहुत अधिक उदार पाएंगे.....।''

इस क्षमा-याचना पर तजीबी को और चोट पहुंची और उनका क्रोध और भी बढ़ गया । उन्होंने ठंडे स्वर में उत्तर दिया, ''मैं नहीं चाहता कि मुझे मुआवज़ा मिले । एक सोने से भरा घर भी ऐसे अपमान का बदल नहीं हो सकता । मैं अम्र की प्रतीक्षा में हूं ।''

फिर तो लोग अधीर होने लगे । आख़िर इस आदमी का मामला क्या है ? वे कहने लगे, ''तजीबी बहुत हो चुका, तुम इस मामले को अधिक लंबा खींच रहे हो । जब अपने सचिव के द्वारा अम्र (रज़ि॰) ने माफ़ी मांग ली है, फिर भी तुम लोगों के बीच एक हास्यस्पद नाटक का दृश्य पेश करके अपने अहम को संतुष्ट करना क्यों चाहते हो ? इस प्रकार के बदले की आख़िर क्या उपयोगिता है ?''

इस पूरे समय हज़रत अम्र (रज़ि॰) चुपचाप अपने लोगों के साथ बैठे रहे । अंततः तजीबी पर स्पष्ट हो गया कि उसे न्याय मिलने को नहीं । उन्होंने कहा, ''मैं देखता हूं कि तुममें से कोई एक भी व्यक्ति हज़रत उमर (रज़ि॰) के आदेश को मानने के लिए तैयार नहीं है ।'' वे हज़रत उमर (रज़ि॰) के दूत को संकेत करते हुए मुड़े और मस्जिद से चले गये ।

इसके बाद हज़रत अम्र (रज़ि॰) ने अपनी स्थिति पर विचार किया । उन्होंने सोचा कि यदि तजीबी लौटकर हज़रत उमर (रज़ि॰) के पास जाते हैं, तो मुझे इससे भी बुरी सज़ा का सामना करना पड़ेगा । उन्होंने अपनी दाढ़ी पर ख़ामोशी से हाथ फेरा और फिर एक क्षण के बाद अपने एक आदमी की ओर रुख़ किया और हुक्म दिया, ''तजीबी और दूत को वापस बुलाओ ।''

जब दोनों लोग लौट आये, तो हज़रत अम्र (रज़ि॰) खड़े हुए । उन्होंने अपनी पगड़ी गरिमा के साथ उतार दी और तजीबी को अपना कोड़ा देते हुए उनके सामने बैठ गये और कहा, ''लो, कोड़े मारो । अम्र किसी आदमी के कोड़े की मार से नहीं डरता और न ही किसी के खिल्ली उड़ाने से ।''

देखने वालों की सांसें थम गयीं और वे इस प्रकार देख रहे थे जैसे उन्हें विश्वास न हो रहा हो । क्या ये वही हज़रत अम्र (रज़ि॰) हैं, जो सेनाध्यक्ष, गवर्नर, विजेता, सम्मानित क़बीले कुरैश के कुलीन व्यक्ति और नबी (सल्ल॰) के सहाबी (साथी) हैं, जो स्वयं ही साधारण मिस्री नव-मुस्लिम को इसकी अनुमति देने जा रहे हैं कि वह उनके ऊपर कोड़े बरसाये ?

तजीबी ऐसे वातावरण से तनिक भी प्रभावित नहीं हुए । उन्होंने कहा, ''हे अम्र, अब क्या तुम्हारा सारा अधिकार, तुम्हारी शक्ति और तुम्हारा प्रभाव, तुम्हारी अपनी ग़लतियों की सज़ा से तुम्हें बचा सकता है ?

हज़रत अम्र (रज़ि॰) तनिक भी विचलित न हुए । उन्होंने कहा, ''और अधिक समय नष्ट न करो । वही करो जिसका तुम्हें अधिकार मिला है ।''

तजीबी अपने सामने घुटने टेके हज़रत अम्र (रज़ि॰) को कुछ क्षण तक देखते रहे । फिर अपना सिर हिलाया और कोड़ा फेंक दिया और कहा, ''हे अम्र, मैं तुम्हें माफ़ करता हूं, मुझे मुआवज़ा नहीं चाहिए । मैं तो केवल यही दिखाना चाहता था कि इस्लाम में एक अत्यंत साधारण मुसलमान का आदर और सम्मान उतना ही क़ीमती है, जितना कि एक कमांडर और सरदार तथा गवर्नर का, जैसा कि आपका है ।''

और यह कहकर वे मस्जिद से चले गये ।

अनु॰ : **डॉ॰ जबीं अहमद**

अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) से किसी ने पूछा कि कमाई का कौन-सा ज़रिया सबसे अच्छा है ? आप (सल्ल॰) ने फ़रमाया, अपने हाथ से काम करना और ईमानदारी से व्यापार करना ।

प्रो॰ मुहम्मद इक़बाल रज़ा मोबाइल–09431291547

ग़ालिब स्टोर्स

(खाद्य सामग्रियों के थोक विक्रेता)

ठाकुरवाड़ी रोड, अररिया, बिहार

स्वास्थ्य चर्चा

स्वच्छंदता पर रोक ही एड्स का उपचार

■ मुहम्मद यूसुफ़
(शाहदरा, दिल्ली)

संसार में 1 दिसम्बर को 'एड्स दिवस' के रूप में मनाया जाता है। आज विश्व के सम्मुख एड्स एक अत्यंत भयावह एवं जटिल चुनौती बना हुआ है। यह ऐसा भयंकर यौन रोग है, जो मनुष्य की भोगवादी प्रवृत्ति तथा काम स्वच्छंदता के कारण पनपता है। यह रोग मनुष्य को स्मरण कराता है कि दुष्कर्मों न अनियंत्रित जीवन शैली का परिणाम कितना कष्टदायक होता है। एड्स सर्वप्रथम 1981 में अमेरिका में प्रकाश में आया था, जो अब समूचे विश्व में एक भयानक महामारी का रूप धारण कर चुका है।

अमेरिका की जॉन हॉपकिन्स यूनीवर्सिटी स्कूल ऑफ पब्लिक हेल्थ एवं WHO की रिपोर्ट के अनुसार भारत विश्व के सर्वाधिक एच॰आई॰वी॰ संक्रमित व्यक्तियों का देश बन चुका है। भारत की यह दशा अत्यंत गंभीर है।

एड्स (Aquired Immuno deficiency Syndrome) एक यौन रोग है जो Human Immuno Deficiency Virus (एच॰आई॰वी॰) द्वारा फैलता है। इस विषाणु की खोज सर्वप्रथम सन 1983-84 ई॰ में अमेरिकी तथा फ्रांसीसी वैज्ञानिकों ने स्वतंत्र रूप से की थी। ऐसा माना जाता है कि यह विषाणु सर्वप्रथम सन 1960 ई॰ में बन्दरों से मानवजाति में प्रत्यारोपित हुआ था। एच॰आई॰वी॰ शरीर की प्राकृतिक रोग निरोधक क्षमता को पूर्ण नष्ट कर देता है। एड्स मुख्यत: रक्त अथवा वीर्य द्वारा ही फैलता है तथा इसके मुख्य कारण हैं : असुरक्षित यौन संबंध, संक्रमित सूई, संक्रमित रक्त, मादक दवाओं के इंजेक्शन, अंग प्रत्यारोपण तथा मां से होने वाले शिशु को। परन्तु 75 प्रतिशत संक्रमण असुरक्षित यौन संबंधों के कारण ही होता है। यह एक चिकित्साहीन रोग है तथा केवल परिरक्षा व निवारण द्वारा हीं इसे रोका जा सकता है।

भारत में एड्स की पहली घटना 1986 में प्रकाश में आयी थी, तब से आज तक यह रोग देश में तीव्र गति से फैल रहा है। इंडियन कौंसिल ऑफ मेडिकल रिसर्च (ICMR) ने सन 1986 में ही एड्स की रोकथाम के लिए 'टास्क फोर्स' का गठन किया था। इसके अतिरिक्त कई सरकारी व स्वयंसेवी संस्थाएं भी एड्स के प्रति लोगों को जागरूक करने का प्रयास कर रही हैं, लेकिन इसे शिक्षा के पाठ्यक्रमों में शामिल करना अनुचित है।

एड्स के विषय में विचारणीय प्रश्न यह है कि लगातार प्रयासों तथा उचित जागरूकता के उपरांत भी यह जानलेवा रोग विकराल रूप धारण करता जा रहा है ? वर्तमान समय में मनुष्य अपनी यौन भावनाओं को नियंत्रित रखने में असमर्थ क्यों है ? अवलोकन करते हैं कि इसमें आधुनिक व्यवस्था की क्या भूमिका है तथा इसके पनपने के लिए निर्लज्ज मानसिकता तथा कामुक प्रवृत्ति किस प्रकार से दोषी है ? भारत एड्स को नियंत्रण देने वाले वासनात्मक तत्वों को बढ़ावा देने में सरकार सदैव अग्रणी रही है। देश में 7 सितम्बर 1966 ई॰ में लागू "अश्लीलता विरोधी क़ानून" (292 I.P.O) (2) exception-a (1) तथा आई॰आर॰डब्ल्यू (पी) एक्ट, 1986 का संदर्भ लें। माननीय उच्चतम न्यायालय ने चन्द्रकांत कल्याण दास काकोड़कर बनाम महाराष्ट्र राज्य में 25 अगस्त 1966 के फुल बैच निर्णय (A.I.R. (SC) 1970, पेज-1390) तथा समरेश बोस आदि बनाम अमोल मित्रा आदि में 24 सितम्बर 1985 के फुल बैच निर्णय (Cr. L.R.) (SC) 1985, पेज 524) में लिखा है कि "जनता के आचार-विचार जो 25 वर्ष पहले थे अब बदल चुके हैं।

वर्तमान समय में उचित सेक्स-रोमांस से परिपूर्ण साहित्य को अश्लील नहीं माना जा सकता व आजकल के साहित्य-सिनेमा सोसायटी के ट्रेंड को ध्यान में रखना होगा न कि पुराने ढंग-विचारों के साथ विचार होगा। और यह भी कि रचना-सामग्री को पूरा पढ़कर ही उसके अच्छे-बुरे असर का निर्णय करना चाहिए न कि किसी ख़ास पैराग्राफ को पढ़कर एवं किसी भी पुस्तक में चुम्बन,

महिला के शरीर के अंगों या संभोग के वर्णन के आधार पर ही उसे अश्लील क़रार नहीं दिया जा सकता ।'' यही कारण है कि आज बाज़ार में अश्लील साहित्य अथवा पुस्तकों की भरमार है । इसे प्रत्येक आयु का वर्ग पढ़ रहा है चाहे वह स्त्री हो या पुरुष, बालक हो या बालिका । इस साहित्य को पढ़ने के उपरांत मनुष्य की संवेदनशील कामुक प्रवृत्ति भड़क उठती है और यौन भावनाओं को नियंत्रित रखना लगभग असंभव हो जाता है । उत्तेजित होकर मनुष्य असुरक्षित यौन संबंध स्थापित करने पर विवश हो जाता है, जिससे एड्स तथा दूसरे यौन रोगों को बढ़ावा मिलता है ।

अश्लीलता व नग्नता का दूसरा रूप है सिनेमा, टी०वी०, फैशन शो तथा सौन्दर्य प्रतियोगिताएं । आज सिनेमा एवं टी०वी० को ज्ञान व मनोरंजन का सर्वश्रेष्ठ माध्यम समझा जाता है परन्तु वर्तमान समय में सिनेमा ने स्त्री-पुरुषों के चरित्र भ्रष्ट कर उनमें गन्दी आदतें डाल दी हैं ।

आज के युग में भारत तथा विदेशों में ऐसे ''फैशन शो'' एवं सौन्दर्य प्रतियोगिताओं का आयोजन हो रहा है जिनका लक्ष्य केवल स्त्रियों का उन्मादक तथा नग्न रूप दिखाकर पुरुषों की वासना को शांत करना है । 5 दिसम्बर 1999 को लंदन के ओलंपिया थियेटर में आयोजित ''विश्व सुन्दर प्रतियोगिता'' का विरोध करते हुए 'महिला समिति' के एकजुट ने थियेटर के बाहर प्रदर्शन किया तथा "Stop this sexist cattle market" के नारे भी लगाए थे ।

भारत में एड्स की जड़ें जमाने का एक मुख्य कारण है 'वेश्यावृत्ति'। देश में वेश्यावृत्ति का प्रचलन विभिन्न रूपों में प्राचीन काल से ही रहा है । परन्तु पेशेवर रूप से इसका चलन मध्य प्रदेश से प्रारंभ होने का प्रमाण मिलता है । देश भर में अनगिनत लाइसेंसधारी व अवैध वेश्यालय सक्रिय हैं ।

वेश्यावृत्ति का एक आधुनिक रूप भी है 'कॉलगर्ल' प्रथा जो सम्मानीय एवं प्रतिष्ठित व्यक्तियों की सेवा हेतु उपलब्ध है । इसके अतिरिक्त मालिश घर (Massage Parlour) तथा समलैंगिक वेश्यालय भी प्रचलन में हैं । पत्रकार आकाश अरोड़ा के अनुसार ''दिल्ली में लगभग 50 पुरुष समलैंगिक वेश्यालय हैं जहां अधिकतर उद्योगपति, व्यापारी, वरिष्ठ पुलिस अधिकारी एवं मंत्री आदि ही जाते हैं ।''

विश्व में सर्वाधिक एड्स के रोगी भारत में होने के बावजूद सरकार की ओर से इसका इलाज विकसित करने की दिशा में कोई प्रयास नहीं किया जा रहा है । एम्स ने कई बार ऐसा टीका विकसित करने के लिए शोधकार्यों को आरंभ करने की इच्छा से सरकार से धन उपलब्ध कराये जाने की मांग भी की लेकिन सरकार ने इस ओर ध्यान नहीं दिया । इंडियन मेडिकल एसोसिएशन की 'एड्स कन्ट्रोल शाखा' के अनुसार, विश्व बैंक से विश्व स्वास्थ्य संगठन के द्वारा एड्स नियंत्रण के लिए मिलने वाली धनराशि में भी इलाज विकसित करने का कोई प्रावधान नहीं है । यह सारी राशि एड्स के प्रति लोगों को जागरूक करने के नाम पर ख़र्च होती है । किसी प्रकार के इलाज या दवा विकसित करने के लिए नहीं । इस पर प्रश्न उठता है कि क्या इलाज विकसित न करके जागरूकता की आड़ में समूचे देश को एड्स के द्वारा मौत के मुंह में जाने देना उचित है ?

आज एड्स के रूप में भारत सरकार के सम्मुख एक ज्वलंत समस्या मुंह फैलाये खड़ी है परन्तु लालफ़ीताशाही के चलते सरकार और समस्याओं की तरह एड्स को भी हल्के तौर पर ले रही है । एड्स भारतीयों की नैतिकता एवं सम्मान को धूमिल कर रहा है । यह रोग मानवजाति के नैतिक पतन का परिचायक है । आज एड्स का जो भयंकर रूप दिखायी दे रहा है उसके लिए हमारी शिक्षा-पद्धति दोषी है, दूसरे तीव्रता से बदलती हुई सामाजिक मान्यताओं और नैतिक मूल्यों के परिवर्तन के साथ इस प्रकार की समस्याओं का पनपना स्वाभाविक है ।

आज के युग में निवास और वासना के सौंदर्य ने मानव को मदांध कर दिया है । महिलाएं अब मां, बहन, पत्नी तथा पुत्री की जगह उपभोग की वस्तु समझी जाने लगी हैं । पुरुषों के समतुल्य चलने का स्वप्न दिखाकर आज के आधुनिक समाज ने भारतीय नारी में अश्लीलता, नग्नता एवं पर-पुरुषों के साथ घुलने-मिलने की आदत डाल दी है जिससे न केवल एड्स को बढ़ावा मिल रहा है वरन महिलाओं की प्रतिष्ठा तथा सम्मान को भी क्षति पहुंच रही है । (शेष पृष्ठ 47 पर)

भारत में इस्लाम-1

प्रस्तुति : **इरशाद अली ख़ान**

भारतवासियों और अरबवासियों के आपसी मधुर संबंध के बारे में श्री पंडित सुन्दर लाल जी अपनी पुस्तक "भारत में अंग्रेज़ी राज" जो सन 1928 ई॰ में प्रकाशित हुई, में लिखते हैं कि अरबों और भारतवासियों का संबंध अरबों के मुसलमान होने से बहुत पहले से अर्थात हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) के जन्म से कम से कम पांच सौ वर्ष पहले से चला आ रहा था । हज़रत ईसा के जन्म के समय से ही सैकड़ों, बल्कि हज़ारों अरब सौदागर (व्यापारी) भारत के पूर्वी और पश्चिमी बन्दरगाहों पर आकर उतरते थे । विशेषकर पश्चिम में चाल, कल्याण, सुपारा और मालाबार तट पर अरबों की अनेक बड़ी-बड़ी बस्तियों का ज़िक्र उस समय के इतिहास में आता है ।

हज़रत ईसा (अलैहि॰) के जन्म से पहले भी लंका और दक्षिण भारत में अरबों और ईरानियों की अनेक बस्तियां मौजूद थीं । अरब, ईरान, अफ़्रीक़ा और यूरोप के अनेक देशों के साथ भारत का उस समय जितना व्यापार था, अधिकतर अरब और ईरानी सैदागरों के ही हाथों में था । पंडित सुन्दर लालजी के अनुसार रोमन इतिहास लेखक लिखते हैं कि "रोम और यूनान के जो जहाज़ उन दिनों भारत आते-जाते थे, उनके भी नाविक अधिकतर अरब ही होते थे । भारत और चीन के बीच तिजारत का एक ख़ासा हिस्सा (विशेष भाग) अरबों के ही हाथ में था, जिसके कारण भारत के पूर्वी तट से भी लोग पूरी तरह परिचित थे, और वहां भी स्थान-स्थान पर इनकी अनेक बस्तियां आबाद थीं ।"

उस समय अरबों का मज़हब (धर्म) एक प्राचीन ढंग का सीधा-सा मज़हब था । वे अपने अलग-अलग क़बीलों के अलग-अलग देवी-देवताओं को मानते थे और उनकी मुर्तियों की पूजा करते थे । उस समय के अनेक सफ़रनामों (यात्राओं) से साबित (प्रमाणित) है कि ये अरब अत्यंत सरल स्वभाव और उदार चित होते थे । भारतवासियों से उनका मेल-जोल और प्रेम ख़ूब बढ़ा हुआ था और भारत में उनकी बस्तियां ख़ूब ख़ुशहाल थीं ।

अरबों के बारे में पूर्ण जानकारी प्राप्त करने हेतु अरब द्वीप की भौगोलिक परिस्थितियों के बारे में जानना अत्यंत आवश्यक है, ताकि उनके रहन-सहन, भाषा-शैली, धर्म आदि के बारे में जाना जा सके । डॉ॰ शाह अब्दुस्सलाम साहब की लिखित पुस्तक "इस्लाम का इतिहास" भाग-1, जो ऑल इंडिया मुस्लिम एजूकेशनल फाउंडेशन, लखनऊ से सन 1990 में प्रकाशित हुई, में लिखते हैं कि भौगोलिक परिस्थितियों के अनुसार अरब एक द्वीप है जिसके तीन तरफ़ पानी और एक ओर मैदान है । इसके पश्चिम में लाल सागर, पूरब में फ़ारस की खाड़ी, दक्षिण में हिन्द महासागर और उत्तर में इसकी सीमाएं शाम (सीरिया) से मिलती है ।

वर्गीकरण के आधार पर अरबों को तीन भागों में विभाजित किया गया है । 1. अरब वाइदा, 2. अरब आरिबा और 3. अरब मुस्तारिबा ।

1. अरब आरिबा, वे अरब थे जो सबसे पुराने क़बायली लोग थे, इस्लाम के आगमन के समय इनका अस्तित्व बाक़ी न था ।

2. अरब आरिबा, अरब के वास्तविक निवासी थे और यमन में आबाद थे, इनको क़हतानी कहा जाता था । ये इस्लाम के आगमन के समय अरब द्वीप में मौजूद थे ।

3. अरब मुस्तारिबा, अर्थात बनू इस्माईल और हज़रत इबराहीम (अलैहि॰) की औलाद में से जो लोग हिजाज़ में निवास करते थे । इस्लाम के आगमन के समय ये मौजूद थे और यही देश के असली निवासी थे । अदनानी क़बीलों का संबंध अरब मुस्तारिबा से है ।

अरब अपने रहन-सहन एवं आर्थिक स्थिति के आधार पर दो भागों में विभाजित किये जाते हैं ।

अरब द्वीप में अधिकतर लोग बद्दुई जीवन व्यतीत करते थे । बद्दु अरब की वास्तविक अरबी स्वभाव एवं अरब विशेषताओं से परिपूर्ण रहे हैं । डॉ॰ शाह अब्दुस्सलाम साहब आगे लिखते हैं कि अरब

बद्दू अरब द्वीप में साधारणतया रेगिस्तानी क्षेत्रों में रहते और खानाबदोशों (बंजारों) का जीवन व्यतीत करते थे। ये वर्षा और पानी की खोज में रहते थे, जहां पर पानी, हरियाली और उपजाऊ भूमि मिलती वहीं पर अपने जानवरों के साथ रहने लगते। इन्हीं जानवरों के ऊन, दूध से अपना काम चलाते और जब तक वहां पर हरियाली होती निवास करते, फिर पानी, हरियाली की खोज में दूसरे स्थान की तरफ़ प्रस्थान कर जाते। इसके अतिरिक्त अरब बद्दुओं के जीवन-यापन का दूसरा साधन लूटमार का माल था। वे अपने शत्रु क़बीलों पर आक्रमण करते रहते और उनके ऊंटों, स्त्रियों और बच्चों को पकड़ ले जाते। इसी प्रकार दूसरा क़बीला भी घात में रहता और अवसर पाकर अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करता।

इसके विपरीत हज़री अरब मिट्टी के घरों में रहते और मुख्य रूप से पारिवारिक और क़बायली जीवन व्यतीत करते थे तथा इनका मुख्य व्यवसाय खेती और व्यापार था। क़बीला उनकी सामाजिक जीवन की वह इकाई होती थी, जिस पर उनकी सम्पूर्ण सामाजिक व्यवस्था स्थापित रहती थी। इन क़बीलों में प्राय: पारिवारिक पक्षपात होता था, जिसके फलस्वरूप वह आपस में लड़ते रहते थे। कोई क़बीला दूसरे क़बीले का अधिकार और आधिपत्य सरलता से नहीं स्वीकार करता था। कभी-कभी युद्धीय हितों के कारण एक क़बीला दूसरे क़बीले से संधि कर लेता और दोनों एकताबद्ध हो जाते थे। इसमें ऐसा भी होता था कि शाक्तिशाली क़बीला निर्बल क़बीले के साथ एकताबद्ध हो जाने के बाद उस पर छा जाता था। और अपनी यश और ख्याति के सामने कभी-कभी उसकी यश और ख्याति को मिटा देता था।

इस प्रकार अरब के विभिन्न छोटे क़बीले दूसरे शक्तिशाली तथा प्रसिद्ध क़बीलों में विलीन हो गये और फिर उन्हीं नामों से पुकारे जाते रहे। ये लोग आपस में बड़ा सहयोग रखते थे। एक क़बीले के अन्दर के लोग आपस में एक-दूसरे की सहायता करना, अपना परमकर्तव्य समझते थे। अगर क़बीले के एक व्यक्ति से कोई ग़लती हो जाती, तो उसका परिणाम भुगतने के लिए पूरा क़बीला तैयार रहता। क़बीले में क़बीले का मुखिया ही सर्वोच्च शासक होता था। पूरा क़बीला उसकी बात को मानता तथा उसकी आज्ञा का पालन करता था।

अरबों में जहां बहुत-सी विशेषताएं थीं, वहीं इनमें बहुत-सी बुराइयां भी थीं। इनमें जुआ, शराब, बलात्कार जैसी बुराइयां भी थीं, लेकिन ये लोग इन बुराइयों को अच्छाइयां समझ कर करते थे। शराब तो जैसे इनकी घुट्टी में पड़ी थी। ये लोग शराब पीने का वर्णन बड़े गर्व से करते और इसमें धन व्यय करना उनके निकट दानशीलता का पहचान थी। स्त्रियों को ये लोग अत्यंत तिरस्कृत और निन्दा व घृणा का पात्र समझते थे। लड़कियों को जीवित दफ़न करने की परम्परा पड़ गयी थी, जो विशेष रूप से असद और तमीम के क़बीलों में अधिक थी। इस्लाम धर्म ने इस परम्परा के विरुद्ध ज़ोरदार संघर्ष किया और अंत में इस कुरूप और कुरीति परम्परा का अंत हुआ।

अरब मुसलमानों के भारत में आगमन से पूर्व उस समय के भारत की हालत को बयान कर देना भी आवश्यक है, ताकि आठवीं सदी के उस दौर में भारतवासियों के रहन-सहन, धर्म, भाषा के बारे में जानकारी प्राप्त हो सके। आठवीं सदी के भारत के हालात के बारे में पंडित सुन्दर लाल जी अपनी पुस्तक "भारत में अंग्रेज़ी राज" में लिखते हैं कि ईसा की सातवीं सदी के मध्य में सम्राट हर्षवर्धन की सत्ता का अंत हुआ। उत्तर भारत टुकड़े-टुकड़े होकर अनेक छोटे-छोटे राज्यों में बंट गया। रांजपूतों ने पश्चिम से चलकर उत्तर-पूर्व में और मध्य भारत में अनेक छोटी-छोटी रियासतें क़ायम कर लीं। अनेक नयी जातियां अपने आपको राजपूत कहने लगीं। यहां तक कि मुसलमानों के आने से ठीक पहले पंजाब से दक्षिण तक और बंगाल से अरब सागर तक क़रीब- क़रीब सारा देश अलग-अलग राजपूत सरदारों के शासन में आ गया। किन्तु कोई प्रधान केन्द्रीय शक्ति इन छोटी-बड़ी रियासतों को एक सूत्र में बांधने वाली न थी, और आये दिन इन तमाम रियासतों के बीच अपना-अपना राज्य बढ़ाने के लिए एक-दूसरे से संग्राम होते रहते थे। पुराने साम्राज्यों के केन्द्र मगध, पाटलिपुत्र, गया आदि खंडहर दिखायी दे रहे थे। वैशाली, कुशीनगर, कोड़िया, रामग्राम, कपिलवस्तु और श्रावस्ती, जिनके नाम बौद्ध इतिहास में मशहूर हो चुके थे, अब बरबाद दिखायी देते थे। और देश के

आर्थिक और राजनैतिक जीवन के दूसरे केन्द्रों ने उनकी जगह ले ली थी ।

धर्म के क्षेत्र में भी भारत का वह समय अवनति का समय था । बुद्ध की मृत्यु से ढाई सौ साल के अन्दर उस समय के बिगड़े हुए हिन्दू धर्म को भारत से निकालकर बौद्ध धर्म उसका स्थान ले चुका था । किन्तु जिन ब्राह्मण पुरोहितों और उच्च जातियों के विशेषाधिकारों पर बौद्ध धर्म ने आक्रमण किया था उनकी ओर से विद्रोह की आग बराबर सुलगती रही । धीरे-धीरे मूर्ति पूजा और प्राचीन हिन्दू कर्म कांड ने बौद्ध धर्म में भी प्रवेश करना शुरू किया । नतीजा यह हुआ कि धीरे-धीरे आजकल के, वैष्णव मत, शैव मत और तांत्रिक सम्प्रदाय ने मिलकर बौद्ध मत को भारत से निकालकर बाहर कर दिया तथा प्राचीन ब्राह्मण धर्म को फिर से उसकी जगह स्थापित कर दिया ।

पंडित सुन्दर लाल जी आगे लिखते हैं कि चीनी यात्री फ़ाहियान के समय में अर्थात पांचवीं सदी में उत्तर-पश्चिम भारत के अन्दर काबुल से मथुरा तक बौद्ध मत के हीनयान सम्प्रदाय का प्रचार अभी बाक़ी था, पर बाक़ी भारत से बौद्ध मत मिटता जा रहा था । दो सौ साल बाद जब प्रसिद्ध चीनी यात्री, ह्वेनसांग भारत पहुंचा, तो उसने देखा कि उत्तर में बौद्धों हीनयान की जगह महायान सम्प्रदाय ने ले ली है । ह्वेनसांग के बयान से मालूम होता है कि विशेष रूप से शिव की पूजा समस्त भारत में ज़ोरों के साथ फैलती जा रही थी । अयोध्या के पास उसे इस तरह के लोग भी मिले जो हर साल दुर्गा की मूर्ति के सामने आदमी की बलि चढ़ाया करते थे । सारांश यह कि राजनैतिक, धार्मिक और सामाजिक, तीनों दृष्टि से भारत उस समय अंधकार और अवनति की हालत में था । असंख्य छोटे-छोटे राज्य, एक-दूसरे के दुश्मन, सैकड़ों मत मतांतर और बेशुमार सदाचार के विरुद्ध कुरीतियां और अंधविश्वास फैल चुके थे, ऐसे दौर में भारत में इस्लाम का आगमन हुआ ।

संघ पर आरोप

रामविलास पासवान ने केन्द्रीय मानवसंसाधन विकास मंत्री अर्जुन सिंह को एक पत्र लिख में आर०एस० एस० द्वारा अपने स्कूलों में पढ़ाई जा रही पुस्तक 'आर०एस०एस०, स्कूल टेक्सट बुक्स एंड मर्डर ऑफ महात्मा गांधी' और केन्द्रीय शिक्षा सलाहकार बोर्ड की एक रिपोर्ट का हवाला देते हुए कहा है कि आर०एस०एस० इतिहास को मनगढ़ंत तरीक़े से तोड़-मरोड़ कर पेश कर बच्चों के दिमाग़ में घृणा और साम्प्रदायिक विचारों का ज़हर घोल रहा है ।

स्वच्छंदता पर रोक ही एड्स का उपचार

(पृष्ठ 44 का शेष)

जैसा कि सर्वमान्य है कि "परहेज ही एड्स की चिकित्सा है", तो इसे व्यवहार में किस प्रकार लाया जाए अथवा इसकी रोकथाम के लिए जो प्रयास आज किये जा रहे हैं, सार्थक हैं ?

स्पष्ट है कि एड्स एक यौन रोग है और यदि इसके विषय में खुलेआम बातचीत की जाएगी तो मानवजाति में व्याप्त स्वाभाविक सरलता एवं प्राकृतिक लज्जा समाप्त हो जाएगा जिससे वासनात्मक विचारों का जन्म होगा ।

विद्यालयों में बालकों को एड्स अथवा यौन शिक्षा से अवगत कराना भी त्रुटिपूर्ण है क्योंकि बाल मन अपरिपक्व व जिज्ञासु होता है और यौन शिक्षा से अवगत होने के बाद वे उसे व्यावहारिक जीवन में उपयोग करने का प्रयास करेंगे जिससे एड्स को बढ़ावा ही मिलेगा । प्रचार-प्रसार माध्यमों द्वारा इस रोग के विषय में बताना भी निरर्थक ही है, क्योंकि इससे एड्स की जागरूकता की आड़ में अश्लीलता को ही बढ़ावा मिलेगा । वैसे भी भारतीय मीडिया केवल व्यस्कों के योग्य ही रह गयी है । पत्र-पत्रिकाओं में तो अधिक से अधिक अश्लील तथा नग्न सामग्री प्रस्तुत करने की प्रतियोगिता हो रही है ।

एड्स की रोकथाम के लिए सरकार एवं स्वयंसेवी संस्थाओं को इन त्रुटिपूर्ण एवं अर्थहीन प्रयत्नों की बजाय ठोस प्रयास में लाने चाहिए । अतः एड्स की रोकथाम के लिए आवश्यक है कि समाज में व्याप्त अश्लीलता को जड़ से समाप्त किया जाए । एक ऐसे वातावरण की स्थापना की जाए जहां मनुष्य अपनी यौन भावनाओं को आसानी से नियंत्रित कर सके । जब तक समाज में अश्लील तथा वासनात्मक तत्वों का प्रदर्शन होता रहेगा, एड्स जैसे रोग पनपते रहेंगे ।

लघुकथा

पगडंडी

राजमार्ग के प्रश्नों को सुनकर ठकुरसुहाती पगडंडी 'रिएक्शन' में तिलमिला उठी । बरबस बोल पड़ी, 'आज तुझे किसी ने पट्टी पढ़ायी है, तभी तुझे यथार्थ-बोध हुआ है । अन्यथा मैं तो वर्षों से स्वयं को राजमार्ग बताकर लोगों को मूर्ख-धूर्त बनाती रहती थी !' उसकी सहेली ने भी लगे हाथ 'हां' में 'हां' मिला दी । इस पर पगडंडी में थोड़ा 'ओज-संचार' हुआ । उसने आगे कहने का दुस्साहस किया, 'मैं फिर कहती हूं कि मैं लोगों को मूर्ख-धूर्त बनाती रहूंगी । जो तू चाहे कर ले । मैं अपना प्रिय काम नहीं छोड़ने वाली ।'

राजमार्ग तो राजमार्ग ही था । वह ठकुरसुहातियों के कुत्सित उद्देश्य से पूर्व परिचित था । उसे मालूम है कि पगडंडी दुष्कर्मों में लिप्त रहकर स्वयं एवं सर्वजन को धोखा दे रही है । उसका अनुमान सत्य में परिणति होकर प्रत्यक्ष था । पगडंडी का उत्तर आ चुका था, जो इसे सिद्ध ही नहीं प्रमाणित भी कर रहा था । पगडंडी पर बेताल की चाल बरक़रार थी, जिसके उल्लेख का वह लोभ-संवरण नहीं कर पा रहा था । उसकी सहेली भी उसे इसके लिए उकसा रही थी कि 'आत्मिक संतोष' का बहाना तलाश कर ले, तो चौर कर्म का औचित्य भी प्राप्त हो जाएगा और इस प्रकार तू पूरे मानव समुदाय को मूर्ख बनाने में सफल हो जाएगी ।

पगडंडी को बेताली चस्का जो लगा था, वह उसे परमात्मा से दूर कब का ले जा चुका था । उसका लोक ही परलोक बन चुका था । पगडंडी अपनी सहेली को समझाते हुए कहने लगी कि 'मेरा चौर कर्म ही सुकर्म है, लेकिन मैं इसका प्रमाण नहीं प्रस्तुत करूंगी, क्योंकि मेरे लिए जो कुछ मैं करती हूं, उसे सुहाना बना दिया गया है । मेरा मन संतुष्ट है । अब और क्या चाहिए ?' अब सहेली ने चैतन्य-भाव से कहा, 'तू जो चाहती है, बकती है । क्या तुझे नहीं मालूम की परमात्मा तेरे कर्मों का फल देगा । तेरे स्वयं संतुष्ट होने से क्या होता है ? परमात्मा की रज़ामंदी ही सब कुछ है ।' पगडंडी अपने स्वभाव से बड़ी ढीठ और दुस्साहसी थी, फट पड़ी, 'तेरी बात मुझे समझ में नहीं आती ।' स्पष्ट है, उसकी आंखों पर परदा पड़ चुका था । उसे इसका भान तक न रहा कि वह जो-जो स्वांग रचा चुकी है और रच रही है, उसके दुष्परिणाम उसे भुगतने पड़ेंगे । सच है, पगडंडी और राजमार्ग समान नहीं हो सकते । अच्छाई तो हर हाल में अच्छाई है और बुराई हर हाल में बुराई ।

● डॉ॰ मु॰अ॰

● शौकत अली 09312627337
● अकबर 09213378896

न्यू ऑप्टिकल्स प्वाइंट

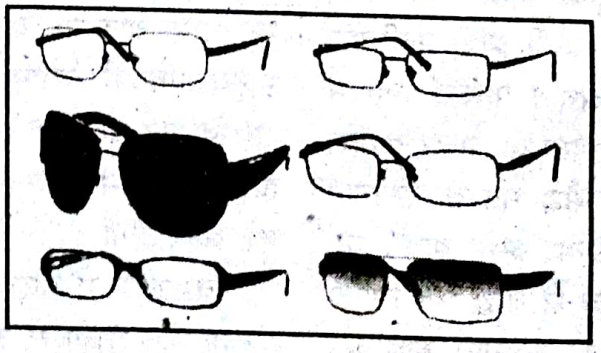

प्रोग्रेसिव, फोटोक्रोमेटिक, बाइफोकल, एंटी रिफलेक्शन कोटिंग और विभिन्न प्रकार के कांटेक्ट लेंस उपलब्ध हैं ।

पता : 127/16, ज़ाकिर नगर, जामिया नगर, ओखला, नयी दिल्ली-25

सब्र की शक्ति

मौलाना मौदूदी का नाम तो तुमने सुना होगा ? वे हमारे ज़माने के बड़े ज़बरदस्त आलिम थे । खुदा ने उनको बड़ी सूझबूझ दी थी । उनके दिल में दीन का बेहद दर्द था । उनको हर वक़्त यही धुन रहती थी कि अल्लाह की ज़मीन पर अल्लाह के दीन को किस तरह ग़ालिब किया जाए, अल्लाह के बन्दों को कैसे अल्लाह की मर्ज़ी पर चलाया जाए । चूंकि उनका पैग़ाम भी वही है, जो सदा से हर देश में अल्लाह के नबियों और उनके पीछे चलने वालों का रहा है और जिसको आख़िरी तथा मुकम्मल शक्ल में हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने पेश किया । इसलिए जो भी सुनता है उसको उसे हक़ मानना ही पड़ता है । इसलिए धीरे-धीरे दुनिया में बहुत से मुल्कों में बहुत से लोग उनकी हिमायत करने वाले बन गये । उन्होंने एक अच्छी-ख़ासी जमाअत बना ली, जो अल्लाह के दीन को अल्लाह की ज़मीन पर क़ायम करने की कोशिश करती है ।

मौलाना की बातें उन लोगों को एक आंख नहीं भातीं, जो अल्लाह के बन्दों को अपनी मर्ज़ी पर चलाना चाहते हैं या अल्लाह की बख़्शी हुई सलतनत को अल्लाह की अमानत समझने के बजाय अपनी और अपने बाप-दादा की जागीर समझते हैं, इसलिए ऐसे लोग सदा रोड़े अटकाने में लगे रहे । झूठे इल्ज़ाम गढ़-गढ़कर मौलाना को सताते और परेशान करते रहे पर उन्हें अल्लाह ने इतना सब्र, उमंग और हौसला दिया कि जितनी ज़्यादा मुख़ालफ़त होती, उतना ही उनका ईमान पक्का होता है । एक बार तो ज़ालिमों ने झूठे मुक़दमों में फंसाकर मौलाना को फांसी की सज़ा तक सुना दी थी । सज़ा का एलान होते ही रेडियो से यह ख़बर दुनिया के कोने-कोने में फैल गयी ।

मौलाना तो जेल की कोठरी में इस ख़्याल से बड़े सकून से सोये कि चलो अल्लाह ने उनकी कोशिशों को क़बूल करके उन्हें शहादत की मौत दे दी । जिस-जिस भले इन्सान ने भी फांसी की ख़बर सुनी, वह सिर पकड़ कर रह गया । हर आदमी यही सोचता था कि इन बेचारों का आख़िर जुर्म क्या है ? क्या खुदा के बन्दों को अल्लाह के दीन की ओर बुलाना अब मुसलमान मुल्कों में इतना बड़ा जुर्म हो गया है कि उसकी सज़ा फांसी है । ये बेचारे किसी से कुछ मांगते नहीं, सब की भलाई के लिए दिन-रात मेहनत करते हैं । क्या दुनिया अब इतनी गिर चुकी है कि भले लोगों को अपने अन्दर सहन नहीं कर सकती ।

मौलाना की फांसी का हुक्म उनकी बीवी ने भी सुना । तुम खुद सोचो उन बेचारी पर क्या बीती होगी । मगर वाह री नेक बंदी ! थोड़ी देर तो बेचैन रहीं, फिर यह सोचकर उन्हें सुकून हो गया कि अगर अल्लाह के दीन के क़ायम करने के लिए मौलाना के लहू की ज़रूरत है तो हम अल्लाह के इस फ़ैसले पर खुश हैं । और अगर अल्लाह उन्हें ज़िन्दा रखना चाहता है तो कोई उनका कुछ नहीं बिंगाड़ सकता । अल्लाह ने उनके सब्र और जमाव का यह बदला दिया कि दूसरे ही दिन रेडियो से उनकी सज़ा ख़त्म होने का एलान हुआ और वह जेल से छूट कर फिर अपने बाल-बच्चों में आ गये । और पहले ही की तरह पूरे हौसले और उमंग के साथ दीन को क़ायम करने के लिए कोशिश करने लगे ।

● अफ़ज़ल हुसैन

कंप्यूटर की भाषा में

10 बाइट	=	एक शब्द
2 किलो बाइट	=	एक पृष्ठ (टाइप राइटर का लिखा हुआ।)
10 किलो बाइट	=	संदर्भ पुस्तक का एक पृष्ठ
1 मेगा बाइट	=	एक छोटा नॉवेल
5 मेगा बाइट	=	शेक्सपीयर की सम्पूर्ण रचना
100 मेगा बाइट	=	रैक पर एक मीटर तक सजी हुई किताबें ।
250 मेगा बाइट	=	ज़मीन पर मौजूद प्रत्येक व्यक्ति का एक वर्ष डाटा आउटपुट ।
500 मेगा बाइट	=	1 सीडी रोम



भूकंप की चुनौतियां

पूरे विश्व में प्रतिवर्ष आने वाले भूकम्पों की औसत संख्या का सीधा संबंध विश्व के प्रदूषित होते वातावरण से तो है ही, पहाड़ी इलाक़ों पर बड़े-बड़े बांधों तथा कंक्रीट की इमारतों के निर्माण और वहां की बढ़ती जनसंख्या को भी इसके लिए पूरी तरह ज़िम्मेदार ठहराया जा रहा है । यह ख़तरा अब दिन पर दिन और भी बढ़ता जा रहा है । अनुभवों और जानकारियों के आधार पर वैज्ञानिकों ने चेतावनी दी है कि अगला भूकंपीय तनाव अप्रत्याशित रूप से विध्वंसकारी साबित हो सकता है ।

अमेरिका के कोलोरैडो विश्व-विद्यालय के भूकम्प विशेषज्ञ रोजर बिलहैम को भूकंपीय इतिहास का अध्येता माना जाता है । उन्होंने चेतावनी दी है कि बड़ी परियोजनाएं, विशेषकर हिमालयी क्षेत्र के बड़े बांध, भूकंप से ढह सकते हैं । हिमालय में जारी बड़ी परियोजनाओं जैसे टिहरी बांध के कारण रिक्टर माप पर 8.5 तीव्रता वाले भूकंप का प्रभाव दुगुना हो सकता है । उन्होंने बताया है कि भारत के भूकंप प्रभावित क्षेत्रों में ग़लत और ख़तरनाक निर्माण हो रहे हैं । उत्तर भारत तथा हिमालयी क्षेत्रों में आबादी के अधिक बढ़ जाने के कारण भी भूकंप का विनाशकारी प्रभाव अत्यंत तीव्र हो सकता है ।

बढ़ते भूकम्प के झटकों तथा जानमाल के नुक़सान पर वैज्ञानिक परेशान हैं । भूवैज्ञानिक भारत के भूकम्प प्रभावित क्षेत्रों में ऊंचे वोल्ट की बिजली और गैस की लाइनों जैसी नई समस्याओं के बारे में भी चिंतित हैं । भूकंप से बिजली और गैस लाइनों में भारी आग लग सकती है, जिससे सारे शहर पर ख़तरा आ सकता है । सड़क, रेल की पटरी और हवाई अड्डे के क्षतिग्रस्त होने के कारण राहत की शुरुआत में देर हो सकती है और भूकंप के बाद शुरू होने वाली बीमारियों, गर्मी, ठंड या फिर भूख की मार से और भी कहीं ज़्यादा जानें जा सकती हैं ।

उधर बिलहैम का मानना है कि भारत में भूकंप से निबटने की तैयारियां बिल्कुल ही अपर्याप्त हैं । अधिकाधिक क्षेत्रों में भूकंप की अनिवार्यता स्वीकार करने के बारे में काफ़ी हिचकिचाहट एवं लापरवाही है । बढ़ते भूकम्प के प्रभाव को क़म करने के लिए बिलहैम ने भारत के विभिन्न क्षेत्रों, विशेषकर हिमालयी क्षेत्रों में सीस्मोमीटरों का जाल तत्काल बिछाये जाने का सुझाव दिया है । सीस्मोमीटर भूकंप की चेतावनी देता है । इससे भूकंप आने के कम से कम 30 सेकेंड पहले तक चेतावनी मिल सकती है ।

इस अप्रत्याशित विपत्ति से बचने के लिए पर्याप्त धन और साधन बटोर कर कुछ विशेष उपाय करना ही आज की पहली मांग है । इसके साथ ही ज़रूरत है भूकंप विशेषज्ञों द्वारा भूकंप के बारे में अधिक अध्ययन करने और इससे संबंधित कार्यगति को तीव्र करने की । किन्तु इससे भी पहले हमें भूकंप की चेतावनियों को गंभीरता से लेकर उससे कारगर तरीक़े से निबटने की मानसिकता विकसित करनी होगी । भूकंप आने की स्थिति में देशव्यापी स्तर पर उससे बचाव की तैयारियों का प्रशिक्षण देने के उपाय करने होंगे तभी हम इस प्राकृतिक प्रकोप से निरीह जानों को बचा पाएंगे, अन्यथा हर भूकंप के झटके के सामने अपने को बेबस कांपता ही पाएंगे ।

मुद्रक एवं प्रकाशक ख़लील अहमद द्वारा दावत ट्रस्ट (रजि॰), D-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव, जामिया नगर, नयी दिल्ली-110025 से प्रकाशित एवं भारत ऑफ़सेट, गली क़ासिम जान, बल्लीमारान, दिल्ली-6 से मुद्रित ।
फोन: 26949430
संपादक : डॉ॰ मुहम्मद अहमद

'कान्ति' के उपलब्ध विशेषांक



अवतारवाद और रिसालत

किताबी शक्ल में, पृष्ठ 152 और क़ीमत 50 रुपये

हमारे देश में 'अवतार' शब्द का प्रचलित अर्थ यह है कि संसार में मानव मुक्ति व संकटों से छुटकारा दिलाने के लिए परमात्मा स्वयं किसी शक्ल में आता है। यह अर्थ तथ्य और वास्तविकता के विपरीत है। उक्त पुस्तक में इसे पर्याप्त सबूतों के साथ सिद्ध किया गया है और बताया गया है कि परमात्मा इस कार्य व प्रयोजन के लिए श्रेष्ठ और पवित्रतम इन्सानों का चयन करता है, जिन्हें रसूल और पैग़म्बर कहते हैं। अवतार का सही अर्थ यही है।



मुहम्मद (सल्ल०) रहनुमा इन्सानियत के

मैगज़ीन साइज में, पृष्ठ 112 और क़ीमत 20 रुपये

परमात्मा के इन्सानों पर अनगिनत उपकार हैं, जिनमें सबसे बड़ा उपकार यह है कि वह उनके उद्धार और मुक्ति के लिए अपने पैग़म्बरों और रसूलों को भेजता रहा है। संसार के प्रत्येक समुदाय और भूभाग में ये भेजे गये और यह सिलसिला हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) पर समाप्त कर दिया गया। अत: इन्सानों के लिए सही मार्गदर्शन और उनकी मुक्ति आप (सल्ल०) के जीवन और संदेशों पर चलकर ही प्राप्त की जा सकती है। उक्त विशेषांक में जहां मुस्लिम स्कालर्स की रचनाएं हैं, वहीं दूसरी तरफ़ अन्य स्कॉलर्स—डॉ० ज्ञानचन्द्र, विद्या प्रकाश और पेरियार जी के लेख भी शामिल किये गये हैं।



देश में दहशतगर्दी

मैगजीन साइज, पृष्ठ 112 और क़ीमत 25 रुपये

'कान्ति' (साप्ताहिक) के इस विशेषांक में आतंकवाद और दहशतगर्दी की वजहों और कारणों तक पहुंचाने की कोशिश की गयी है और इस बड़ी समस्या से छुटकारा पाने की राह भी प्रस्तावित की गयी है।

दावती कामों के लिए ये विशेषांक निहायत मुफ़ीद हैं।
मुनासिब रियायत के साथ ये निम्नलिखित पतों पर उपलब्ध हैं—

कान्ति
डी-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव,
जामिया नगर, नयी दिल्ली-110025
ई-मेल : kantiweekly@yahoo.in

मधुर सन्देश संगम
E-20, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव,
जामिया नगर, नयी दिल्ली-110025
ई-मेल : madhursandeshsangam@yahoo.com

एम० एम० आई० पब्लिशर्स
D-307, दावत नगर,
अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव,
जामिया नगर, नयी दिल्ली-110025

Posted on 20-21 November 2008
December 2008
E-mail: kantidelhi@rediffmail.com
Publishing Date: 18.11.2008

कान्ति

RNI 53372/91
DL(S)-01/3147/2006-2008
LICENSED TO POST WITHOUT PREPAYMENT
License No. U (SE)-73/2006-08



फ़ोन : 09424706569

अंसार बुक हाउस

हमारे यहां
क़ुरआन मजीद, सिपारे, पाठ्य-पुस्तकें,
निगम व दीगर स्कूलों की किताबें कॉपियां व
स्टेशनरी के लिए तशरीफ़ लाएं।

नगीना मस्जिद, गोहलपुर, जबलपुर, मध्य प्रदेश

09425164608, 09752189505

UNIQUE COLLECTION

Exclusive Branded Shop

For : Mens, Girls & Kids

Central Bank Road, Durga Chowk, Seoni (M.P.) 480661